# चतुर कछुआ

एक लोमड़ी बहुत भूखी थी.

खाने की तलाश में वो पूरे
जंगल में भटकती रही.
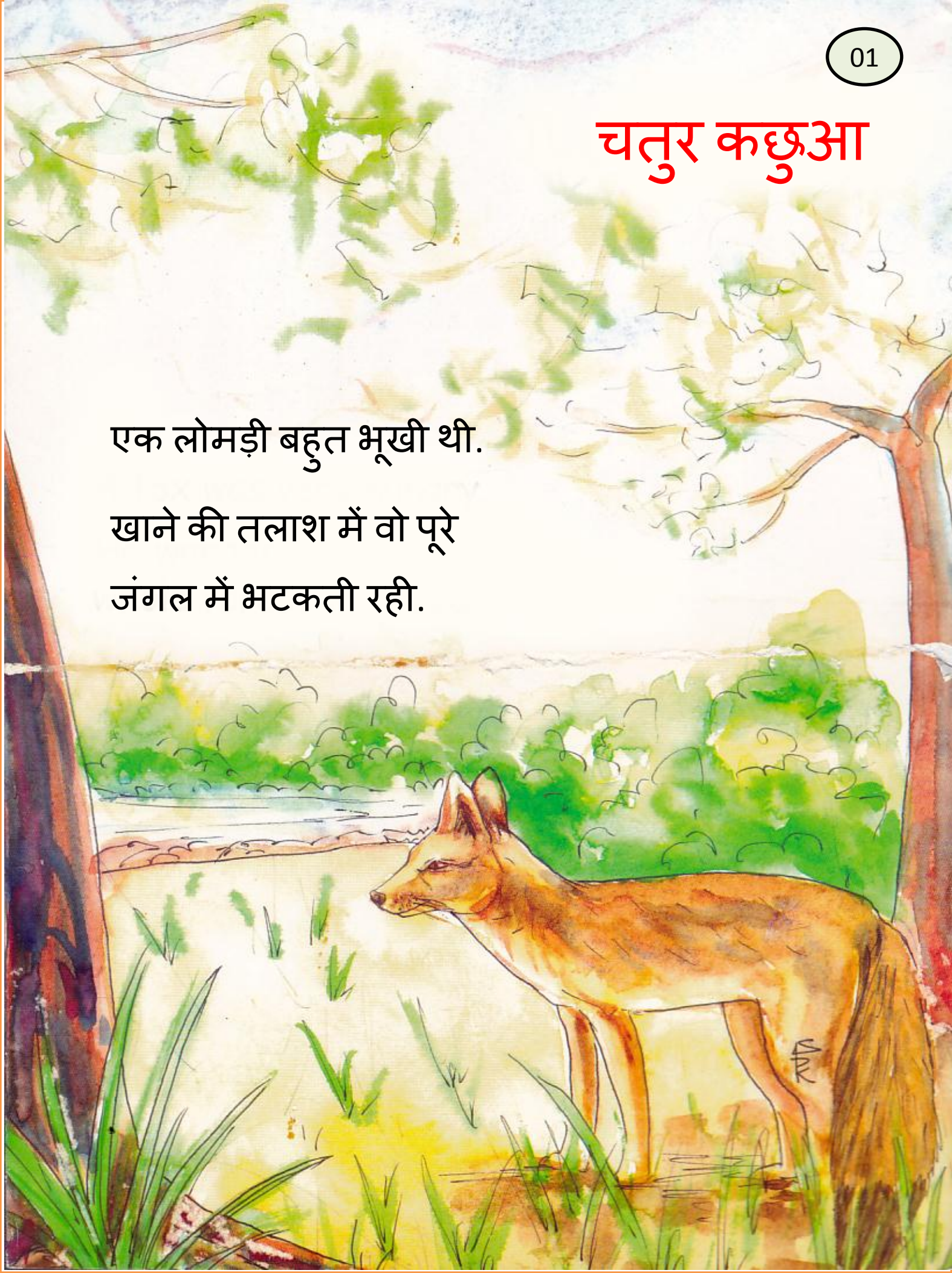
फिर उसे नदी के किनारे एक कछुआ
दिखाई दिया. उसने कछुए को पकड़
लिया. पर बहुत सख्त होने के कारण,
लोमड़ी, कछुए को खा नहीं पाई.
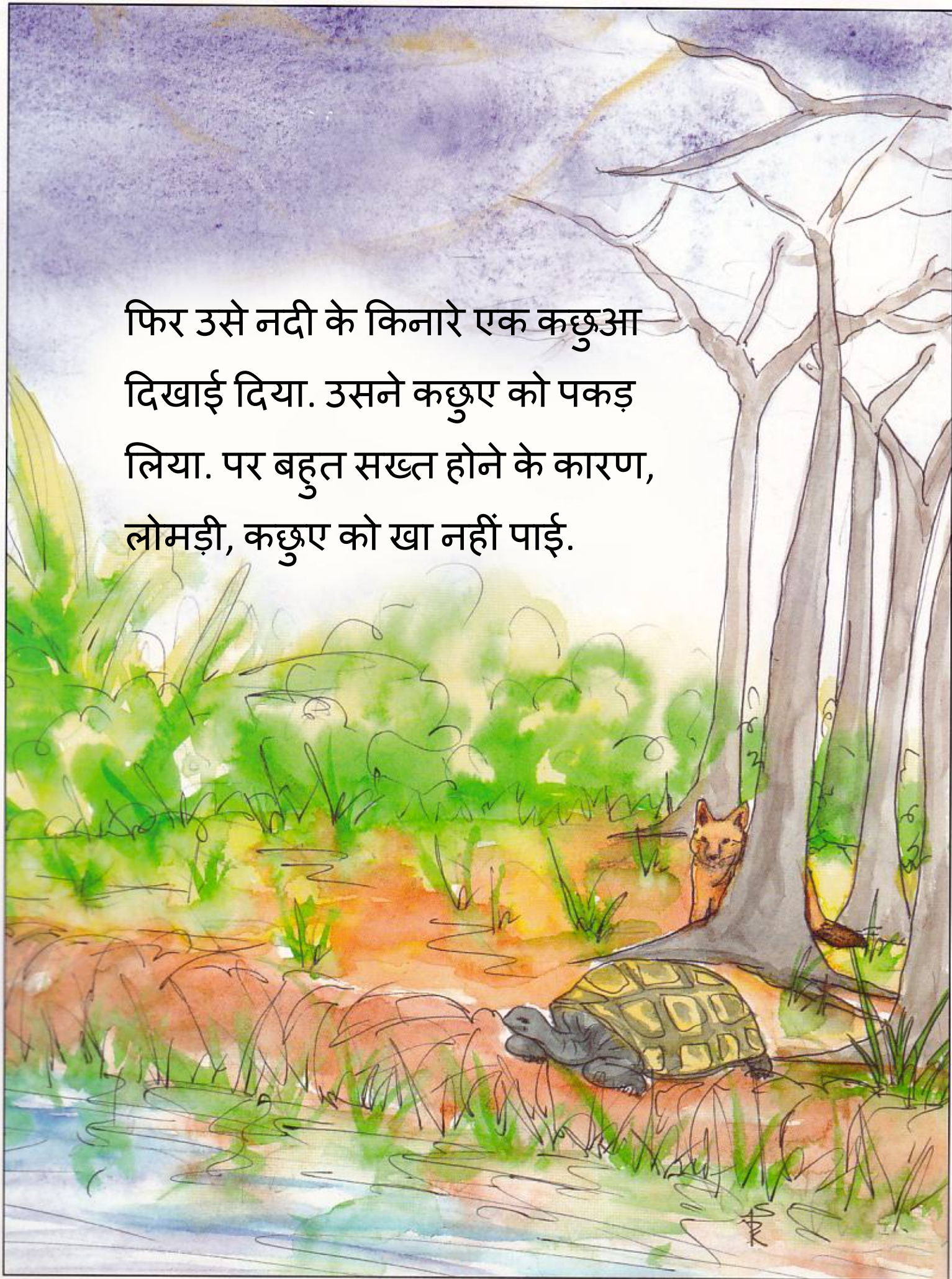
"लोमड़ी," तुम मुझे कुछ देर के लिए पानी में भिगो कर रखो. तब मेरा खोल नर्म हो जाएगा, और फिर तुम मुझे खा लेना," कछुए ने कहा.

लोमड़ी ने कछुए की बात पर यकीन किया और कहा, "ठीक है!" फिर लोमड़ी ने कछुए को धीरे से नदी के पानी में डाला.

कछुआ, जल्दी से तैरकर लोमड़ी से दूर एक सुरक्षित स्थान पर चला गया.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

A Bagful of Stories
*Published by*
Manchi Pustakam

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions
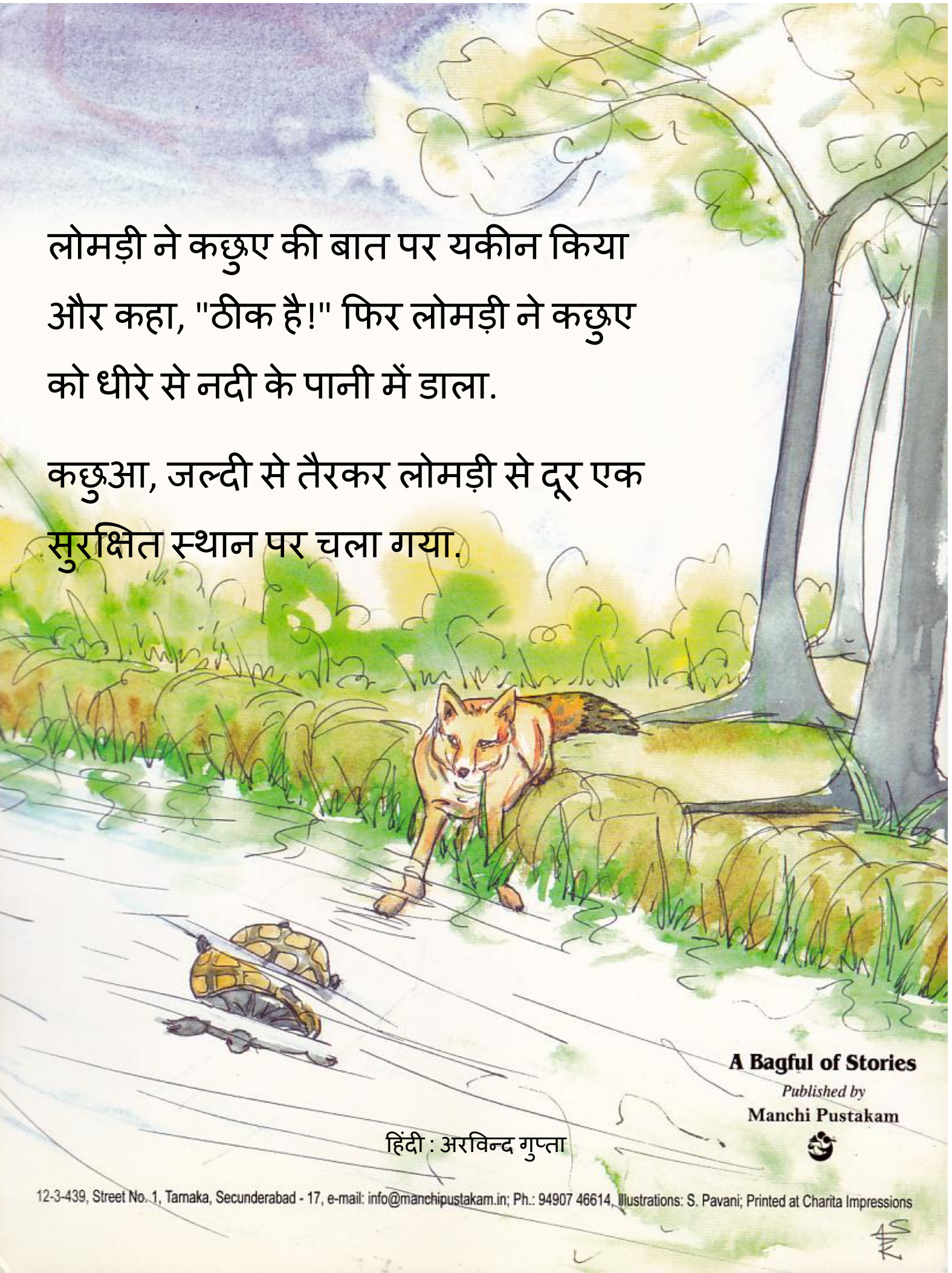
# कुत्ता और हड्डी

एक कुत्ता मांस के टुकड़े को मुंह में
दबाए नदी का पुल पार कर रहा था.
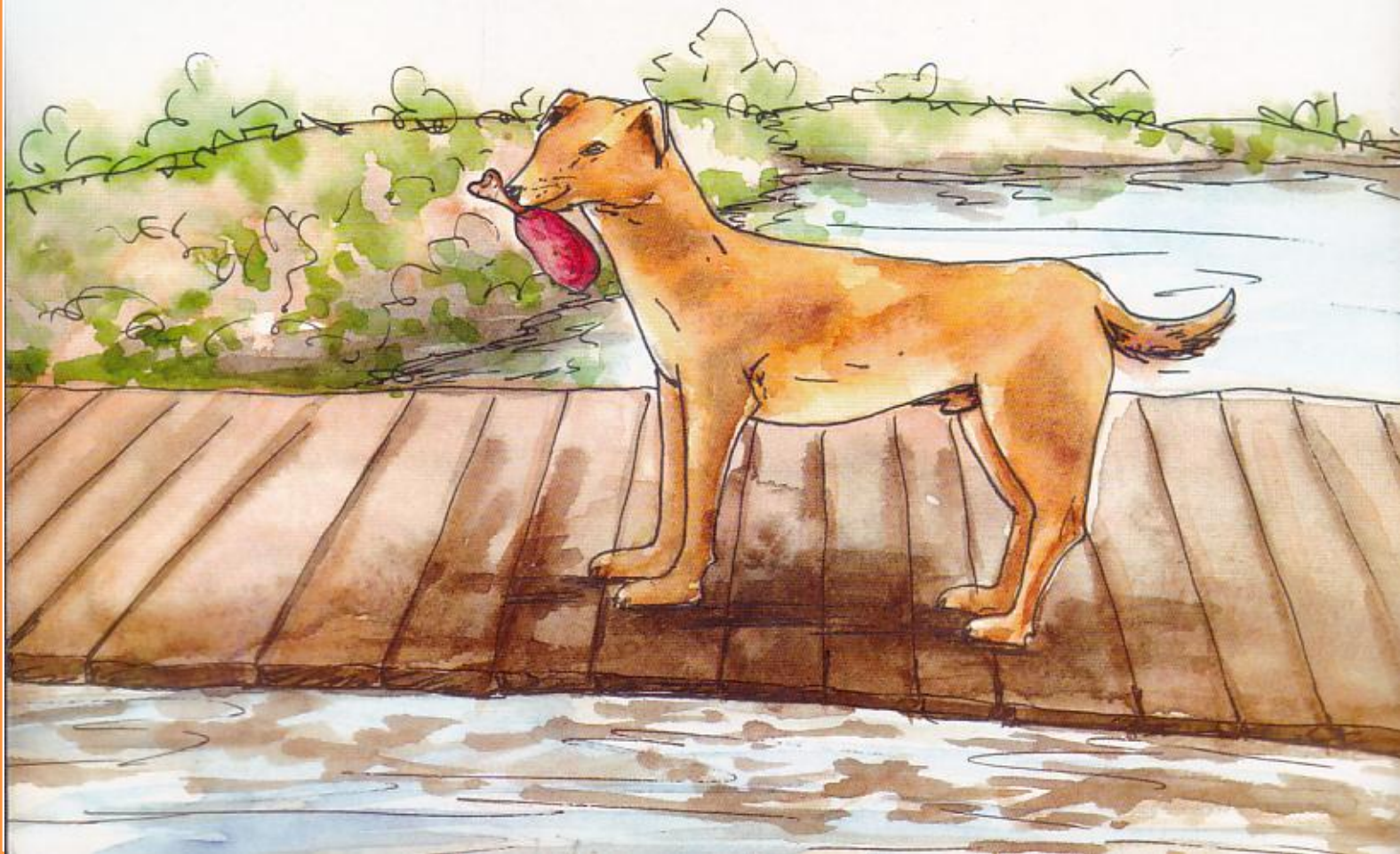
अचानक उसे पानी में अपनी परछाई दिखाई दी.

उसे लगा जैसे वहां कोई दूसरा कुत्ता हो.

वो अपनी परछाई की और भूंका.

जैसे ही उसका मुंह खुला वैसे ही मांस का टुकड़ा पानी में गिर गया.
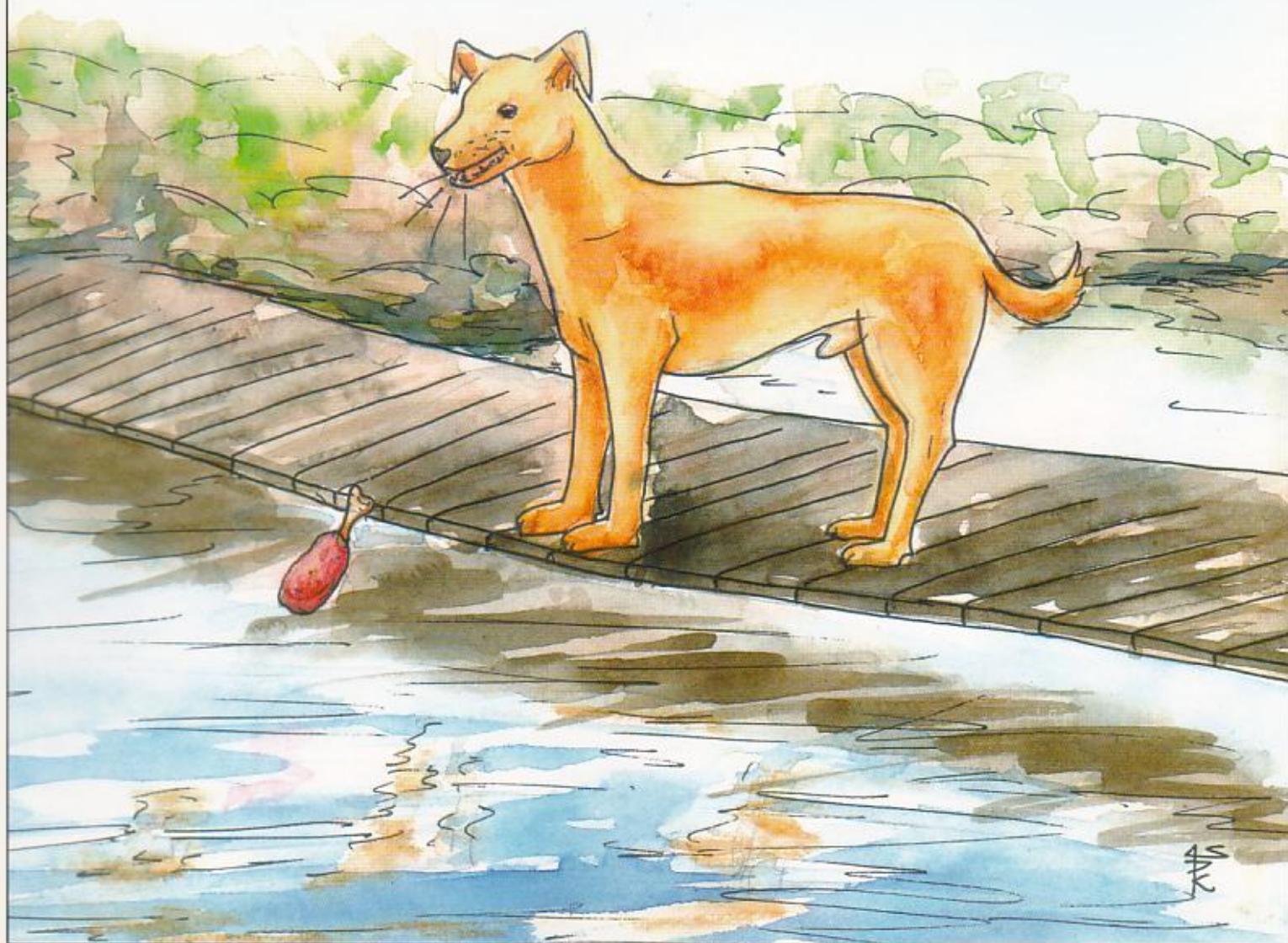
# दो मेंढक

उस साल बहुत तेज़ गर्मी पड़ी.
सारे ताल-तलइये सूख गए थे.

तब दो मेंढक अपने रहने के लिए कोई नई जगह खोजने निकले.

उन्हें एक कुआँ दिखा.

"चलो उसमें कूदते हैं. कुएं में बहुत पानी है. हम वहां मज़े में रह सकेंगे," एक मेंढक ने कहा.

"नहीं!" दूसरे ने कहा. "वहां अभी तो पानी है. पर अगर वो सूख गया, तो फिर हम कभी बाहर नहीं निकल पाएंगे."

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

A Bagful of Stories
Published by
Manchi Pustakam
12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614; Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# लोमड़ी और अंगूर
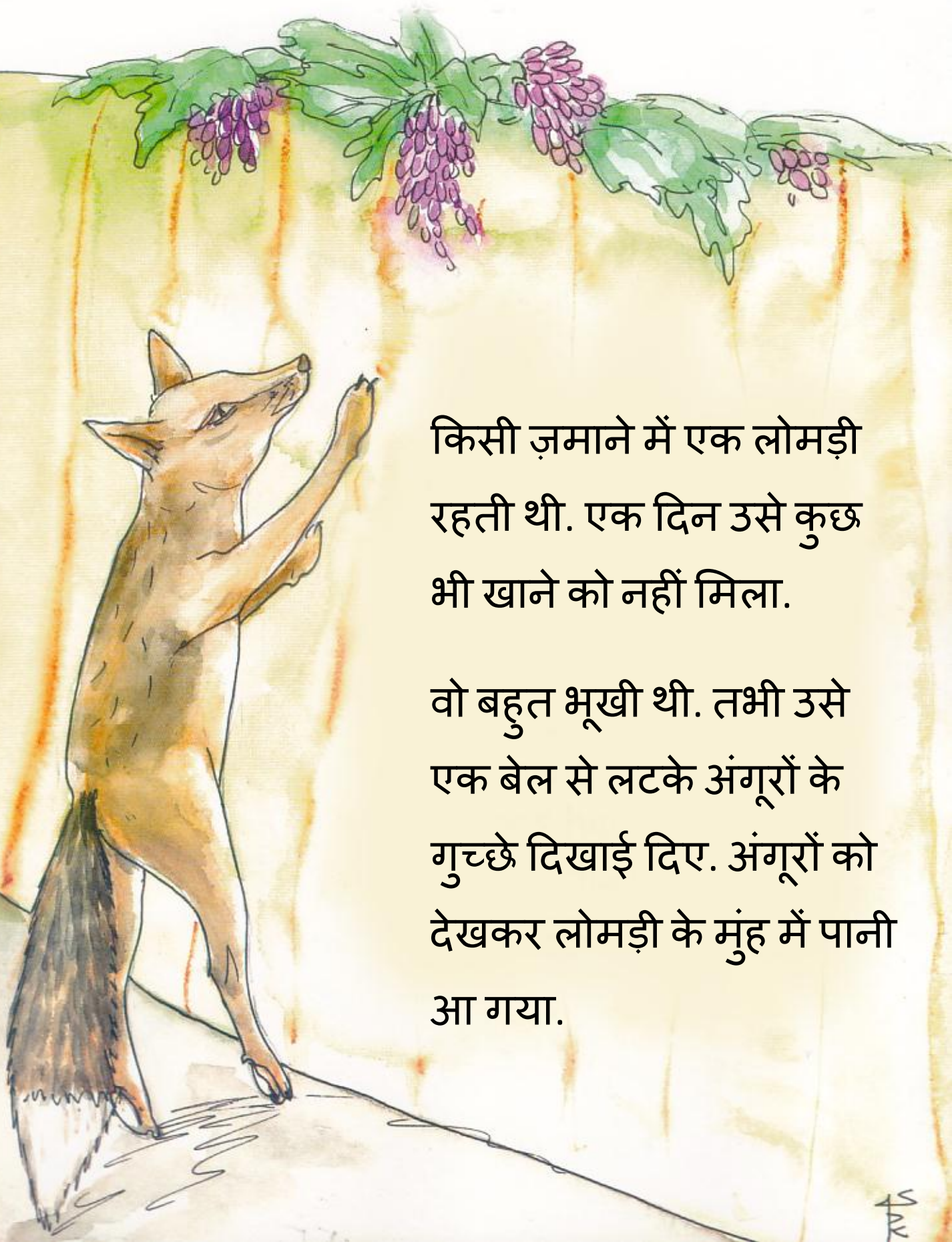


किसी ज़माने में एक लोमड़ी रहती थी. एक दिन उसे कुछ भी खाने को नहीं मिला.

वो बहुत भूखी थी. तभी उसे एक बेल से लटके अंगूरों के गुच्छे दिखाई दिए. अंगूरों को देखकर लोमड़ी के मुंह में पानी आ गया.

लोमड़ी बहुत कूदी, उसने बहुत कोशिश की लेकिन वो अंगूरों तक पहुँच नहीं पाई.

कुछ देर बाद लोमड़ी थक गई. "मुझे यह खट्टे अंगूर नहीं चाहिए," उसने कहा और फिर जंगल में वापिस चली गई.

# गधे ने पहनी शेर की खाल

बहुत पहले एक गधा रहता था. उसे कहीं से एक शेर की खाल मिल गई. उसने वो शेर की खाल ओढ़ ली.

अब सबको गधा, शेर जैसा दिखने लगा. लोग उससे डरने लगे. जानवर भी उससे डरने लगे. अब गधा बिना किसी डर के घूमने लगा.

एक दिन बहुत तेज़ हवा चली. उससे गधे के ऊपर पड़ी शेर की खाल उड़ गई. तब लोग गधे की असलियत को समझे.

"जिसे हम शेर समझ रहे थे, वो सिर्फ एक गधा निकला!" लोगों ने कहा. फिर लोगों ने गधे को खदेड़कर गांव से बाहर निकाला.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

A Bagful of Stories
Published by
Manchi Pustakam

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions
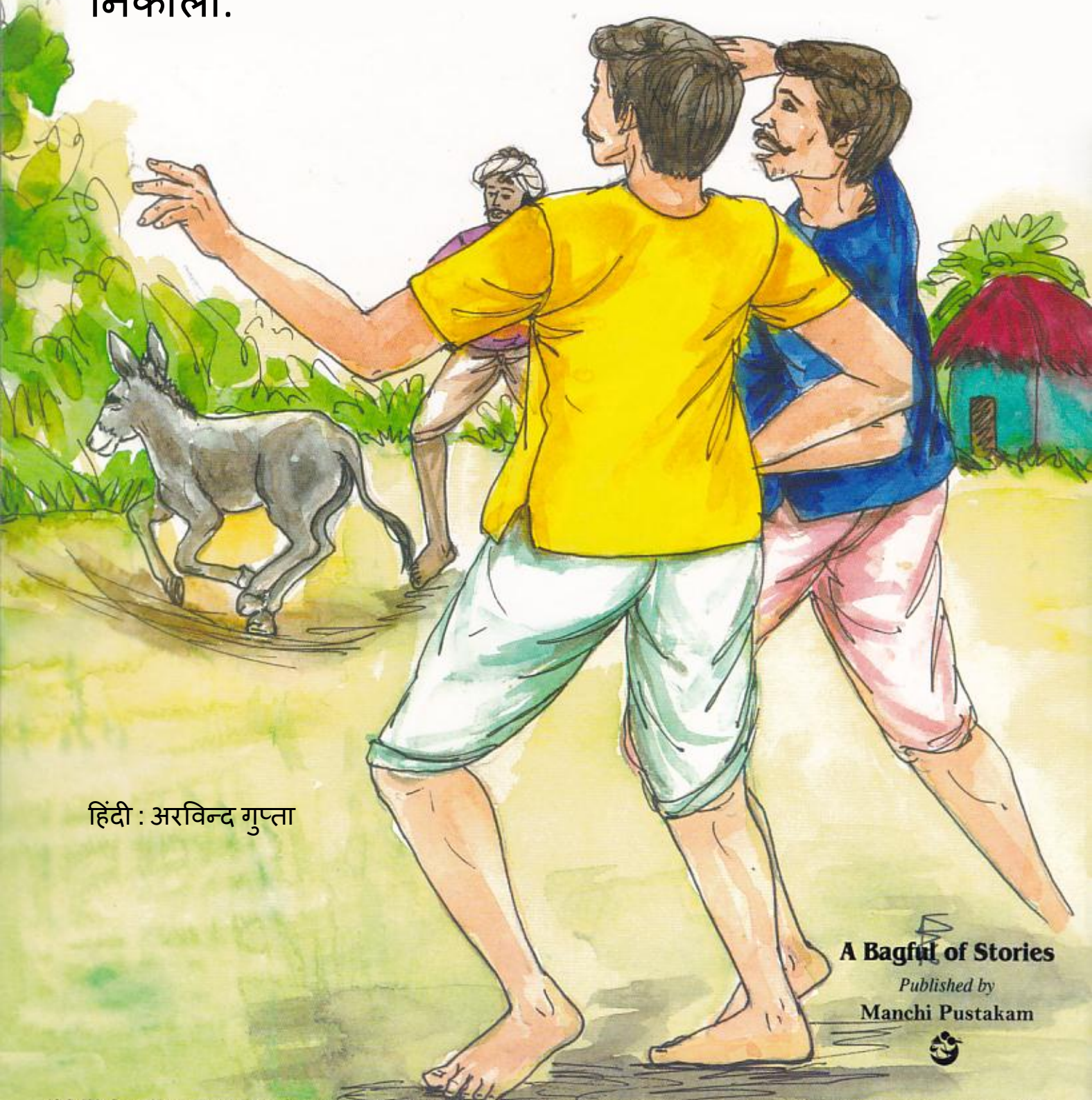
# चिड़िया और चींटी

एक चिड़िया और
एक चींटी थी.
दोनों मित्र एक ही
पेड़ पर रहते थे.
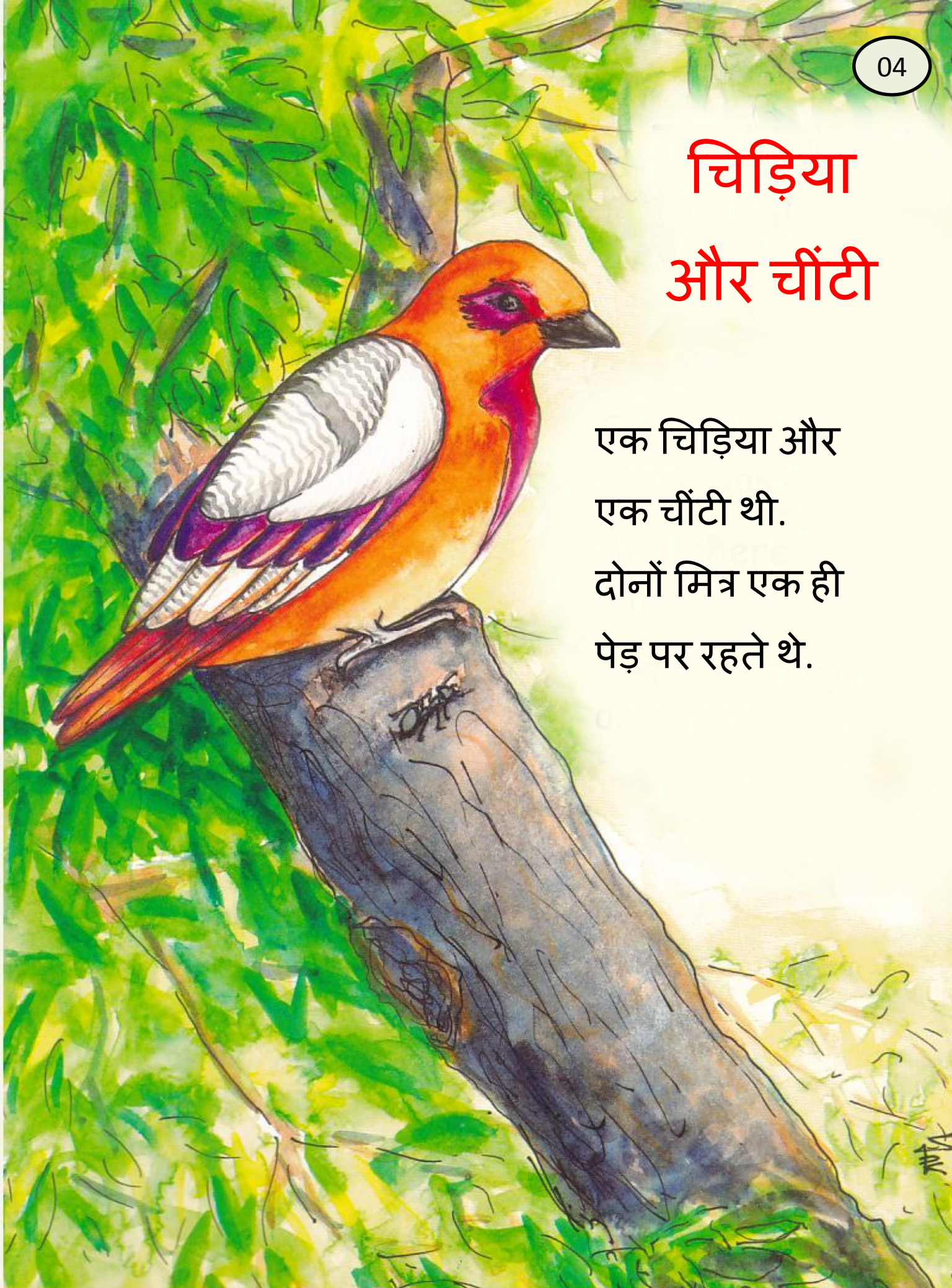
एक दिन बहुत तेज़ बारिश आई.

बारिश के बहाव से चींटी, नीचे पानी में गिर गई.
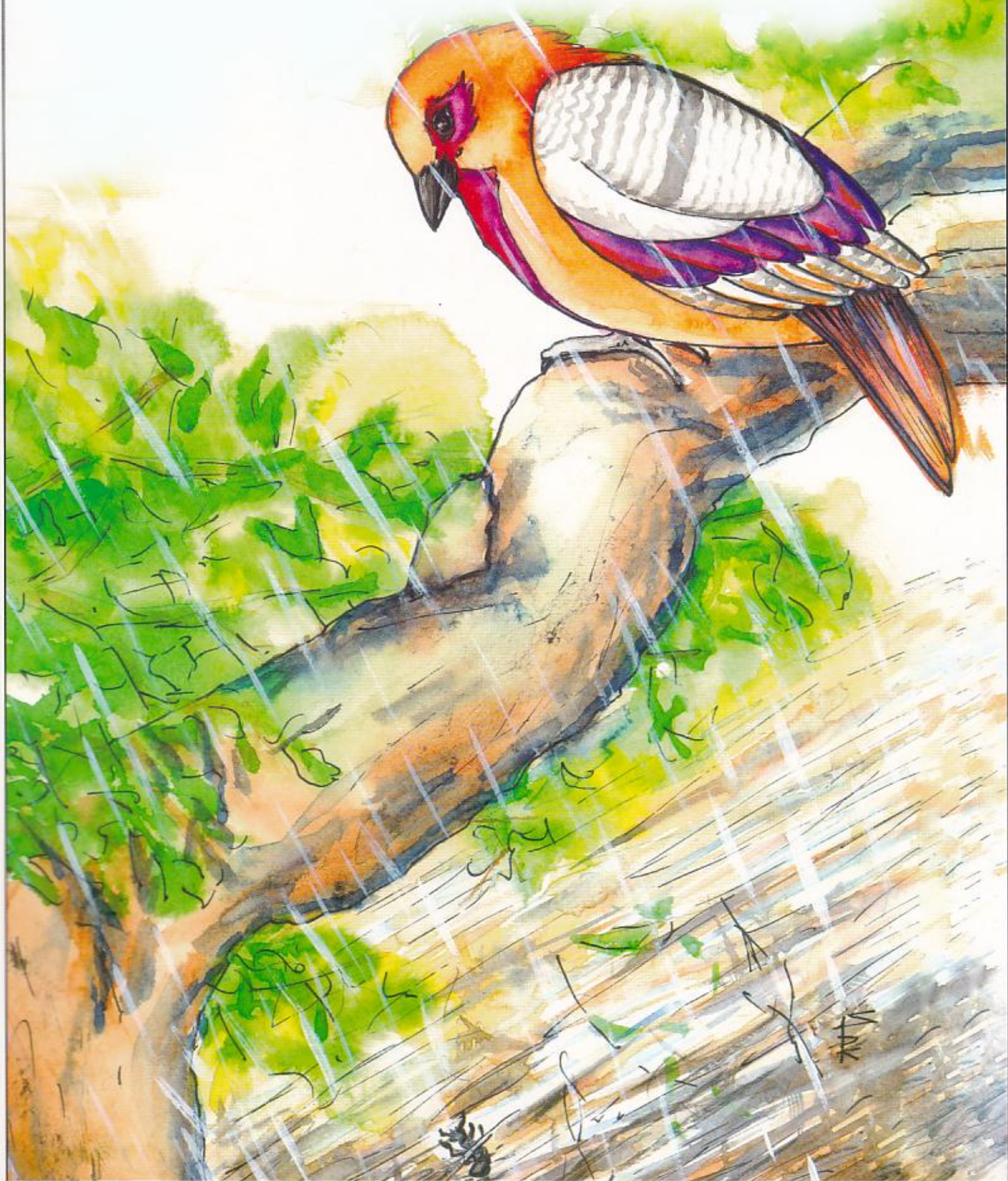
यह देखकर चिड़िया ने तुरंत कुछ पत्ते तोड़े और उन्हें नीचे पानी में फेंका.

चींटी उनमें से एक पत्ते पर चढ़ गई. उससे उसकी जान बच गई.

फिर एक दिन जंगल
में एक शिकारी आया.

उसने अपना धनुष उठाया
और चिड़िया का निशाना साधा.

चींटी ने जब यह देखा तो उसने
तुरंत शिकारी के पैर में काटा.

शिकारी दर्द से उछला
और उससे तीर का
निशाना चूक गया.

फिर चिड़िया
सुरक्षित उड़ गई.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**
*Published by*
**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# घोड़ा और घोंघा

एक घोड़ा था. वो बहुत घमंडी था. उसने एक घोंघा देखा. घोंघे को इतनी धीरे चलते देख, घोड़े ने उसे चिढ़ाया. "अरे, घोंघे! क्यों न हम दोनों मिलकर रेस लगाएं?" उसने पूछा.
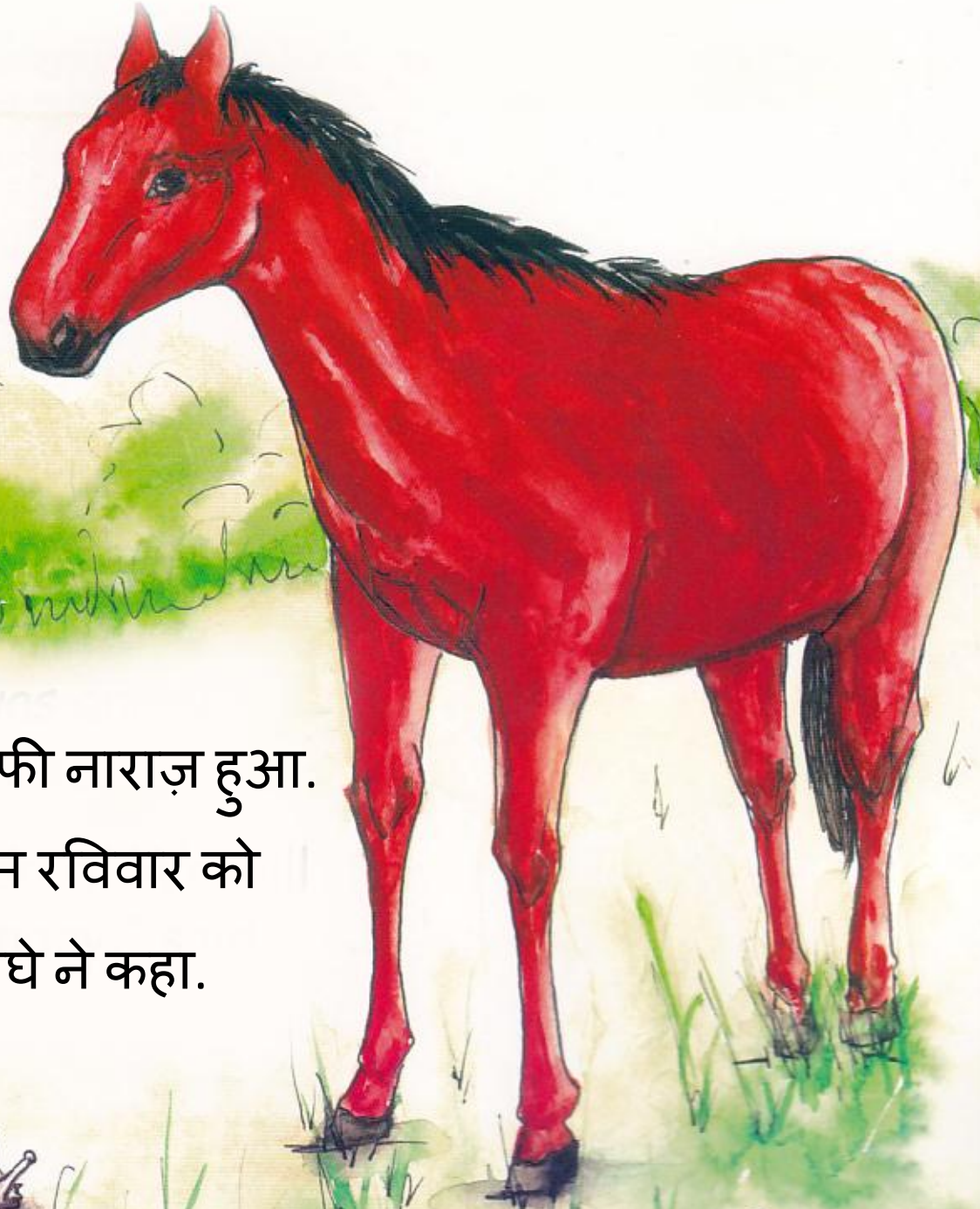
घोंघा, घोड़े से काफी नाराज़ हुआ. "चलो ठीक है! हम रविवार को रेस लगाएंगे," घोंघे ने कहा.

फिर घोंघा घर गया और उसने बाकी सभी घोंघो को बुलाया. उसने सभी को रेस के बारे में बताया. उन्होंने घोड़े को हारने की एक योजना बनाई.

जब रविवार आया तब घोंघे सुबह जल्द ही अपने घरों से निकले.

फिर घोंघे रेस की शुरुआत से अंत तक की लाइन पर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर जाकर छिप गए.

फिर रेस शुरू हुई. घोड़ा कुछ देर दौड़ा
पर फिर उसने अपने सामने एक और
घोंघे को देखा. घोड़ा और तेज़ दौड़ा.
पर घोंघा अभी भी उसके आगे था. घोड़े
ने अब बहुत तेज़ी से दौड़ना शुरू किया.

घोड़े की भरकस कोशिश के बाद भी घोंघा अभी भी उससे आगे था.

अंत में घोड़ा थककर चूर-चूर हो गया और उसने अपनी हार मानी.

"चलो मैं हारा," घोड़े ने कहा.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

A Bagful of Stories
Published by
Manchi Pustakam

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# शेर और चूहा

शिकार के बाद शेर आराम करने को लेटा.
फिर उसे गहरी नींद आ गई.

तभी एक चूहा अपने बिल में से बाहर निकला.
वो सोते हुए शेर पर दौड़ने लगा.
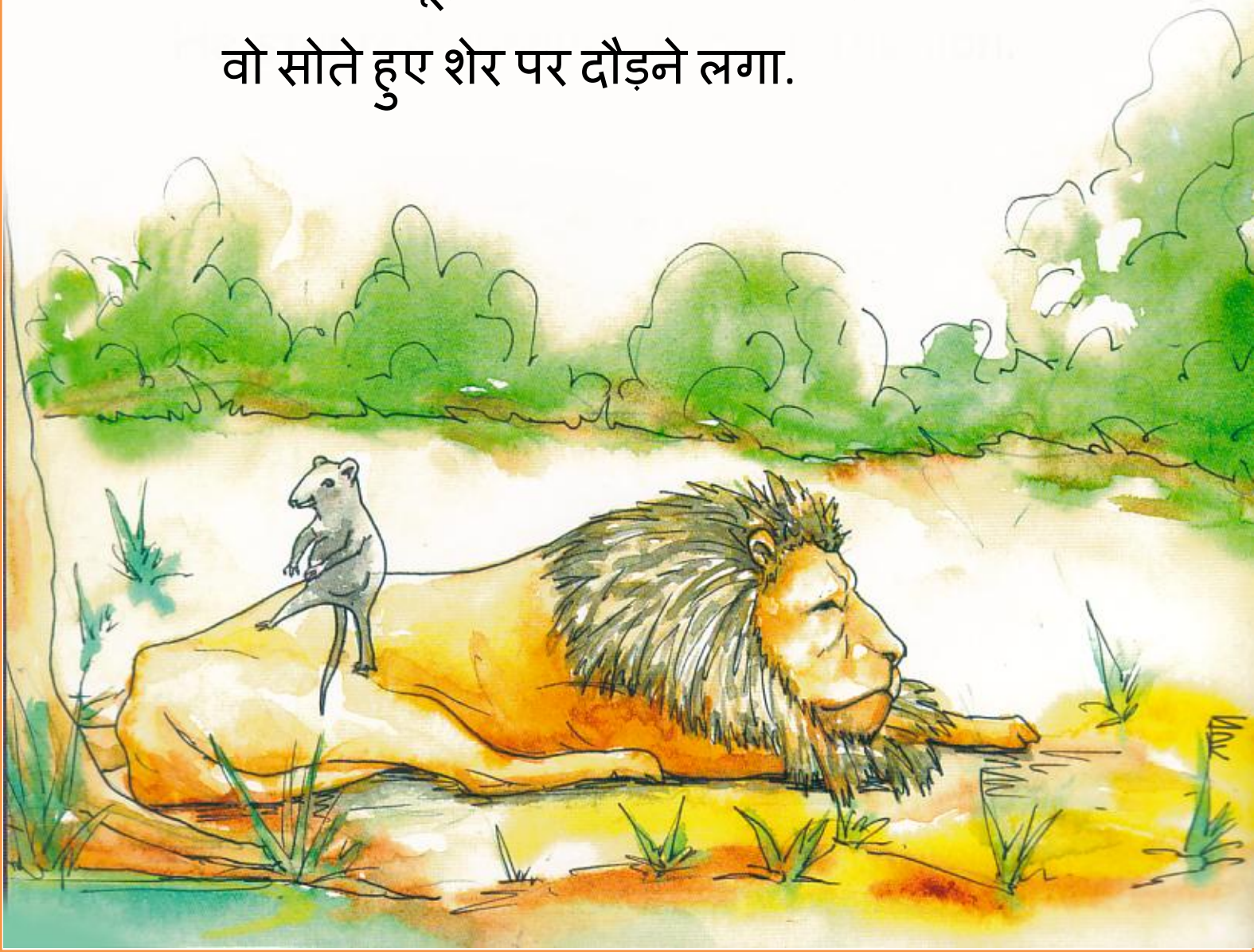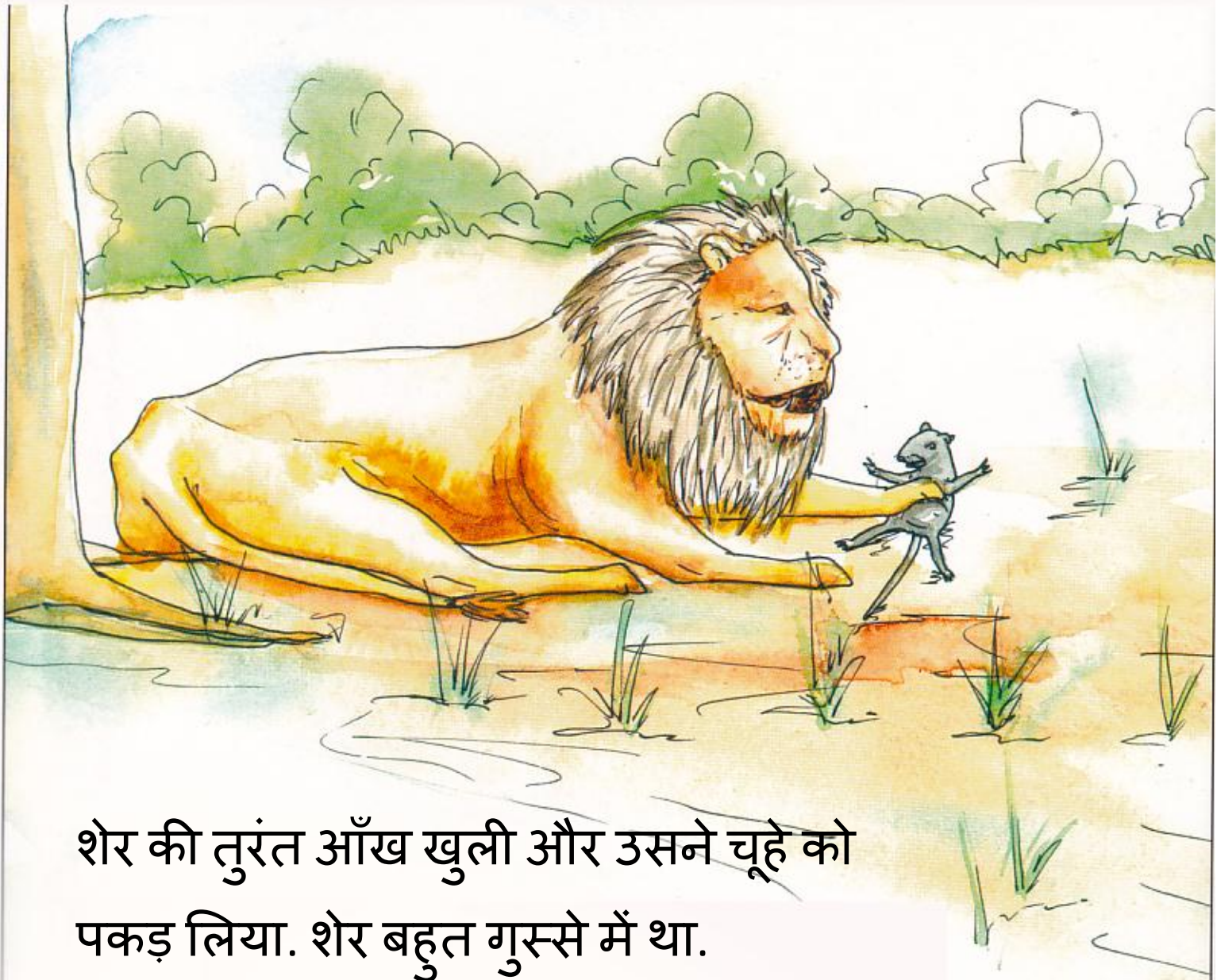
शेर की तुरंत आँख खुली और उसने चूहे को पकड़ लिया. शेर बहुत गुस्से में था.

"शेर महाराज! कृपा मुझे छोड़ दें. जब कभी आपकी जान को खतरा होगा तब मैं आपको बचाऊंगा," चूहा गिड़गिड़ाया.

"हा! हा! हा! तुम जैसे छोटे से जीव भला मेरी जान कैसे बचाओगे? चलो, मैं दया करके तुम्हें छोड़ देता हूँ. जाओ भागो!" शेर ने कहा.

चूहा दौड़ा और अपने बिल में जाकर घुस गया.

समय बीता. एक दिन एक शिकारी के जाल में  शेर फंस गया. उसने जाल में से निकलने की पूरी कोशिश की, पर असफल रहा. फिर शेर ज़ोर-ज़ोर से दहाड़ने लगा.

चूहे ने शेर की दहाड़ सुनी. वो दौड़ा-दौड़ा शेर के पास पहुंचा.

"जंगल के राजा! आपने उस दिन मेरी जान बचाई थी. आज मैं आपकी मदद करूंगा," चूहे ने कहा.

चूहे ने अपने नुकीले दांतों से जाल को काट डाला. फिर शेर जाल में से निकल भागा.

# मटका और तवा
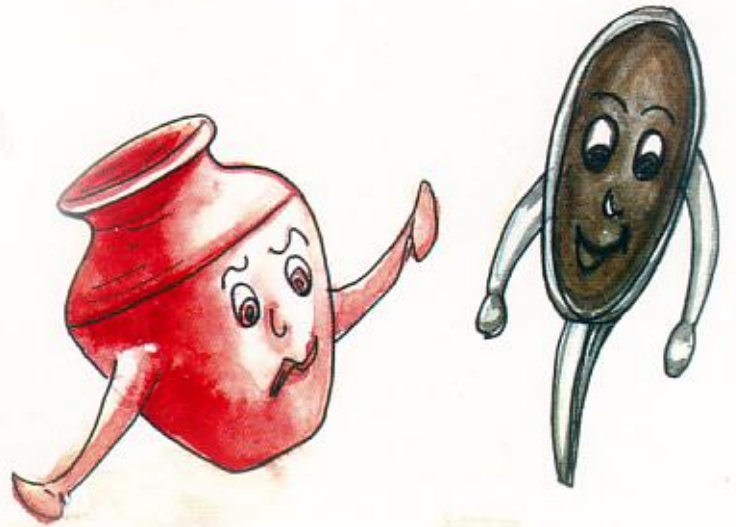
किसी ज़माने में एक मटका और एक तवा था.

"सुनो तवे! मैं तुम्हें ज़ोर से मारूंगा," मटके ने कहा.

तवे ने जवाब दिया, "चाहें तुम मुझे मारो, या फिर मैं तुम्हें मारूं, पर टूटोगे तुम ही."

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**

*Published by*

**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions
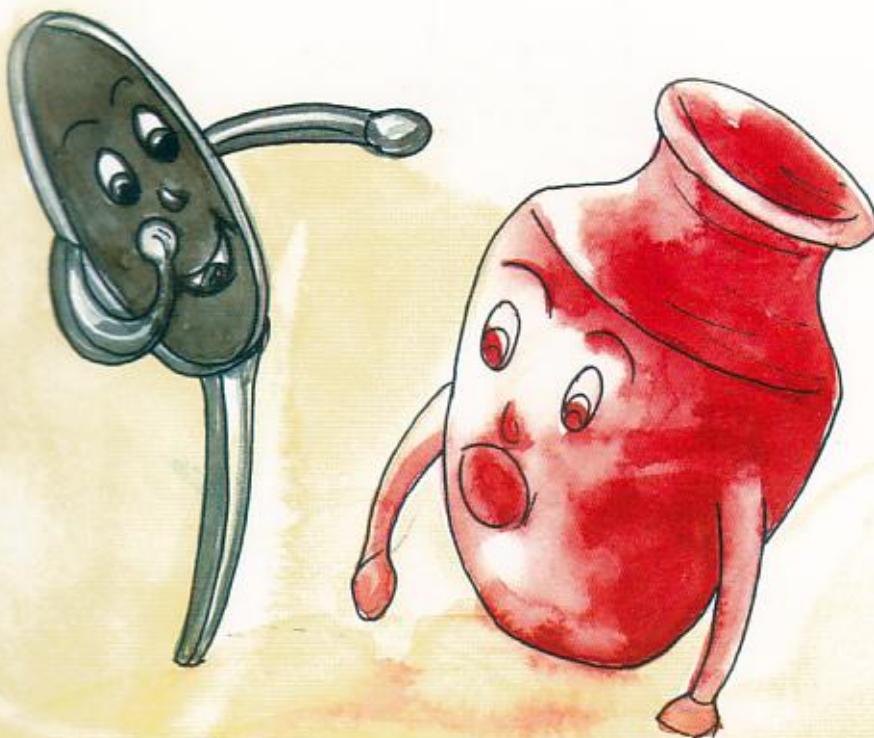
# बिल्ली के गले में घंटी

एक गोदाम में एक बिल्ली रहती थी.

वहां बहुत सारे चूहे भी रहते थे. चूहों को उस बिल्ली से बहुत डर लगता था.

हर रोज़ बिल्ली कुछ चूहों को दबोचकर खा जाती थी.

फिर चूहे उस खतरनाक बिल्ली से बचने का कोई उपाय सोचने लगे.

उन्होंने एक मीटिंग बुलाई और उसमें खूब बहस की :
"हम अपनी जान बचाने के लिए क्या करें?"

एक चूहे ने कहा, "हम क्यों न बिल्ली के गले में एक घंटी बांधें?"

"बहुत अच्छा सुझाव है," सब ने मिलकर कहा.

परन्तु घंटी बांधेगा कौन?

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

A Bagful of Stories
*Published by*
Manchi Pustakam

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions
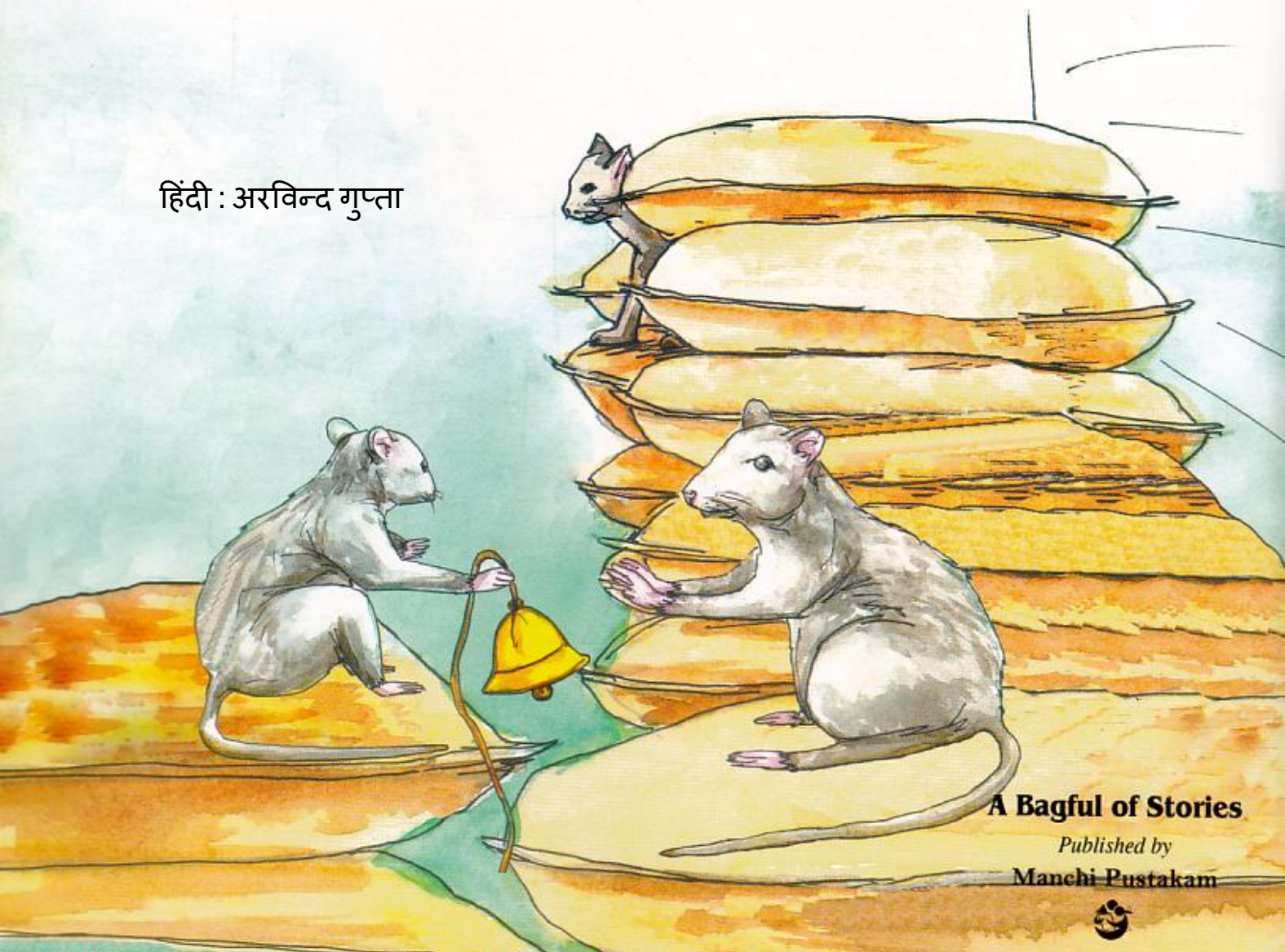
# विचित्र अंडा

पुराने ज़माने की बात है. एक दिन खरगोश को एक गेंद मिली. गेंद बहुत बड़ी और रंगीन थी. खरगोश ने गेंद उठाई और उसे बड़े ध्यान से देखा. गेंद छूने में काफी सख्त थी.

"वो कितनी बड़ी है. वो ज़रूर किसी का अंडा होगा?" खरगोश ने अचरज किया.
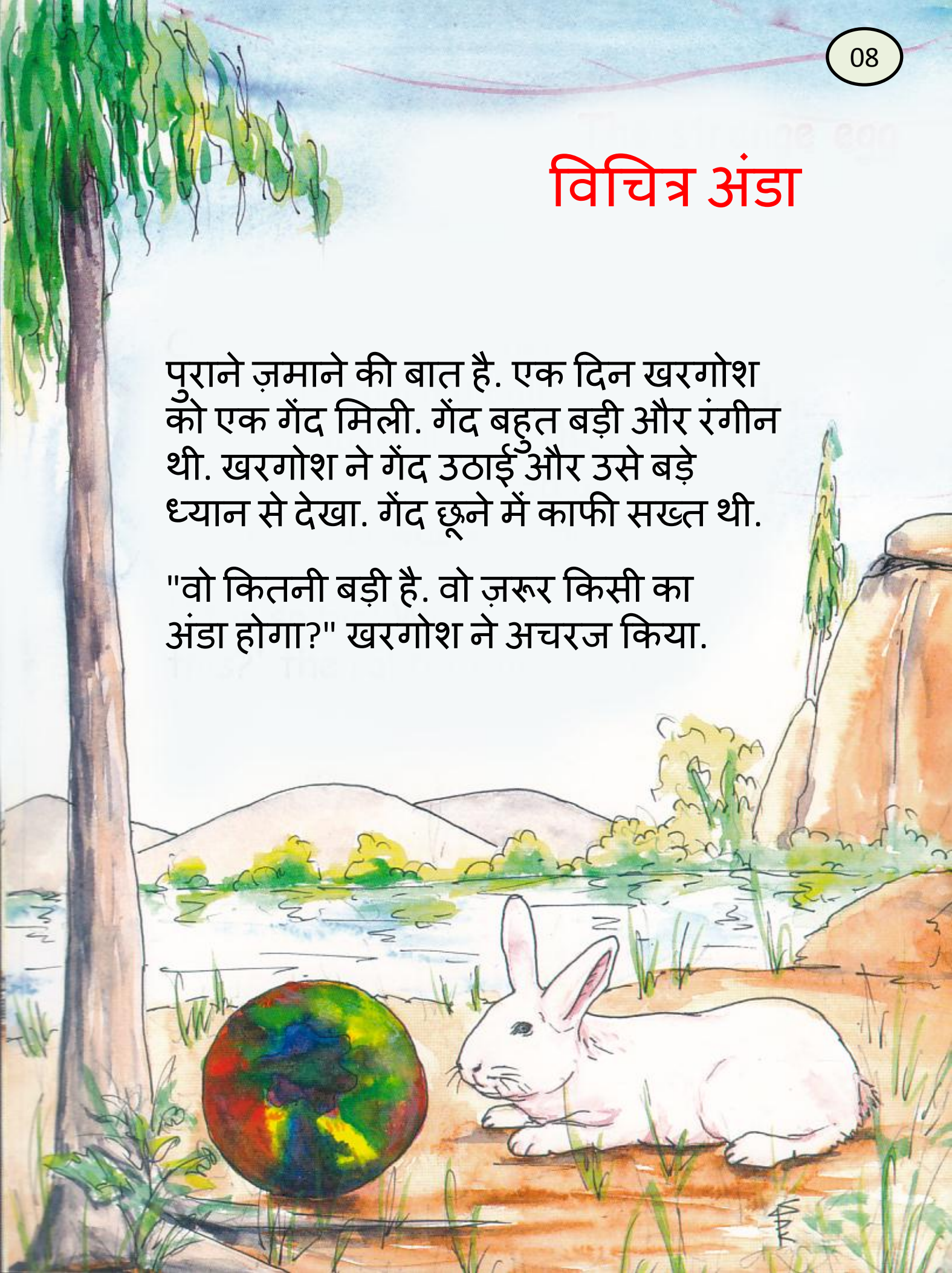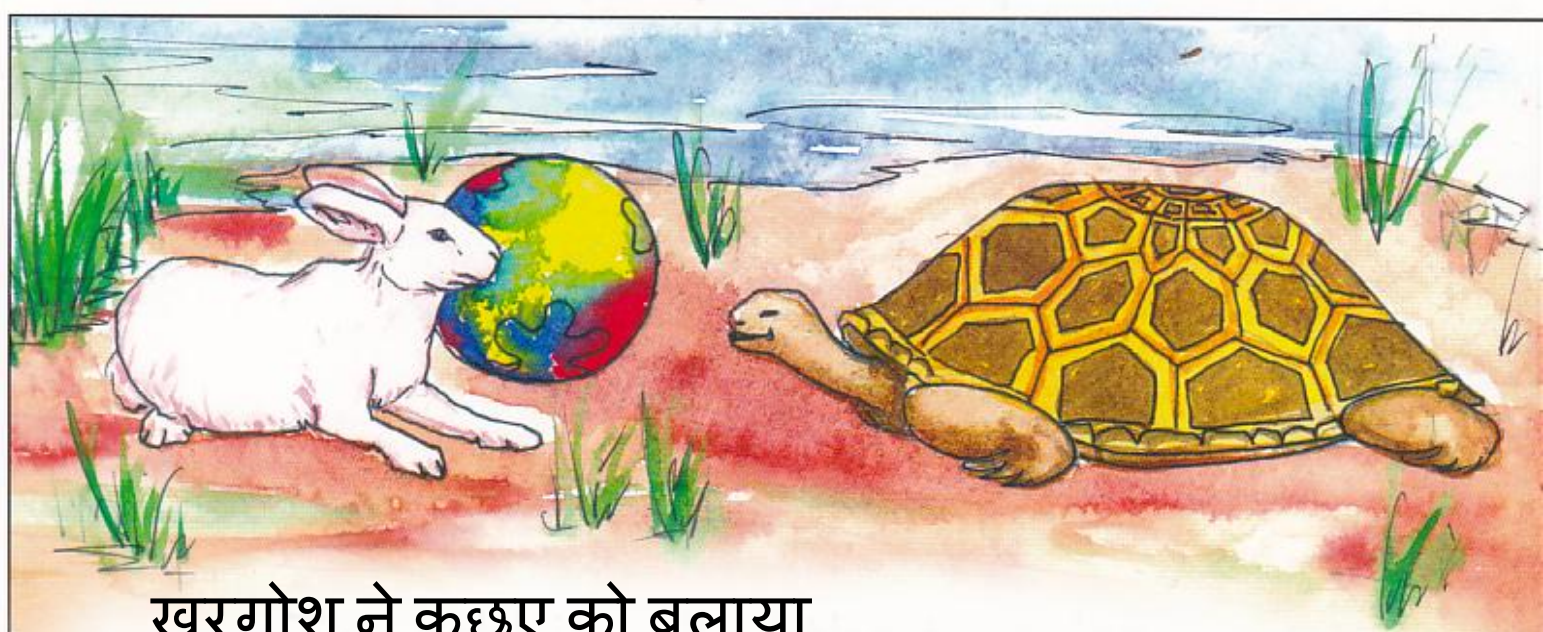
खरगोश ने कछुए को बुलाया.

"क्या यह एक चीते का अंडा है?" उसने पूछा.

"नहीं चीते का अंडा इतना बड़ा नहीं होता है.
यह चीते का अंडा बिल्कुल नहीं है," कछुए ने कहा.

फिर खरगोश ने बन्दर को बुलाया.

"क्या यह ऊँट का अंडा है?" उसने पूछा.

"नहीं ऊँट का अंडा नहीं है. ऊँट का अंडा
रंगीन नहीं होता है," बन्दर ने कहा.

फिर खरगोश ने सारस को बुलाया.

"क्या यह हाथी का अंडा है?" उसने पूछा.

सारस ने गेंद को गौर से देखा. फिर उसने अंडे को अपनी नुकीली चोंच से दबाया.

गेंद फट गई और उसमें से "फुस्स" करके हवा बाहर निकली.

"यह ज़रूर हवा का अंडा होगा!" सारस ने कहा.

"हाँ, यह ज़रूर हवा का अंडा होगा!" खरगोश, कछुए और बन्दर ने अपनी सहमति जताई. फिर सभी ख़ुशी से नाचने लगे.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

A Bagful of Stories
*Published by*
Manchi Pustakam

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions
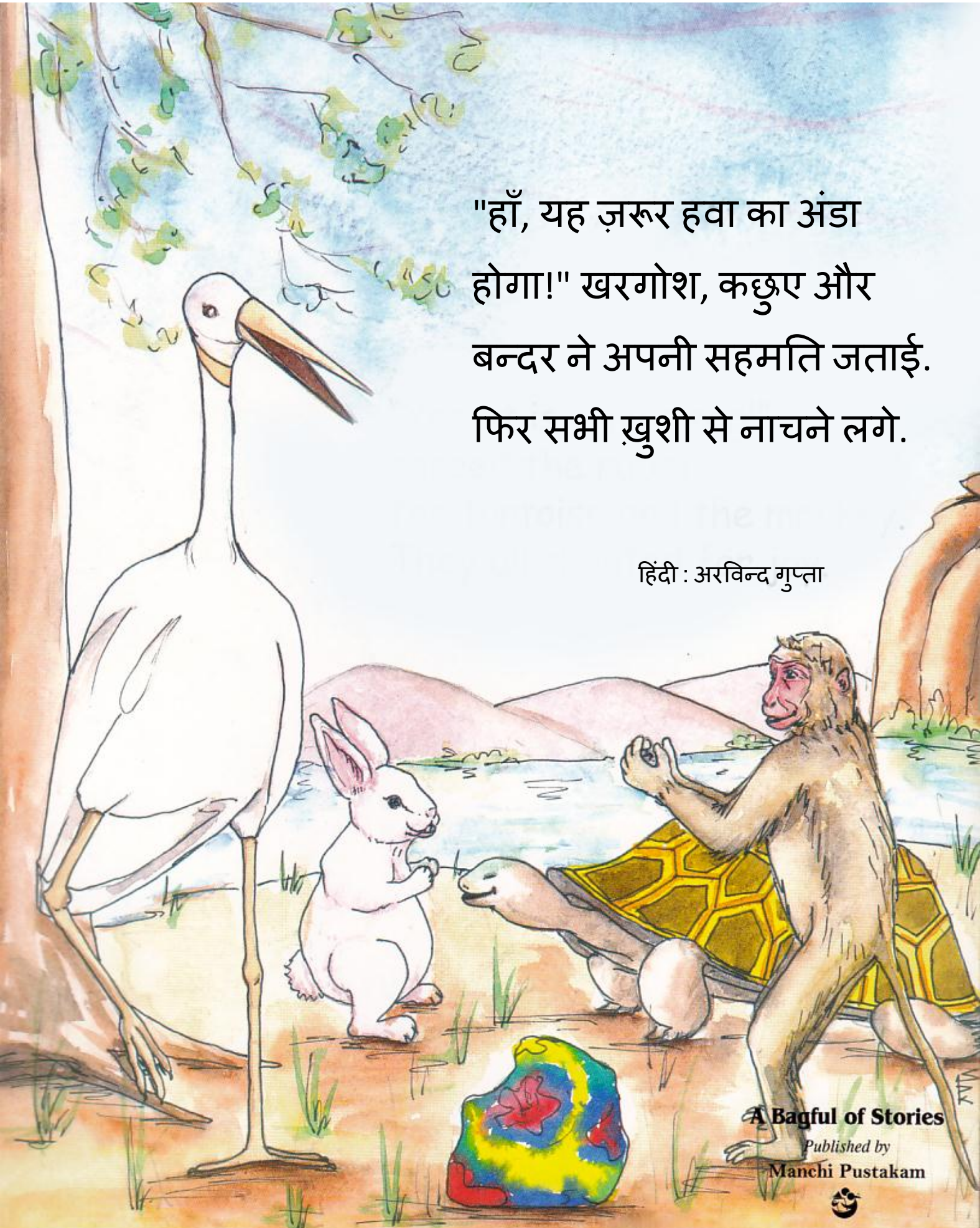
# होशियार मुर्गा

एक लोमड़ी बहुत भूखी थी. वो शिकार खोजने निकली. उसने झोपड़ी की छत पर एक मुर्गे को बैठे हुए देखा. फिर लोमड़ी ने मुर्गे को छत से नीचे लाने की योजना बनाई.

"अरे, मुर्गे भाई! मैंने तुम्हें बहुत लम्बे समय के बाद देखा है! लगता है तुम्हारा वज़न काफी घट गया है और तुम बहुत कमज़ोर हो गए हो. ज़रा नीचे आओ. मैं तुम्हारी नब्ज़ छूकर तुम्हारी सेहत की जांच करूंगी," लोमड़ी ने बड़े प्रेम से कहा.

"तुम्हारी बात बिल्कुल ठीक है, प्रिय लोमड़ी! पर मैं इतना कमज़ोर हूँ कि मैं नीचे भी नहीं आ सकता हूँ," होशियार मुर्गे ने जवाब दिया.

तब लोमड़ी को समझ में आया कि मुर्गा उससे भी ज़्यादा होशियार था. उसके बाद लोमड़ी वहां से चली गई.
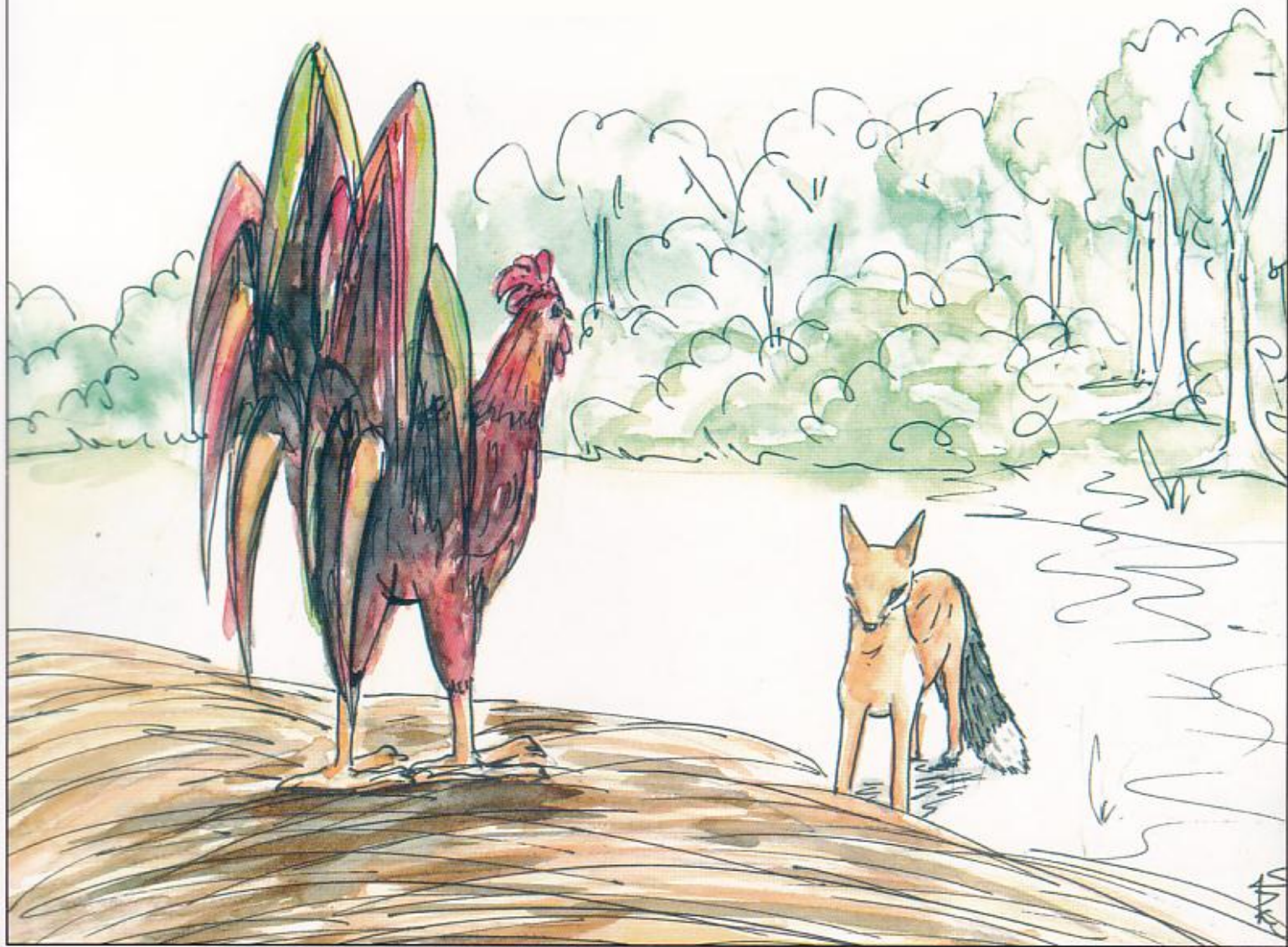
# मैं नहीं करूंगा!

एक आदमी ने मुल्ला से एक चिट्ठी लिखने को कहा.

"वो चिट्ठी कहाँ जाएगी?" मुल्ला ने पूछा.

"वो चिट्ठी बगदाद जाएगी," आदमी ने कहा.

"माफ़ करें, मैं अभी बगदाद नहीं जा सकता!" मुल्ला ने कहा.
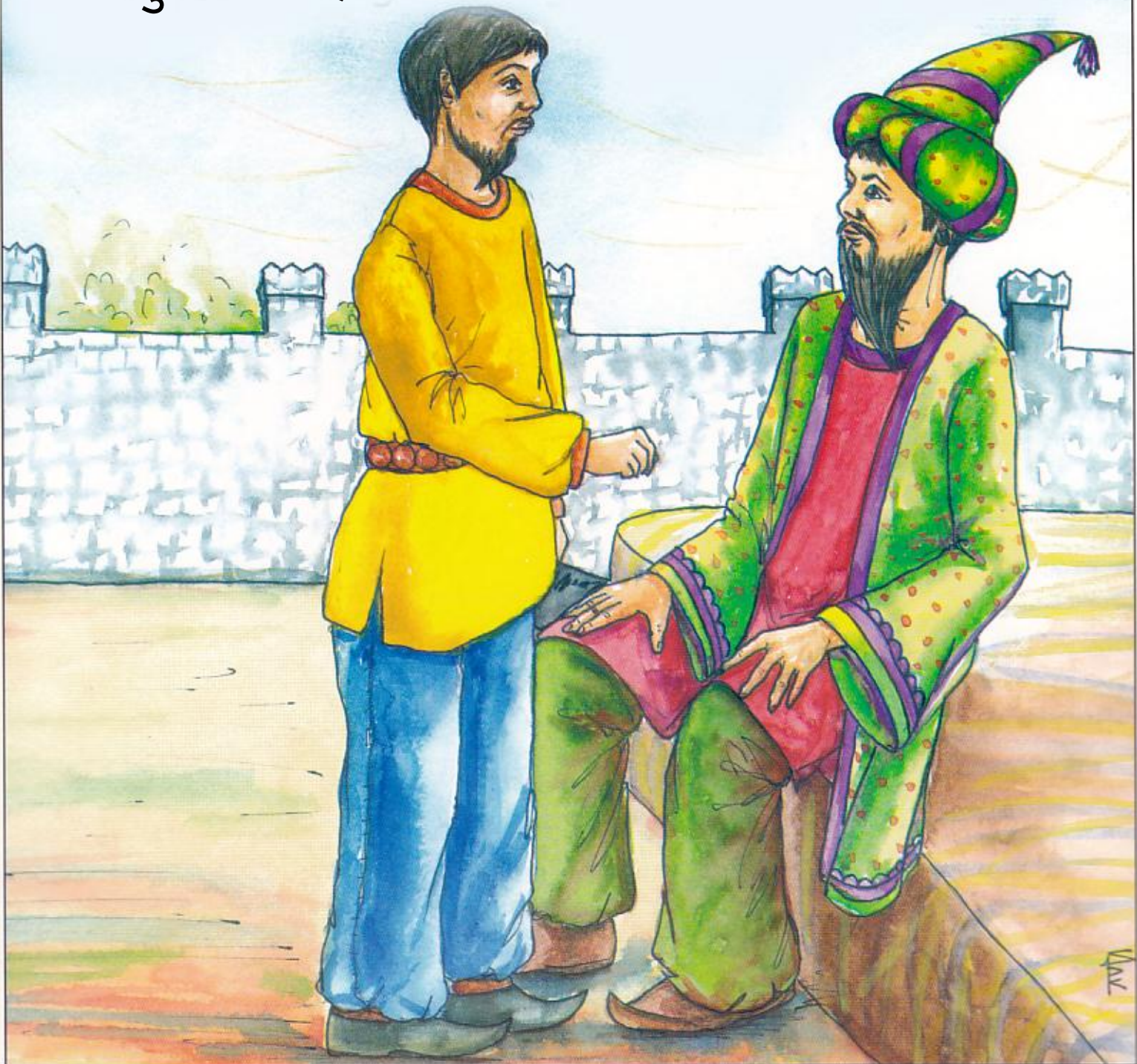
"महाशय, आपको वहां जाने की ज़रुरत नहीं है! सिर्फ चिट्ठी वहां जाएगी," आदमी ने कहा.

"सच में! पर मेरी लिखाई को बगदाद में भला कौन पढ़ पाएगा! फिर मुझे अपनी लिखी चिट्ठी को पढ़ने के लिए बगदाद जाना ही होगा!" मुल्ला ने कहा.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

A Bagful of Stories
*Published by*
Manchi Pustakam

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions
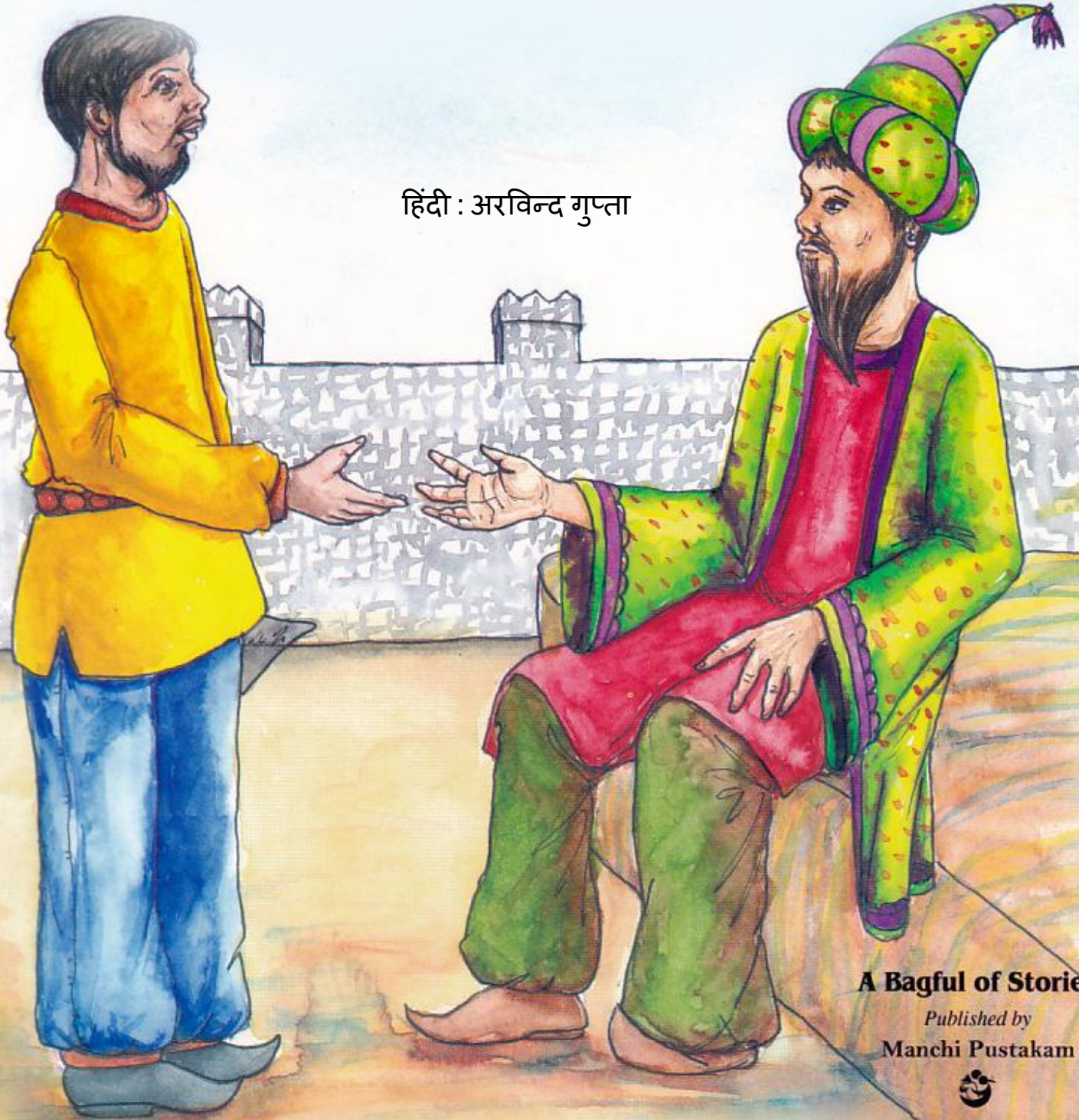
# सात मछलियां

बहुत पहले एक राजा था. उसके सात बेटे थे. एक दिन सातों बेटे मछली पकड़ने गए. हरेक ने एक-एक मछली पकड़ी.

उन्होंने अपनी मछलियों को सुखाया.

एक को छोड़कर बाकी मछलियां सूख गईं.

"मछली, मछली! तुम क्यों नहीं सूखीं?" मछली पकड़ने वाले राजकुमार ने पूछा.
"घास के ढेर ने सूरज को रोका," मछली ने कहा.
"घास के ढेर! घास के ढेर! तुम ने सूरज को क्यों रोका?" राजकुमार ने पूछा.
"गाय ने मुझे नहीं खाया," घास के ढेर ने जवाब दिया.
"गाय, गाय! तुमने घास क्यों नहीं खाई?" राजकुमार ने पूछा.
"चरवाहे ने मेरी रस्सी नहीं खोली," गाय ने कहा.

"तुमने गाय की रस्सी क्यों नहीं खोली? राजकुमार ने चरवाहे से पूछा.

"मेरी दादी ने मुझे खाना नहीं दिया," चरवाहे ने कहा.

"दादी! दादी! तुम्हे चरवाहे को खाना क्यों नहीं दिया?" राजकुमार ने पूछा.

"मेरा छोटा लड़का रो रहा था," दादी ने कहा.

"छोटे लड़के! छोटे लड़के! तुम क्यों रो रहे थे?" राजकुमार ने पूछा.

"मुझे एक चींटी ने काटा," छोटे लड़के ने कहा.

"चींटी! चींटी! तुमने क्यों काटा?" राजकुमार ने पूछा.

"अगर तुम मेरी सुनहरी बाम्बी पर अपनी उंगली रखोगे, तो फिर क्या मैं उसे काटूंगी नहीं?" चींटी ने जवाब दिया.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

A Bagful of Stories
Published by
Manchi Pustakam

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions
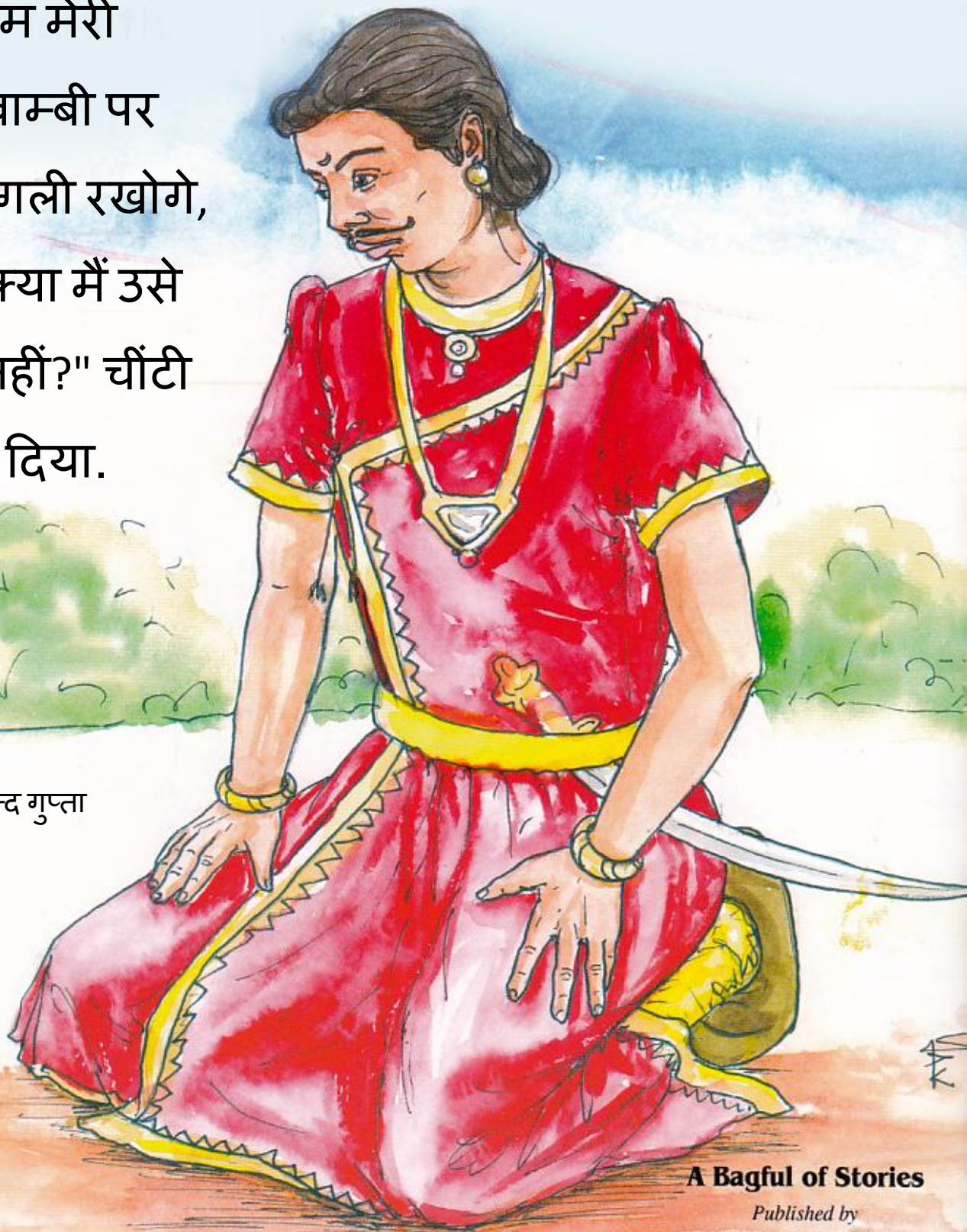
# सफ़ेद कौवा

बहुत बहुत पहले कौवे भी सारस
जैसे ही सफ़ेद होते थे.

उन दिनों उल्लू कपड़ों की
रंगाई का काम करता था.

कौवे की इच्छा थी
कि उसके पंख नीले हों.

वो उल्लू के पास गया. उल्लू ने एक बर्तन में नीला रंग घोला.
उल्लू ने कौवे से एक दूसरे बर्तन के ऊपर खड़ा होने को कहा.
फिर उल्लू ने कौवे के पंखों को रंगना शुरू किया.

अचानक कौवा रंग के बर्तन में गिर गया.

जब वो बाहर निकला

तो वो कोयले जैसा काला था.

गुस्से में आगबबूले कौवे ने उल्लू को अपनी चोंच से मारना चाहा. परन्तु उल्लू वहां से तुरंत उड़ गया.

उस दिन से सभी कौवे काले रंग के होते हैं. कौवे अभी भी अपना बदला लेने के लिए उल्लुओं को तलाशते हैं. इसीलिए उल्लू दिन के समय बिल्कुल नहीं उड़ते हैं. उल्लू रात के अँधेरे में ही अपने घोंसलों से बाहर निकलते हैं, क्योंकि कौवों को अँधेरे में कुछ भी दिखाई नहीं देता है.

**A Bagful of Stories**
*Published by*
**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# बदसूरत चेहरा

मुल्ला सड़क पर एक अन्य आदमी के साथ जा रहा था. तभी उसे सड़क पर एक चमकती हुई चीज़ दिखाई दी.

मुल्ला ने झुककर उसे उठाया. वो एक आईना था.

मुल्ला ने आईने को तुरंत नीचे फेंक दिया.

"कितना बदसूरत चित्र है! किसी ने उसे फेंक दिया है, कोई भी उस बदसूरत चित्र को नहीं चाहता है," उसने कहा.

## चिट्ठी

एक आदमी मुल्ला नसीरुद्दीन के
पास अपनी चिट्ठी पढ़वाने लाया.

मुल्ला ने चिट्ठी को कई बार देखा.

फिर उसने कहा, "मुझे
यह भाषा नहीं आती है."
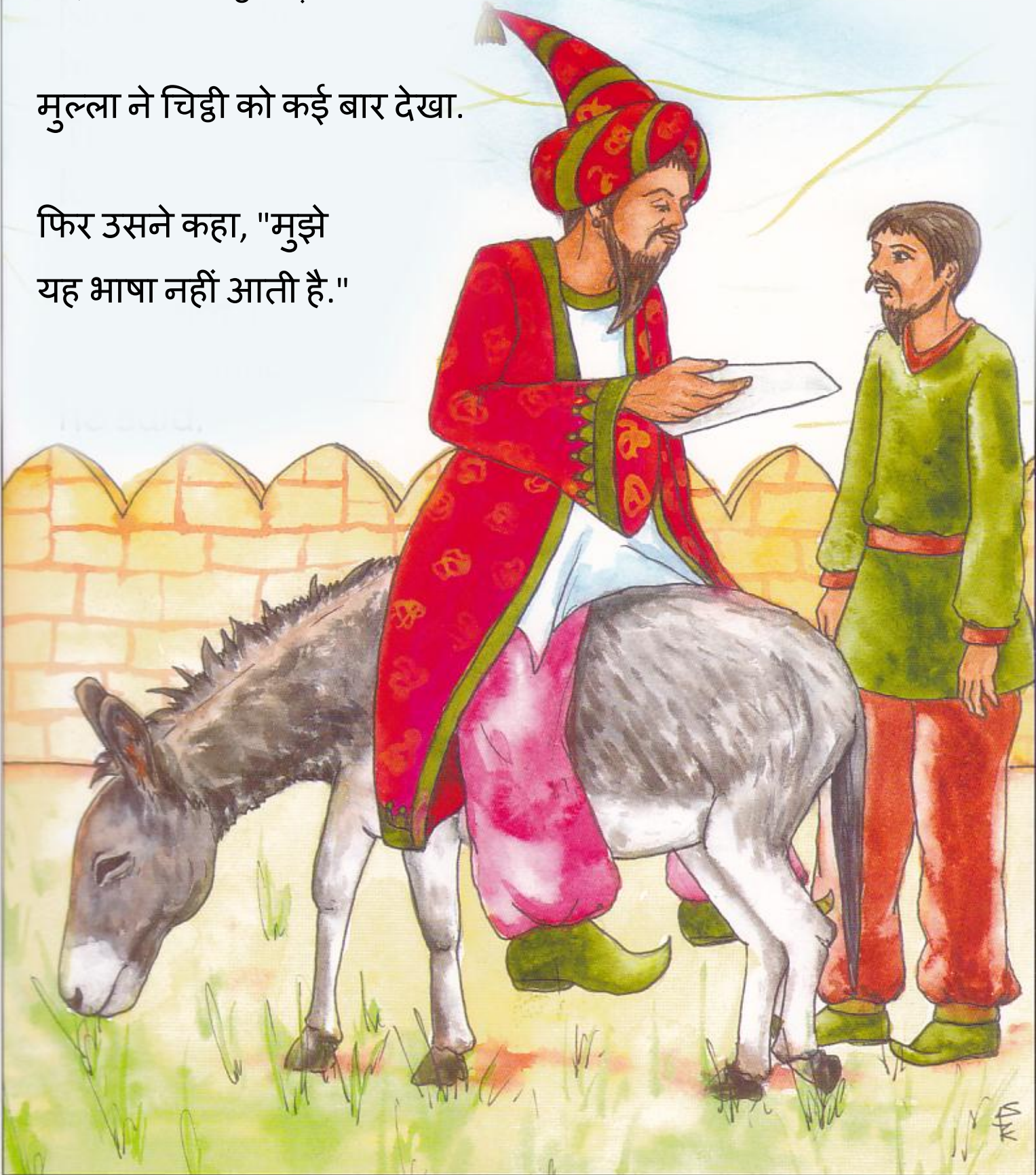
"आप खुद को विद्वान कहते हैं और सर पर पगड़ी बांधते हैं. क्या आप एक साधारण सी चिट्ठी भी नहीं पढ़ सकते?" आदमी ने पूछा.

"यह लो मेरी पगड़ी! और खुद ही अपनी चिट्ठी पढ़ लो!" मुल्ला ने कहा.
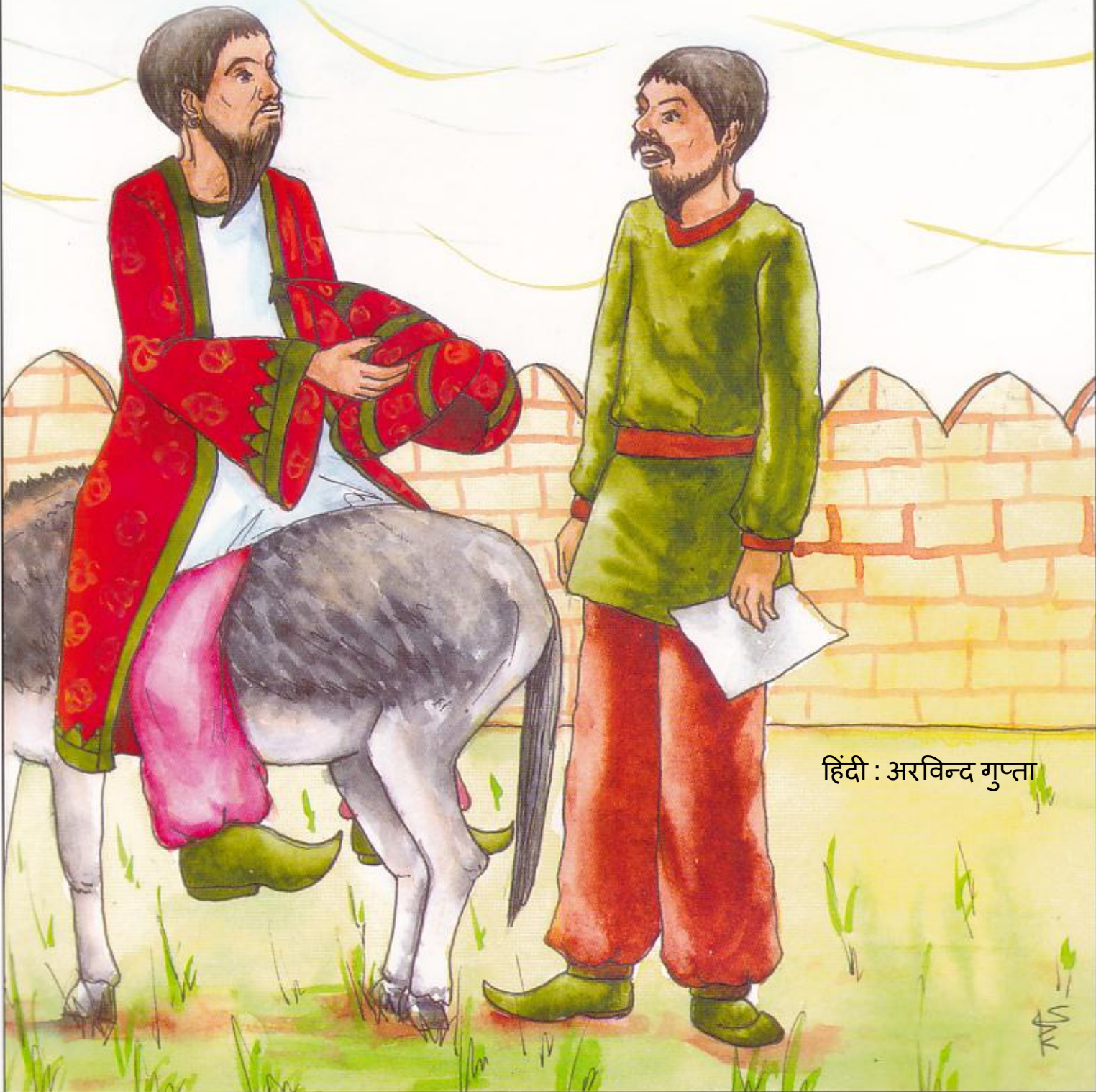
हिंदी : अरविन्द गुप्ता

# बिल्ली रानी

बिल्ली रानी, बिल्ली रानी,
कहाँ गईं थीं तुम?

महारानी को देखने
लेकर अपनी दुम.

बिल्ली रानी, बिल्ली रानी,
क्या किया तुमने?

महारानी के चूहे को
धमकाया मैंने.

# पतंगें, पतंगें

रंग-बिरंगी उड़ें पतंगें
आसमान को छुएं पतंगे
लाल हरी, रंगीन पतंगे
मेरे दिल को भायें पतंगें.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**
*Published by*
**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# नीली लोमड़ी

एक बार लोमड़ी बहुत भूखी थी. उसने पूरा जंगल छान मारा, पर उसे खाने को कुछ नहीं मिला.

फिर वो जंगल के पास के एक गांव में गई.
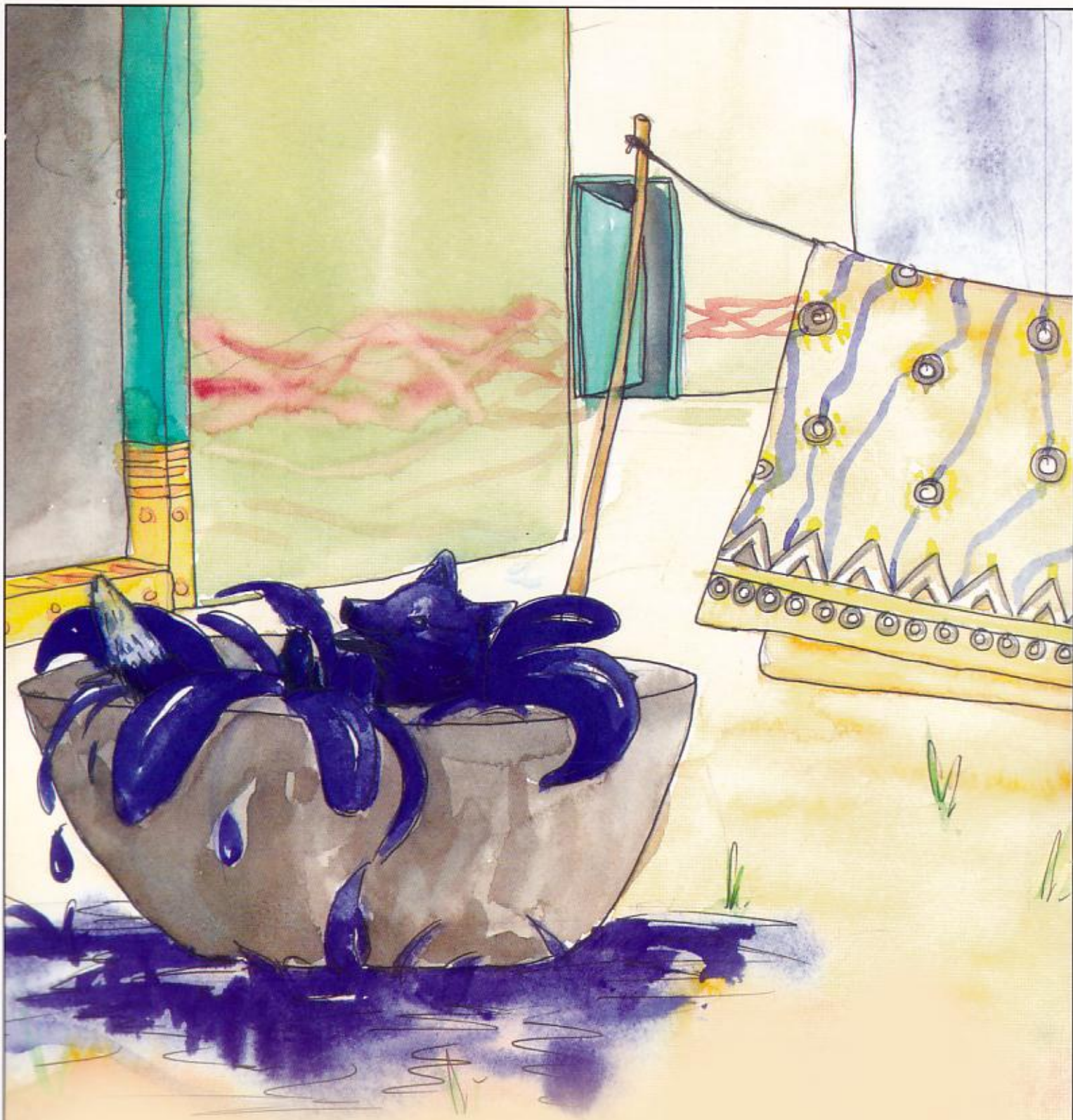
वहां उसे एक बड़ी हौद में कपड़े रंगने के लिए नीले रंग का पानी दिखा.

गलती से लोमड़ी हौद में गिर पड़ी. लोमड़ी का पूरा शरीर नीला हो गया.

फिर लोमड़ी दौड़ कर जांगल में वापिस गई. जंगल में जानवरों ने जब लोमड़ी को देखा तो वे उस नए जानवर को देखकर डर गए. यहाँ तक की चीता भी उस नए जानवर को देखकर सहम गया.

नीली लोमड़ी ने सभी जानवरों को अपने पास आने को कहा.

"देखो, मैं एक विशेष जानवर हूँ. तुम सभी मेरी बात सुनो. अब से मैं जंगल का राजा हूँ," लोमड़ी ने कहा. सभी जानवरों ने उसकी बात मानी.

कुछ दिनों बाद एक रात जब पूरा चाँद निकला तब लोमड़ी को अन्य लोमड़ियों के चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी. उनकी आवाज़ सुनकर नीली लोमड़ी भी चिल्लाने लगी.

फिर जंगल के जानवरों को समझ में आया कि वो विशेष जानवर महज़ एक लोमड़ी थी और उन्होंने उसे वहां से भगा दिया.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**

*Published by*

**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# सोने के अंडे सेने वाली बत्तख

एक गांव के घर में एक बूढ़ा-बूढ़ी रहते थे.

उनकी एक पालतू बत्तख थी.
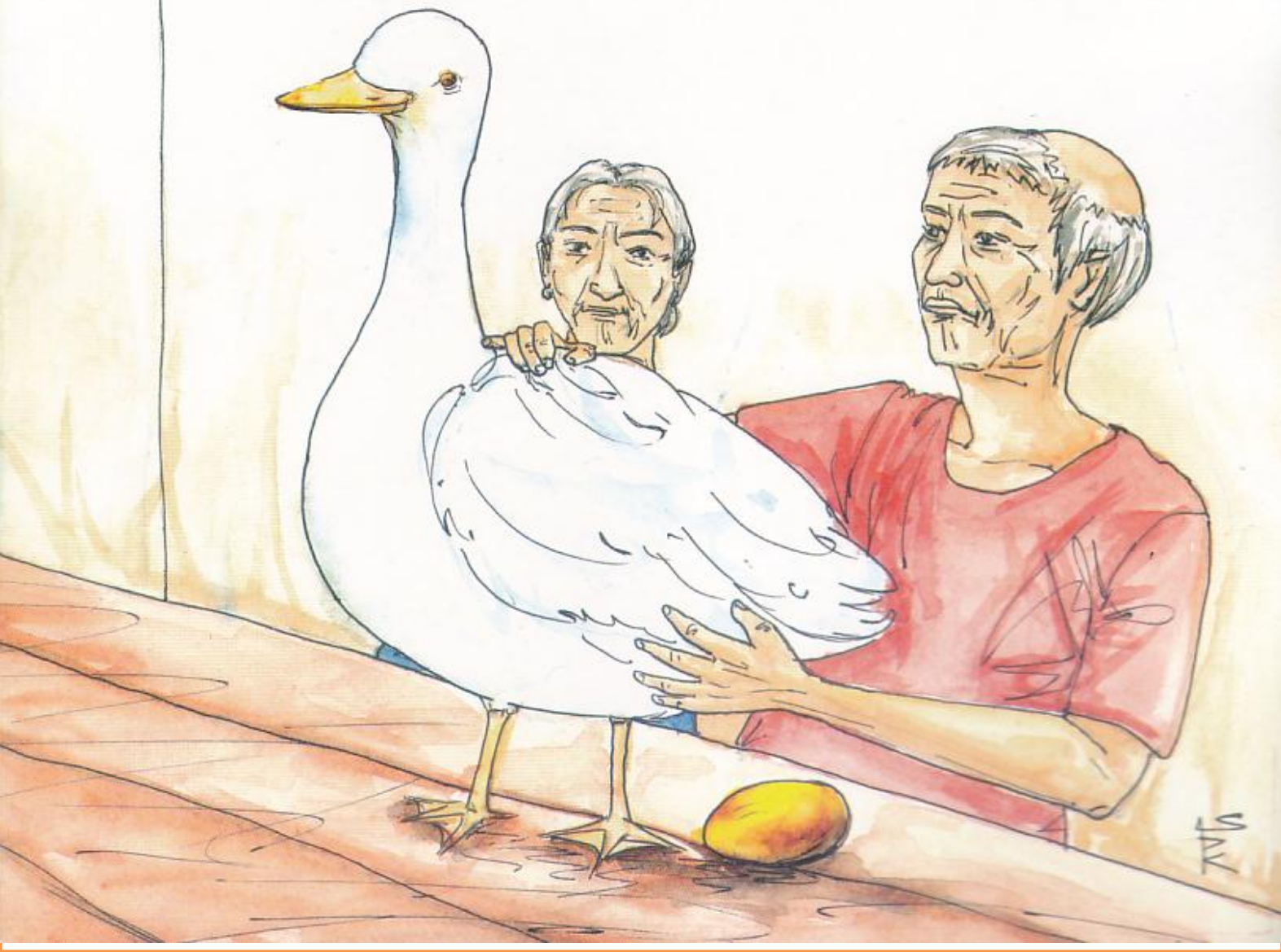
बत्तख रोज़ाना सोने का एक अंडा देती थी.

एक दिन बूढ़ा-बूढ़ी में दिमाग में एक विचार आया. "बत्तख रोज़ एक सोने का अंडा देती है. इसलिए उसका पेट ज़रूर सोने के अंडों से भरा होगा!"

उन्होंने सोचा कि बत्तख का पेट काटकर वो सभी सोने के अंडों को एक-साथ प्राप्त कर सकते थे.

उन्होंने तुरंत चाकू से बत्तख का पेट काटा.

पर बत्तख के पेट में कोई भी अंडा नहीं निकला. बाकी सभी बत्तखों की तरह वो बत्तख भी मांस और खून की ही बनी थी.

उसके बाद बूढ़ा-बूढ़ी सोने का अंडा सेने वाली बत्तख की मौत पर रोने लगे.

# एक, दो ....

एक, दो ....
जल्दी सो.

तीन, चार
द्‌वार को मार.

पांच, छह,
कुछ तो कह.

सात, आठ,
चलो हाट.

नौ, दस,
बहुत हुआ, बस.

# छह छोटी बत्तख

छह छोटी बत्तख, मेरी पक्की दोस्त
मोटी-दुबली बत्तख, मेरी पक्की दोस्त
एक छोटी बत्तख, पूंछ पे जिसके पंख
लाइन से ले जाती, सबको राह दिखाती.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

A Bagful of Stories
*Published by*
Manchi Pustakam

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions
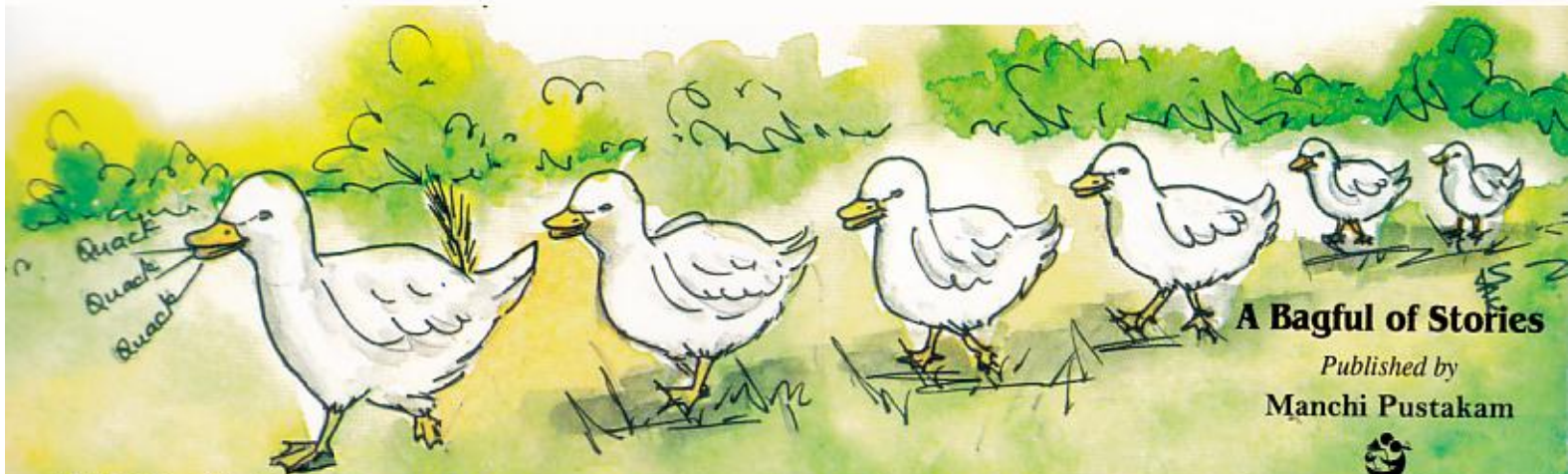
# सारस और सियार

जंगल में एक सियार रहता था. उसके गले में एक हड्डी अटक गई. कोई भी उस हड्डी को निकाल नहीं पाया. सियार दर्द के मारे पूरे जंगल में भटकता रहा.
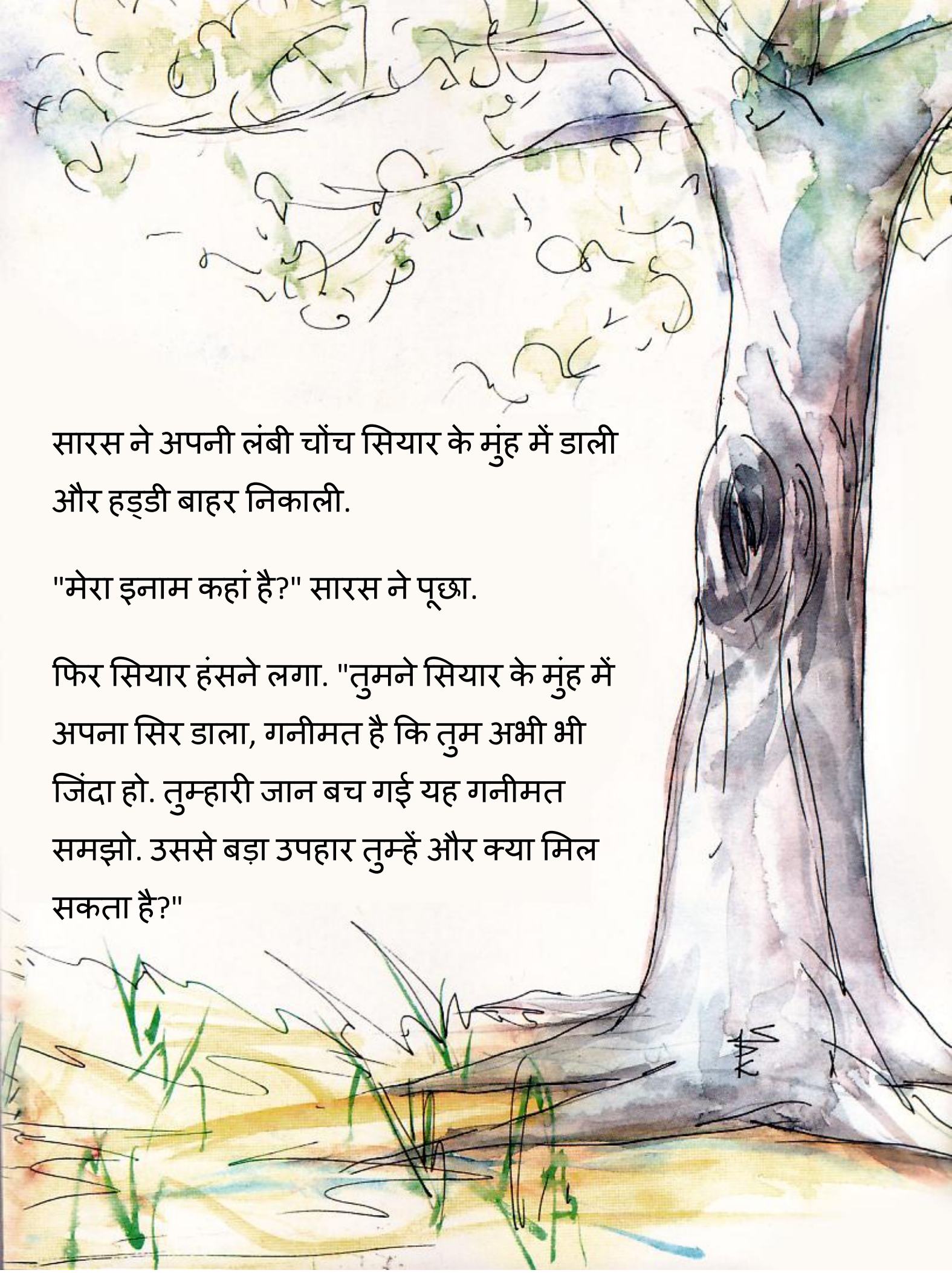
अंत में उसे एक सारस दिखाई पड़ी. "अरे मेरी
बहन सारस!" सियार दर्द से चिल्ल्या.
"मेरे गले में एक हड्डी फंस गई है.
कृपा करके उसे निकाल दो.
बदले में मैं तुम्हें इनाम दूंगा."

सारस ने कहा, "ठीक है,
मैं कोशिश करती हूँ."

फिर सियार ने अपना मुंह
खोला.
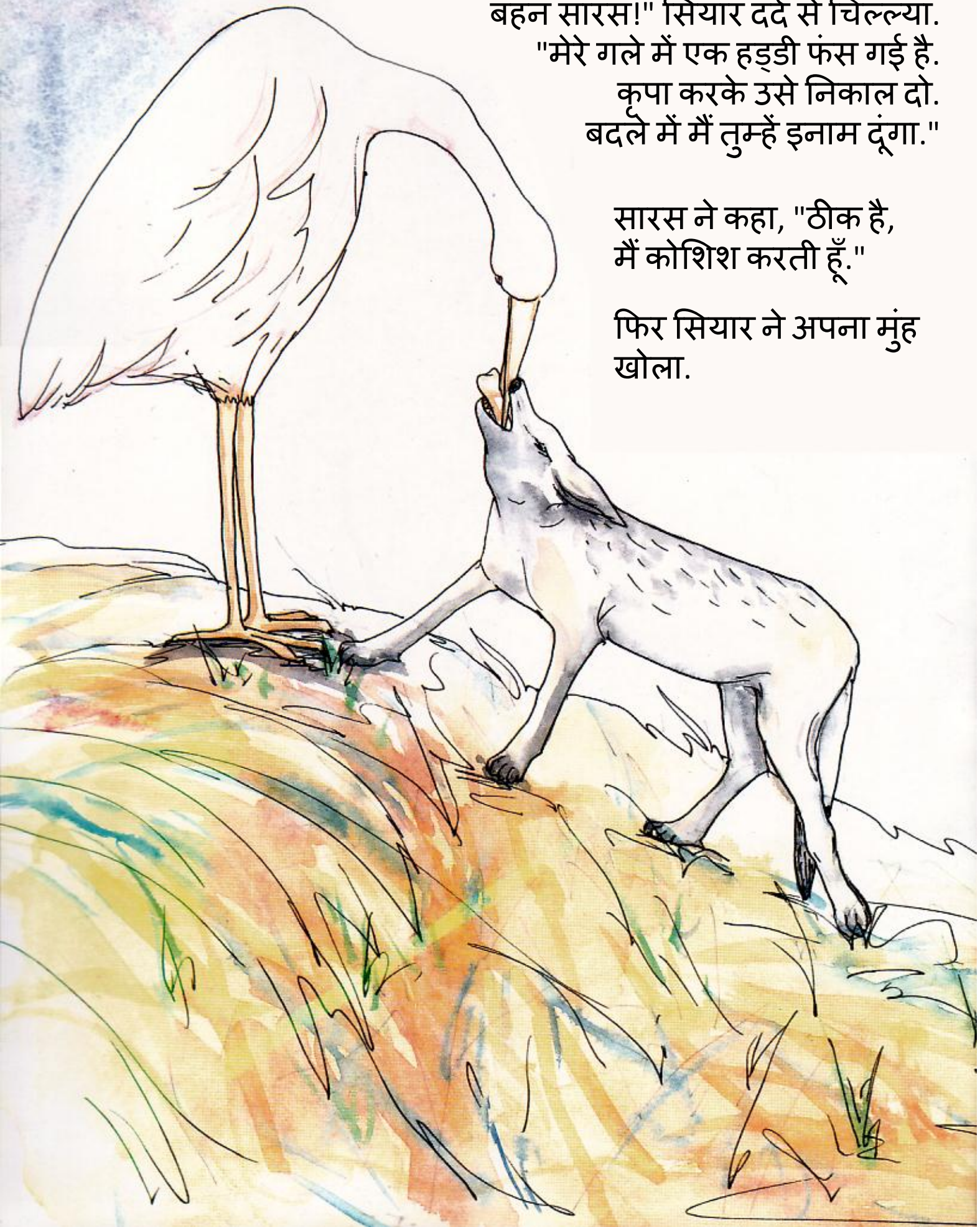
सारस ने अपनी लंबी चोंच सियार के मुंह में डाली और हड्डी बाहर निकाली.

"मेरा इनाम कहां है?" सारस ने पूछा.

फिर सियार हंसने लगा. "तुमने सियार के मुंह में अपना सिर डाला, गनीमत है कि तुम अभी भी जिंदा हो. तुम्हारी जान बच गई यह गनीमत समझो. उससे बड़ा उपहार तुम्हें और क्या मिल सकता है?"

# पेड़ और नरकत

एक बहुत बड़ा पेड़ था.
बिल्कुल उसके पास एक
पतली नरकत थी.

हल्की हवा चलते ही नरकत
हिलने-डोलने लगती थी.
यह देखकर पेड़, नरकत को
चिढ़ाता था.

पर बिचारी नरकत हमेशा चुप रहती थी.

एक दिन ज़ोरदार तूफ़ान आया. तेज़ हवा में नरकत
झुककर एकदम दोहरी हो गई. पर वो तूफ़ान से बच
गई.

पर पेड़ बिलकुल भी नहीं झुक पाया. तेज़ हवा में पेड़
टूटकर ज़मीन पर गिर गया.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

A Bagful of Stories
Published by
Manchi Pustakam

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# लालची चूहा

घर के दरवाज़े में एक छोटा सा छेद था.

चूहा उस छेद में से घर के अंदर घुस गया. उसे घर में बढ़िया पकवान खाने को मिले.

चूहे को खाने की चीज़ें बेहद पसंद आई. उसने जमकर, भर पेट खाया. भरपूर खाना खाने के बाद उसने अपने बिल में वापिस जाने की सोची.

पर अब उसका पेट फूलकर कुप्पा हो गया था. अब वो तमाम कोशिशों के बावजूद भी दरवाज़े के छेद में से बाहर नहीं निकल पाया.

# वो गधा जो पढ़ सकता था

ताताचारी और रामलिंगाडू दोनों पडोसी थे. ताताचारी हमेशा रामलिंगाडू को परेशान करता था. इसलिए दोनों में बिल्कुल नहीं बनती थी.

एक दिन ताताचारी ने रामलिंगाडू को एक चिट्ठी लिखते हुए देखा. ताताचारी क्या लिख रहा है यह जानने की रामलिंगाडू की बड़ी इच्छा हुई.

इसलिए ताताचारी, रामलिंगाडू के पीछे खड़ा हो गया और अपनी गर्दन उठाकर रामलिंगाडू की चिट्ठी पढ़ने लगा.

रामलिंगाडू इस बात को ताड़ गया.
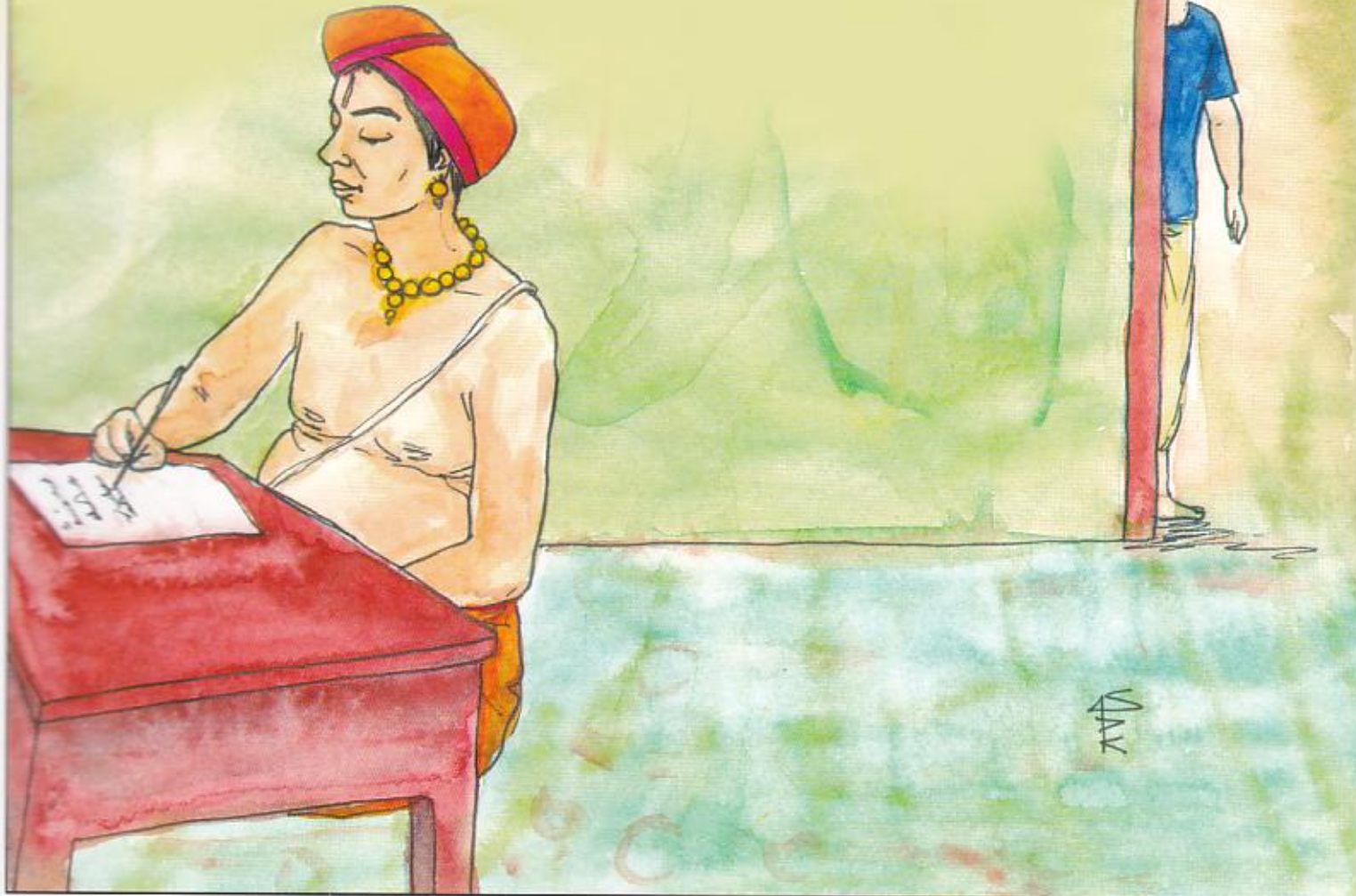
इसलिए उसने लिखा: "मेरे पीछे एक गधा खड़ा है.
उसकी आदत दूसरों की चिट्ठियां पढ़ना है. वैसे मैं कई चीज़ें लिखना चाहता था. परन्तु एक गधे को वो बातें नहीं पढ़ना चाहिए.
इसीलिए मैं उन बातों को नहीं लिख रहा हूँ."
यह लिखकर रामलिंगाडू ने अपनी चिट्ठी ख़त्म की.

ताताचारी ने चिट्टी में लिखी सारी बातें पढ़ीं. उन्हें पढ़कर वो आग-बबूला हो गया. लेकिन वो भला क्या कर सकता था? वो चुपचाप वहां से खिसक लिया.
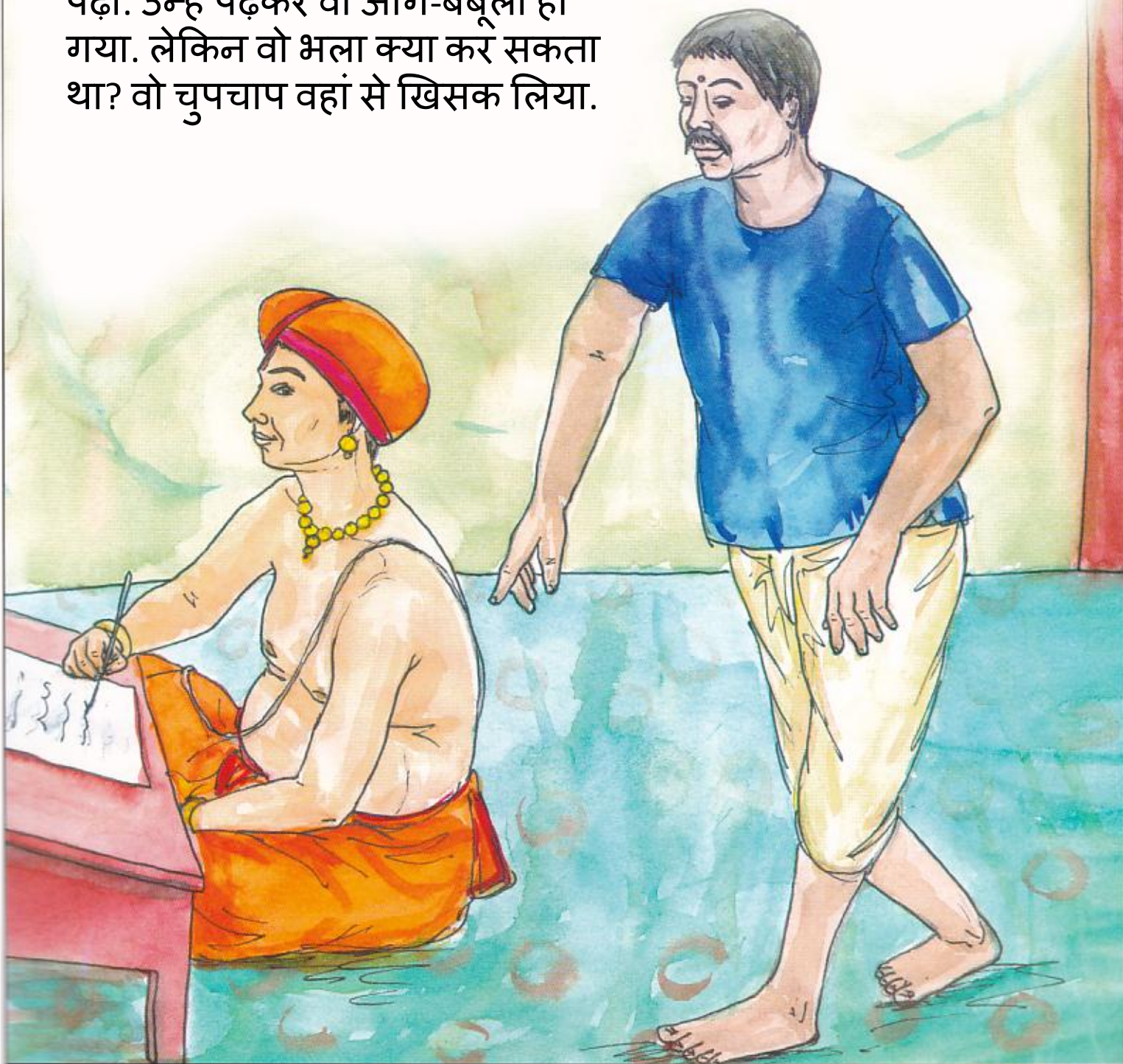
# थोड़ा कूदो

थोड़ा कूदो
थोड़ा उछलो
एक, दो, तीन

थोड़ा दौड़ो
रस्सी कूदो
अपना घुटना छुओ

थोड़ा झुको
थोड़ा मुड़ो
अपना सर हिलाओ

हल्की सी जम्हाई
थोड़ी सी नींद
बिस्तर में लेटो.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**

*Published by*

**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# पूंछ की मुश्किलें

पुराने ज़माने की बात है. एक चूहा था, उसकी चार पूंछे थीं. उसे अपनी पूंछे निहारने में बहुत मज़ा आता था. पर दूसरे चूहे उसका मज़ाक उड़ाते थे : वो रहा "चार पूंछों वाला चूहा! चार पूंछों वाला चूहा!"

फिर चूहे ने एक बूढ़े चूहे से उसकी एक पूंछ काटने को कहा. "ठीक है," बूढ़े चूहे ने कहा और उसने चूहे की एक पूंछ काट दी. अब चूहे की सिर्फ तीन पूंछे ही बचीं.

पर बाकी चूहों ने उसे चिढ़ाना नहीं छोड़ा: वो रहा "तीन पूंछों वाला चूहा! तीन पूंछों वाला चूहा!"

फिर चूहा दुबारा बूढ़े चूहे के पास गया. उसने उससे तीन पूंछों में से एक और पूंछ काटने की विनती की. बूढ़े चूहे ने वही कहा.

अब चूहे की सिर्फ दो पूंछे ही बचीं. बाकी चूहे उसे फिर भी चिढ़ाते रहे : वो देखो,
"दो पूंछों वाला चूहा!
दो पूंछों वाला चूहा!"

उसके बाद चूहे ने अपनी एक और पूंछ कटवा दी. पर शैतान चूहों ने अभी भी उसका पीछा नहीं छोड़ा.

"एक पूंछ वाला चूहा!
एक पूंछ वाला चूहा!" कहकर वे उसे चिढ़ाते रहे.

चूहे से और ताने बारदाश्त नहीं हुए. फिर उसने अपनी आखिरी पूंछ भी कटवा दी. पर क्या उसके बाद दूसरे चूहों ने उसे अकेला छोड़ा?
वे फिर भी उसे चिढ़ाते रहे :
"बिना पूंछ वाला चूहा! बिना पूंछ वाला चूहा!"

A Bagful of Stories
*Published by*
Manchi Pustakam

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions
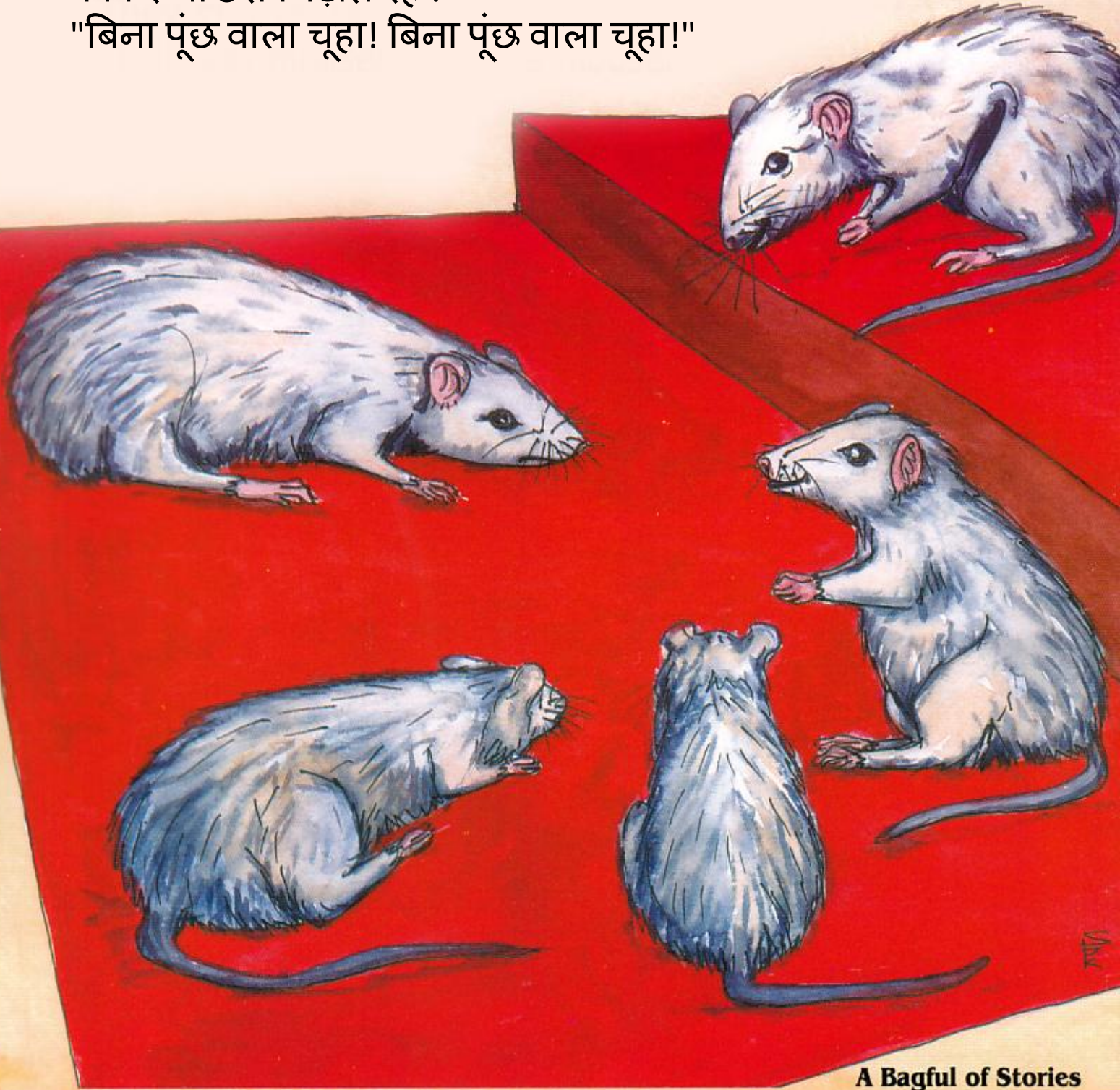
# "पिताजी...... चीता आया!"



कभी एक गांव में एक लड़का रहता था.
रोज़ाना वो अपनी भेड़ों को जंगल में
चराने लेकर जाता था.
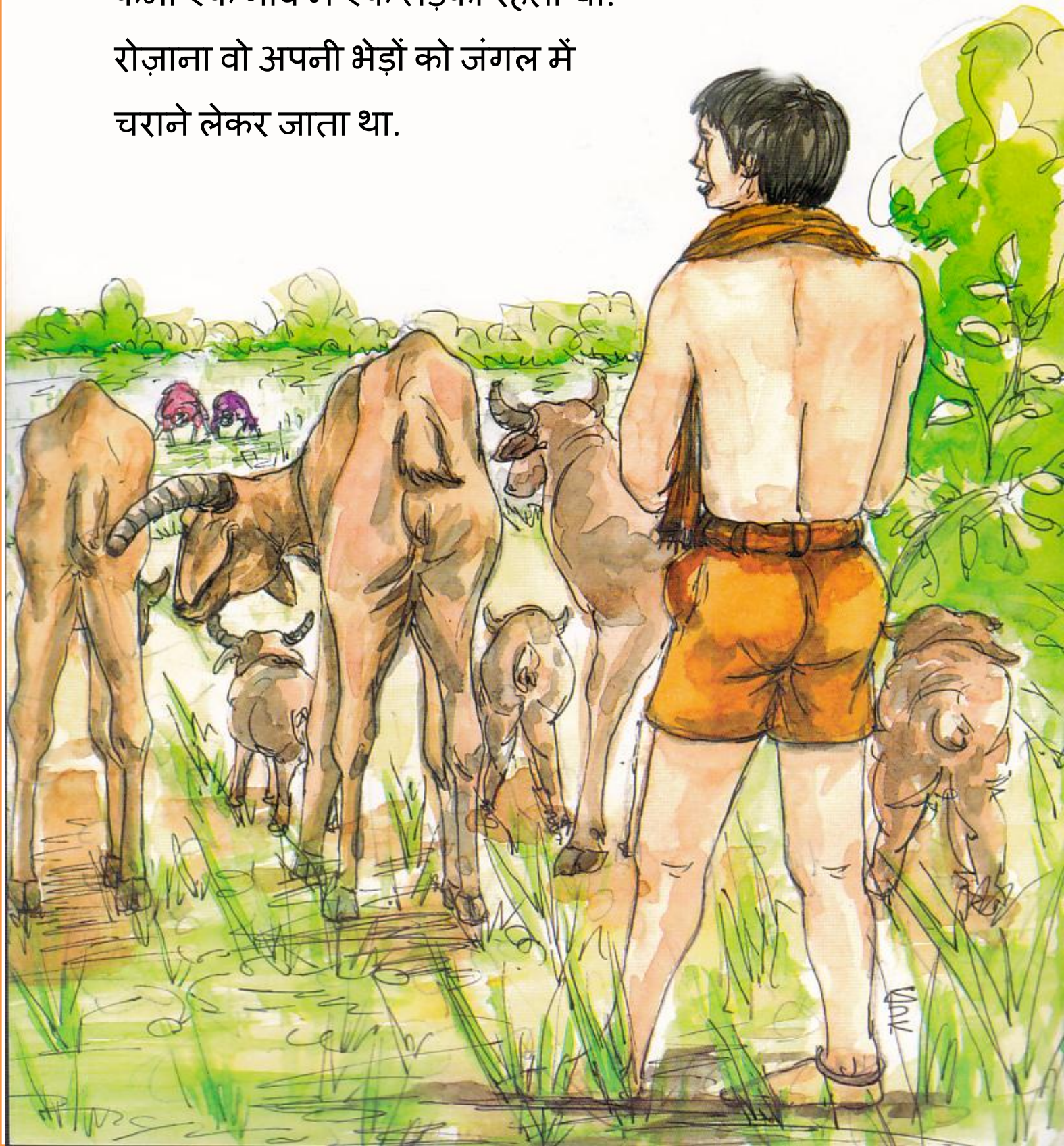
एक दिन उसने सब लोगों के साथ एक शैतानी करने की सोची.
"पिताजी...... चीता! बचाओ, चीता आया!"
वो ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया.

लड़के के पिता और अन्य लोग, खेतों में अपना काम छोड़कर
दौड़े-दौड़े हुए उसके पास पहुंचे.
"चीता कहाँ है?" लड़के के पिता ने पूछा.

लड़का हंसने लगा. "कोई भी चीता नहीं आया.
मैं सिर्फ मज़ाक में चिल्लाया था!" उसने कहा.
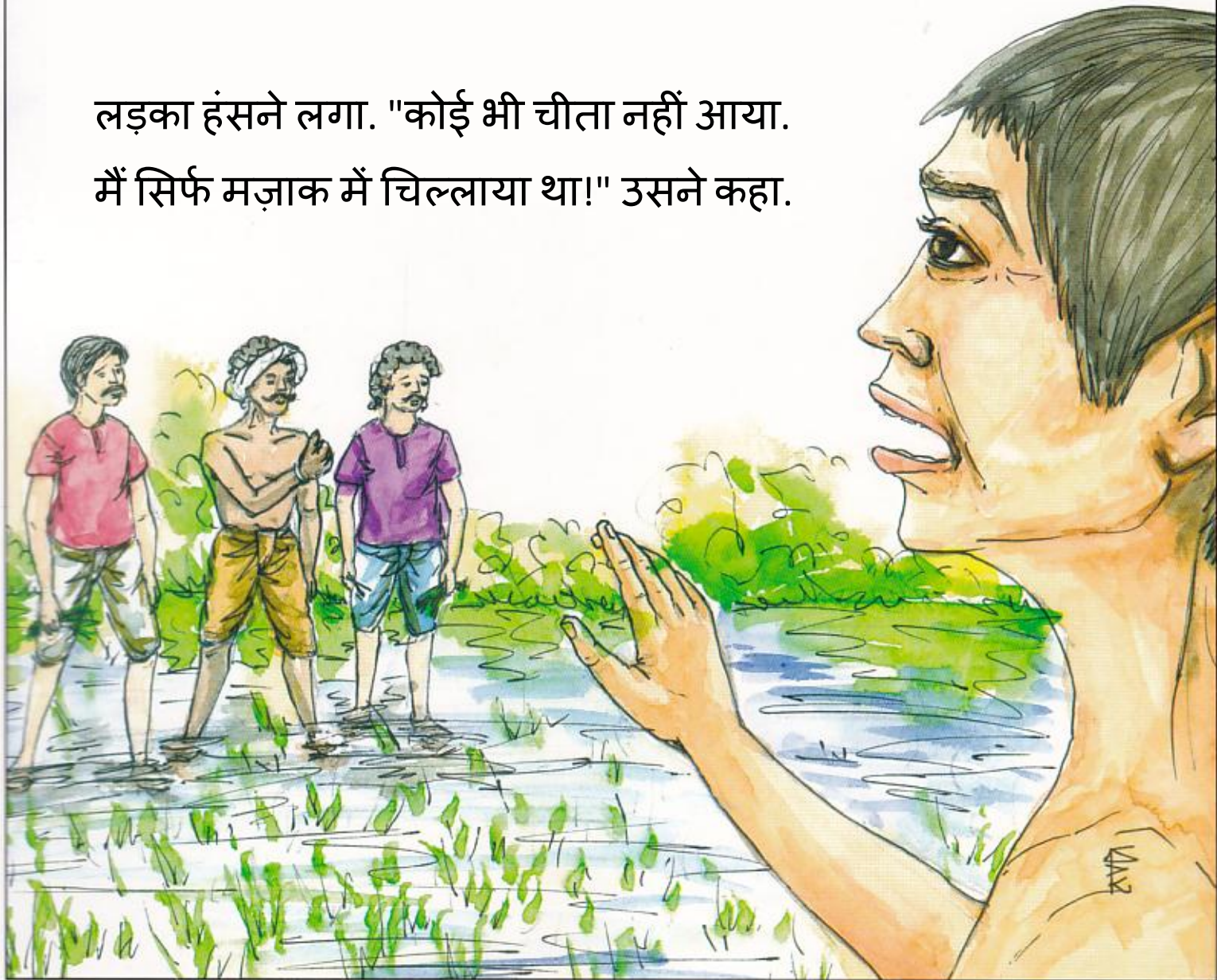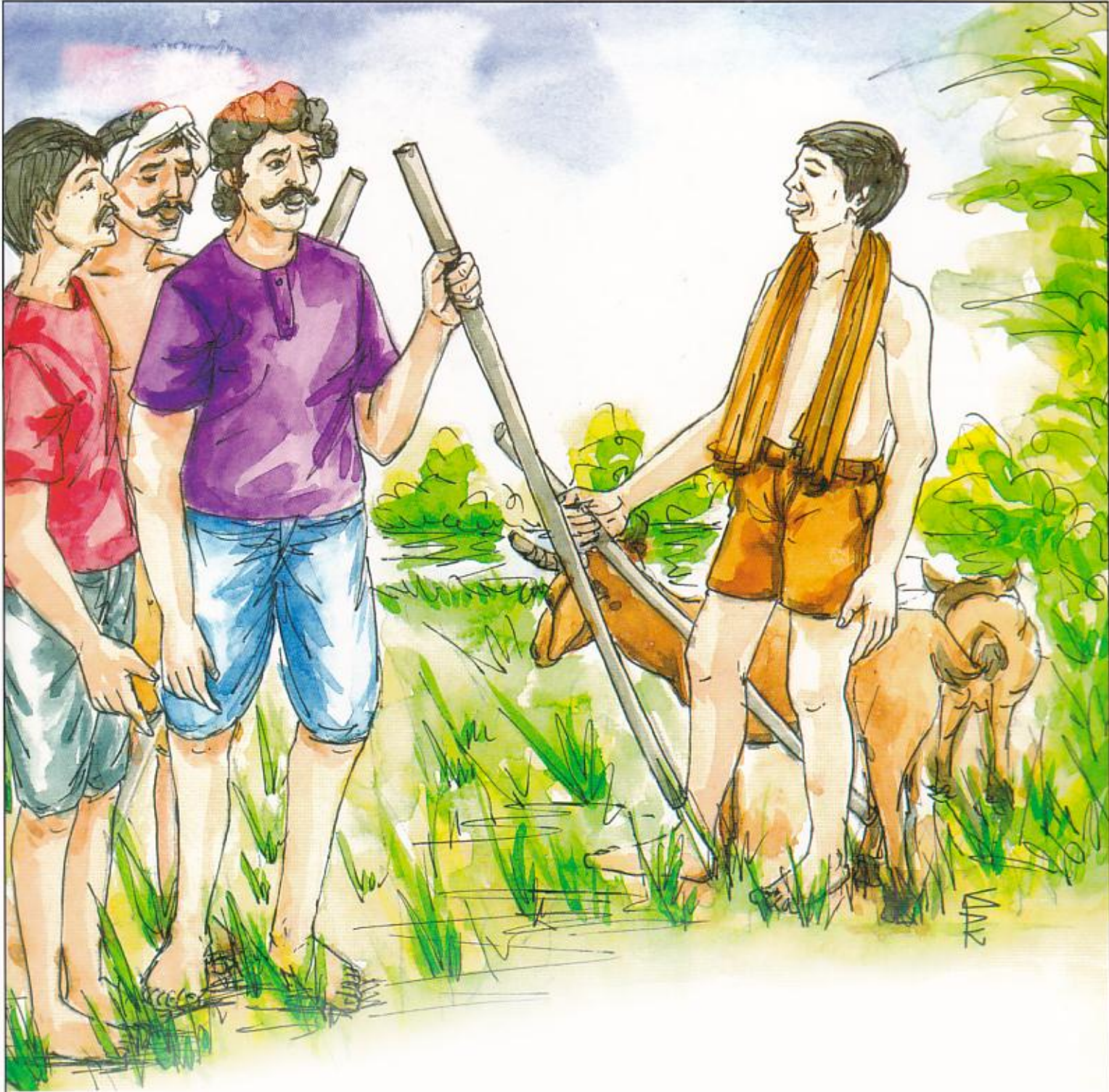
कुछ दिनों बाद उसने दुबारा वही किया. "पिताजी, चीता! चीता आया है! वो भेड़ों को खा रहा है," वो चिल्लाया. दुबारा, फिर से कुछ लोग दौड़े हुए आए.

"मैं तो सिर्फ मज़ाक कर रहा था," लड़के ने कहा. सब लोग उस लड़के पर गुस्सा हुए और फिर अपने काम पर वापिस चले गए.

फिर एक दिन सच में चीता आया. "पिताजी! चीता आया है! जल्दी आइए!" लड़का डर के मारे चिल्लाया.

"उसके चिल्लाने पर कुछ ध्यान मत दो. वो हमेशा मज़ाक करता है और झूठ बोलता है!" लोगों ने कहा.

किसी ने भी लड़के के चिल्लाने पर ध्यान नहीं दिया.

उस बीच चीता एक भेड़ को उठाकर घने जंगल में गायब हो गया.
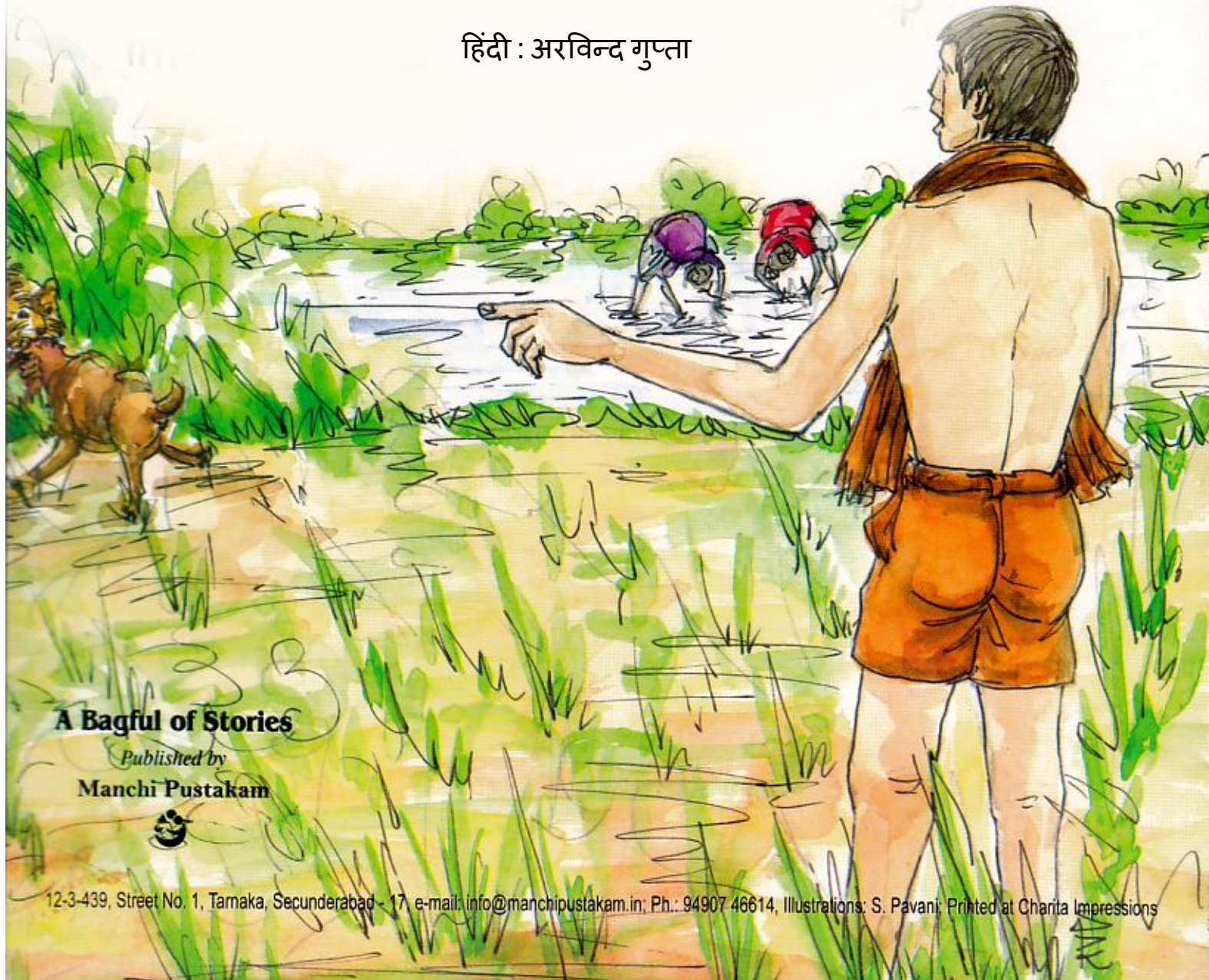
# मुर्गी और सुई

बहुत पुरानी बात है. तब मुर्गी और चील में पक्की मित्रता थी. वे हमेशा एक-साथ रहते थे.

फिर एक दिन चील को बहुत दूर अपने घर जाना पड़ा. जाने से पहले चील ने मुर्गी को एक सुई दी.

“इस सुई को अपने पास संभाल कर रखना. वापिस आकर मैं उसे वापिस लूंगी," चील ने कहा.

मुर्गी ने सुई को संभाल कर अपने पंखों के बीच में रखा. पर जब मुर्गी चुग्गे की तलाश में गई तब सुई कहीं गिर गई. मुर्गी ने बहुत ढूँढा, लेकिन उसे सुई कहीं नहीं मिली.

लौटने पर चील ने मुर्गी से सुई वापिस मांगी. "वो सुई मुझ से कहीं गिर गई," मुर्गी ने जवाब दिया.

चील काफी परेशान हुई और उसने मुर्गी से सुई वापिस लाने को कहा. "जब तक तुम सुई वापिस नहीं लातीं तब तक मैं तुम्हारे चूज़ों को खाती रहूंगी," चील ने मुर्गी को धमकी दी.

तब से मुर्गी और चील एक-दूसरे के दुश्मन हैं. मौका मिलते ही चील, मुर्गी के चूज़े उठा कर ले जाती है. फिर मुर्गी उसे डराने की कोशिश करती है.
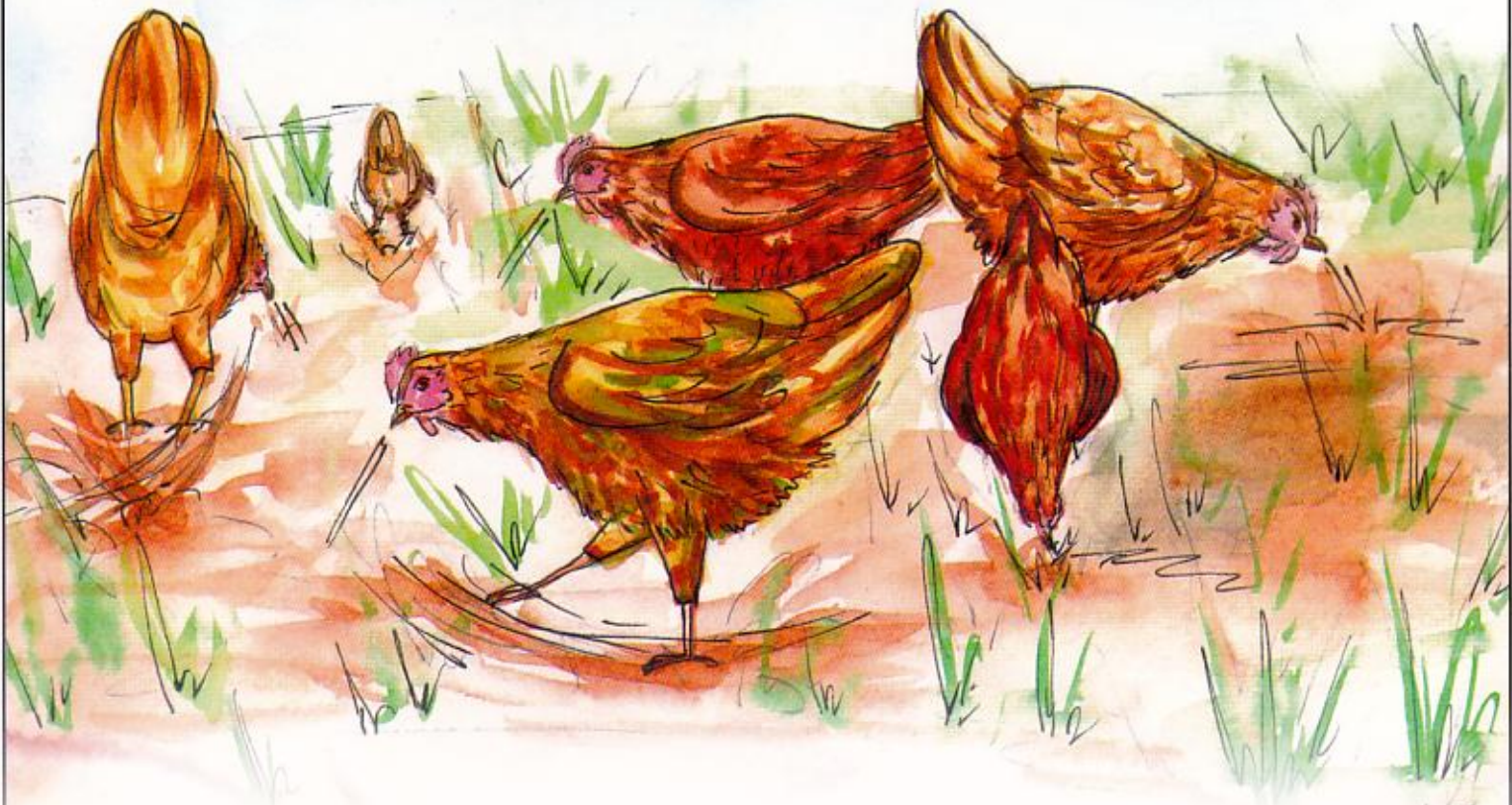
उसके बाद मुर्गी ने अपने रिश्तेदारों से सुई खोजने में मदद मांगी. तब से मुर्गियां अपनी चोंचों और पंजों से मिट्टी को कुरेद-कुरेदकर सुई तलाशने की कोशिश कर रही हैं.

# बरसो राम धड़ाके से

बरसो राम धड़ाके से
बुढ़िया मर गई फाके से
गर्मी पड़ी कड़ाके की
नानी मर गई नाके की

देख नदी में कम पानी
घबराई मछली रानी
पेड़ो के पत्ते सूखे
धोबी के लत्ते सूखे

तब सब मिलकर चिल्लाए
उमड़-घुमड़ बादल आए
ओले बरसे टप-टप-टप!
सब ने खाये गप-गप-गप!

हिंदी :
अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**
*Published by*
**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions
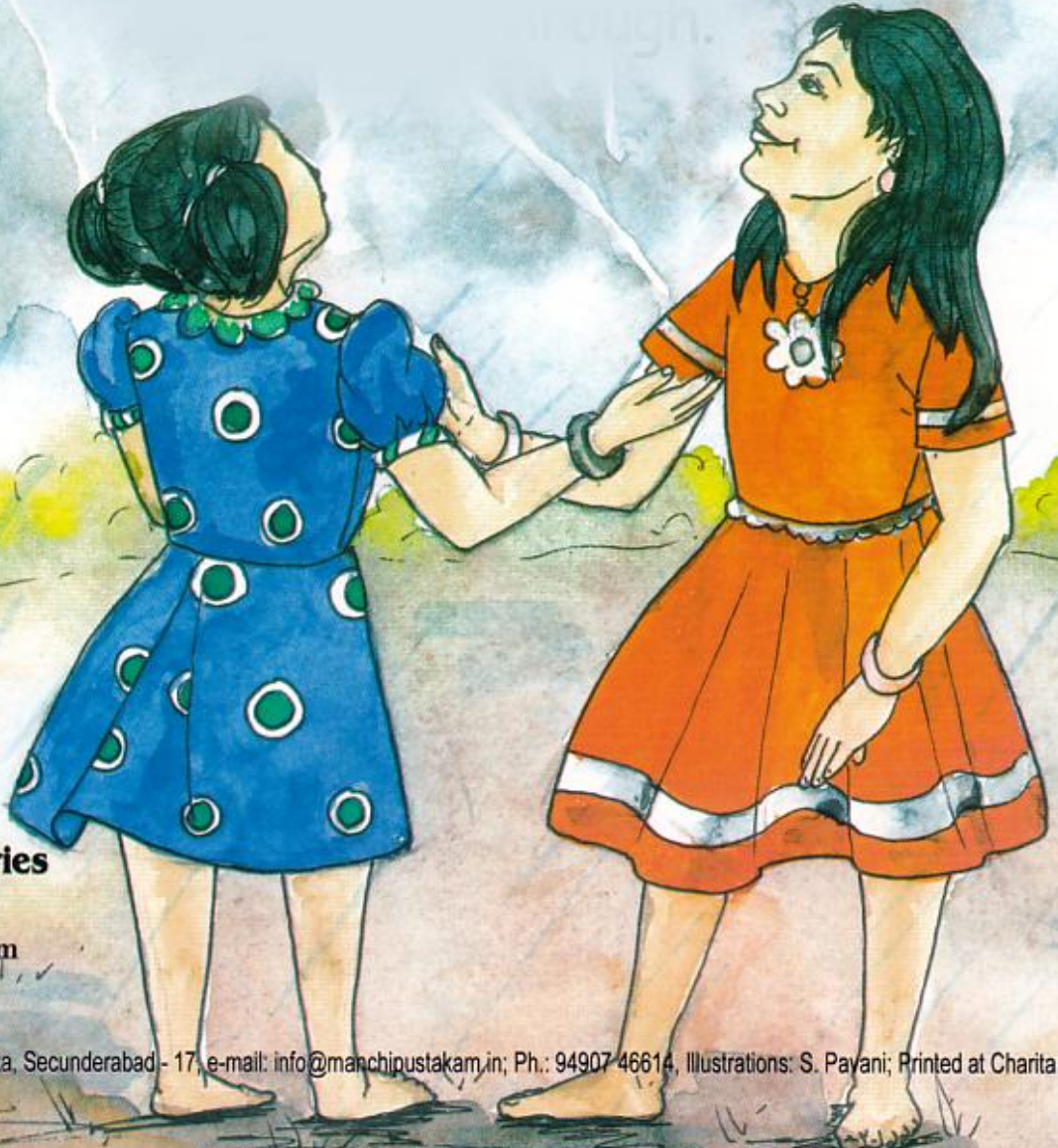
# कंजूस

एक कंजूस आदमी ने अपने सोने को एक संदूक में भरा. फिर उसने ज़मीन में एक गड्ढा खोदा और संदूक को उसमें छिपा दिया. हर रोज़ जब कोई नहीं होता, तो कंजूस संदूक को निकालकर अपने सोने को निहारता था. उसे अपनी धन-दौलत देखकर बड़ी तसल्ली मिलती थी.

एक दिन एक आदमी ने कंजूस को यह करते हुए देखा.
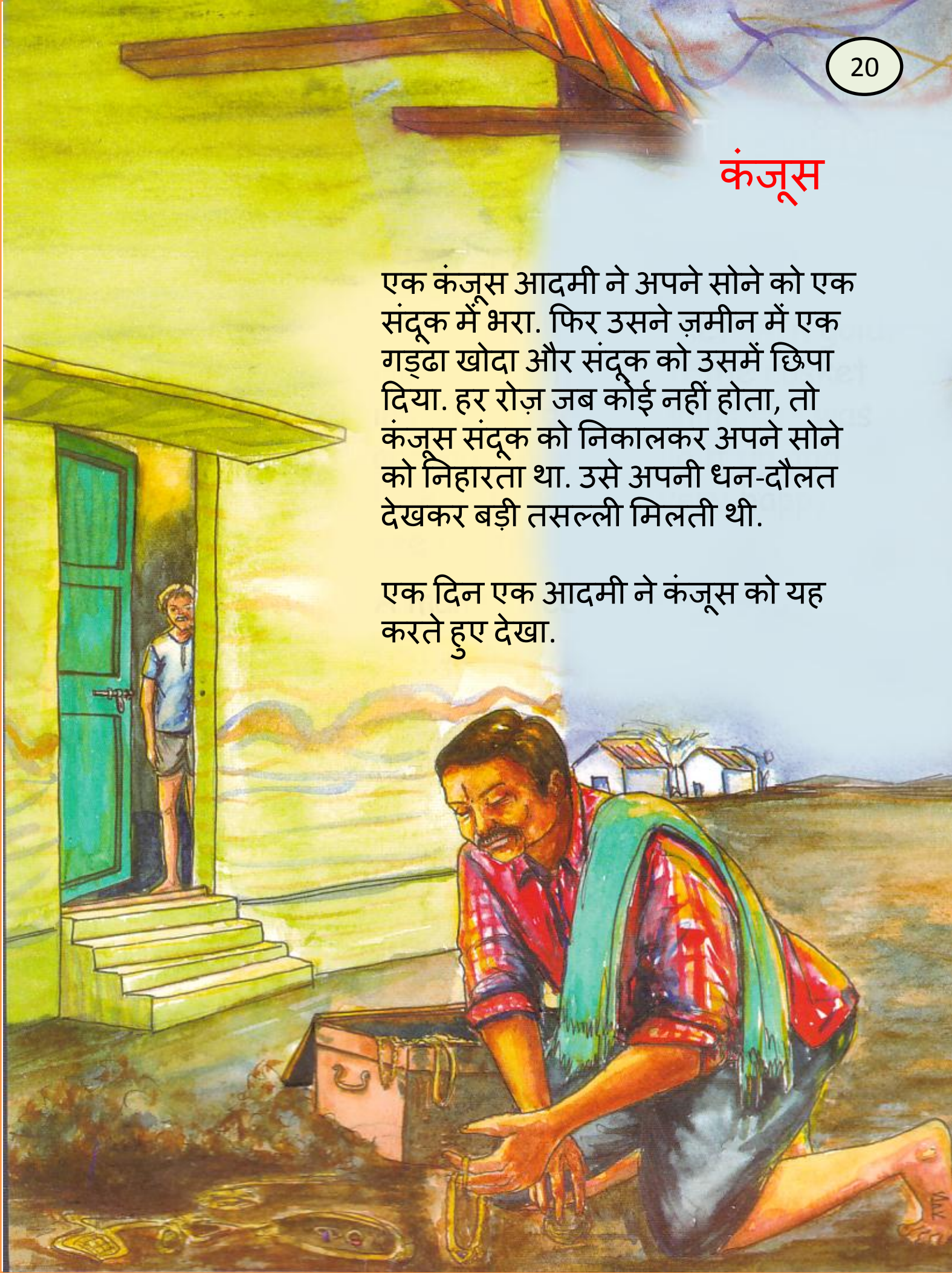
फिर एक रात उस आदमी ने कंजूस का संदूक चुरा लिया. अगले दिन जब कंजूस वापिस आया तो उसे वहां संदूक नहीं मिला.

इतने नुकसान से कंजूस रोने लगा.
"आप चोरी किए गए सोने पर क्यों रो रहे हैं?
आप वैसे भी उसके साथ कुछ नहीं करते.
अब आप गड्ढे को देखकर ही खुश हो लें!
पहले और अब में आपको कोई फर्क नहीं
पड़ेगा?" पड़ोसी ने कहा.

# दलिया

एक अमीर व्यापारी ने दावत दी. मुल्ला नसरुद्दीन को भी उसमें बुलाया गया. वहां सभी मेहमानों को कटोरों में दलिया खाने को दिया गया. पर सब मेहमानों को बहुत छोटे चम्मच दिए गए, सिर्फ व्यापारी के पास एक बड़ा चम्मच था.

हर कौर के बाद व्यापारी कहता, "इतने स्वादिष्ट दलिए के लिए मैं अपनी जान तक न्योछावर करने को तैयार हूँ."

बहुत छोटे चम्मच होने के कारण मेहमान अपने दलिए को बिल्कुल भी नहीं खा पाए.

कुछ देर बाद मुल्ला अपना सब्र खो बैठा. "क्या आप हमें अपना बड़ा चम्मच देंगे. दलिए के लिए हम भी अपनी जान न्योछावर करने को तैयार हैं," उसने कहा.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

A Bagful of Stories
Published by
Manchi Pustakam

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# छिपा हुआ खज़ाना
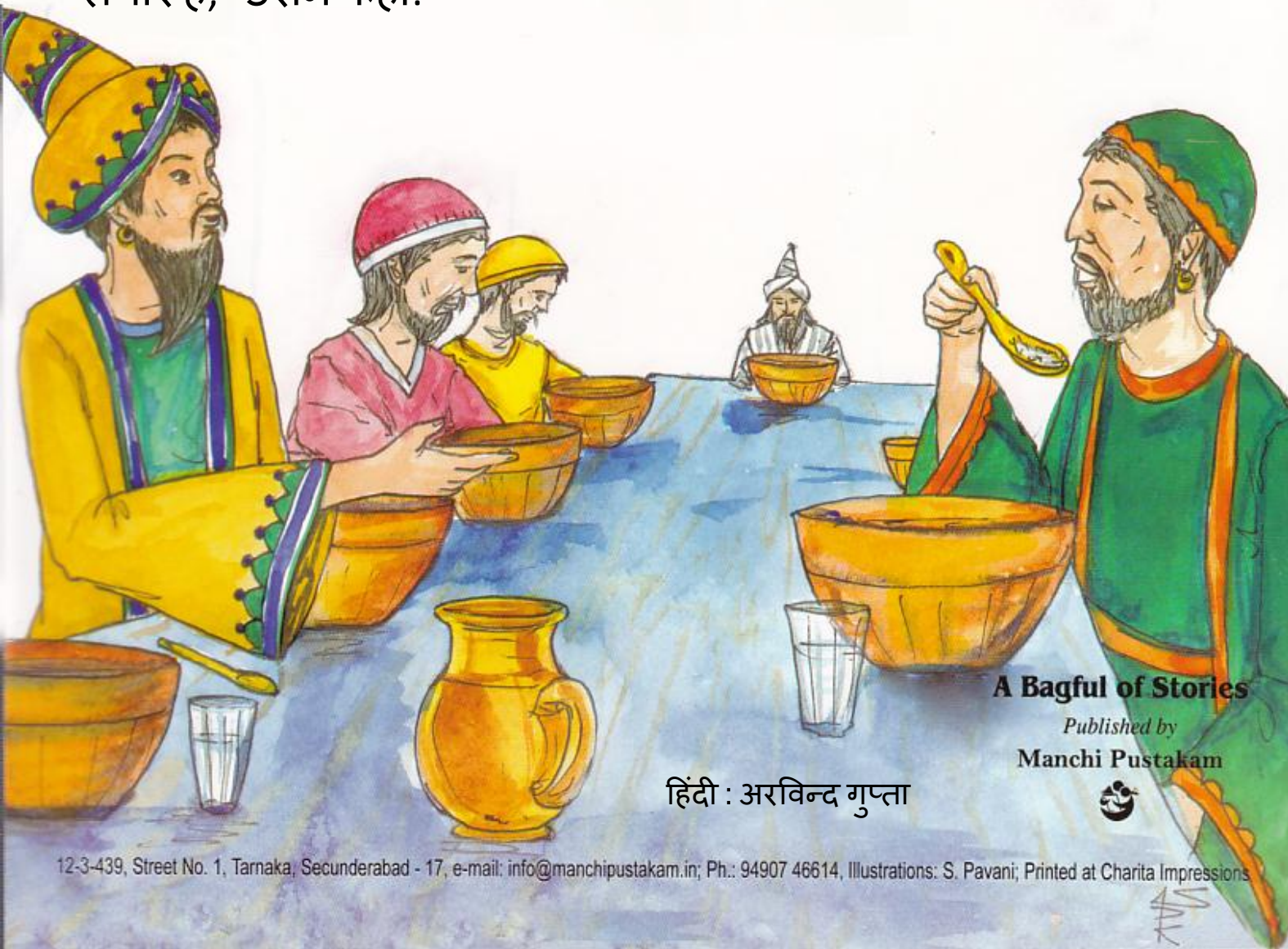


बहुत पुरानी बात है. एक किसान था. उसके तीन बेटे थे. तीनों बेहद आलसी थे.

वे दिन भर सिर्फ खाते और सोते थे.

एक दिन किसान बीमार पड़ गया. उसने तीनों लड़कों को अपनी चारपाई के पास बुलाया. "देखो, मैंने खेत में पैसों से भरा एक संदूक गाढ़ा था. पर अब मुझे वो स्थान याद नहीं जहाँ मैंने उसे छिपाया था," किसान ने कहा.

लड़के अपने पिता पर बहुत नाराज़ हुए. पर धन की खोज में उन्होंने पूरा खेत खोद डाला.

पर बहुत खोजने के बाद भी उन्हें पैसों वाला संदूक नहीं मिला. यह बात उन्होंने अपने पिता को बताई. पिता ने हँसते हुए कहा, "कोई बात नहीं. अगर अभी नहीं तो तुम्हें जल्द ही धन मिल जाएगा."

क्योंकि लड़कों ने खेत खोद डाला था इसलिए उन्होंने उसमें बीज बोने की बात सोची.

कुछ दिनों बाद उन्हें बढ़िया फसल मिली, जिससे उन्होंने खूब पैसा कमाया. फिर किसान ने अपने बेटों से कहा कि वही उनका असली "खज़ाना" था.

# भूत
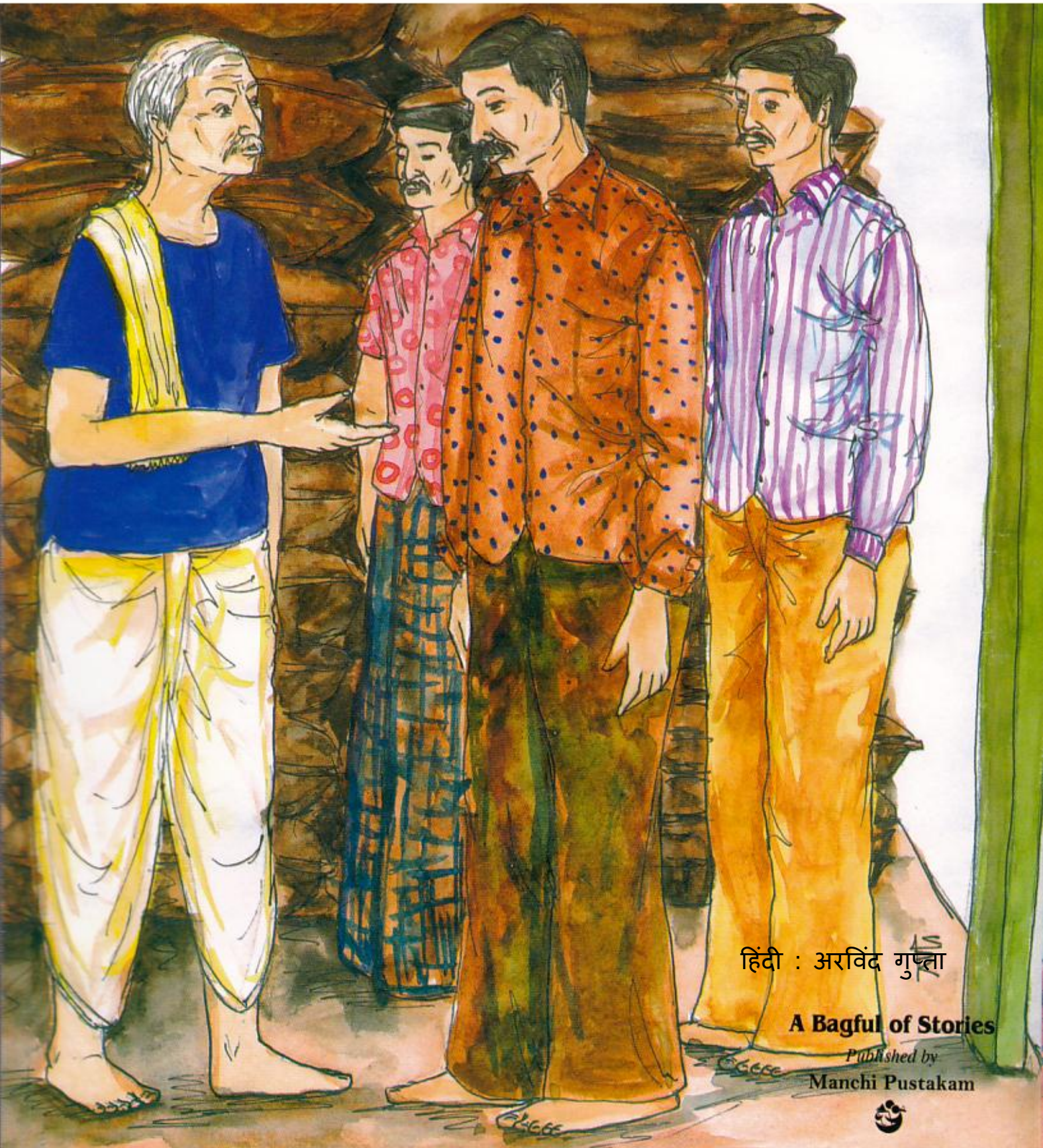


एक आदमी सलाह के लिए मुल्ला नसीरुद्दीन के पास आया.

"आजकल मुझे सपने में अपनी चारपाई के नीचे भूत दिखता है. पर जब मैं उठकर चारपाई के नीचे झांकता हूँ तो मुझे कुछ भी दिखाई नहीं देता है. पर उसके बाद मुझे दुबारा बिल्कुल नींद नहीं आती है," आदमी ने दुखी होते हुए कहा.

"क्या तुमने अपनी समस्या को सुलझाने के लिए कुछ किया?" मुल्ला ने पूछा.

"मैं एक हकीम के पास गया था," आदमी ने कहा.

"हकीम ने क्या कहा?" मुल्ला ने पूछा.

"उसने मेरे इलाज के लिए सौ दीनार मांगे," आदमी ने कहा.

"अरे इतनी छोटी सी समस्या के लिए सौ दीनार? मैं तुम्हारा इलाज सिर्फ पांच दीनार में कर दूंगा!' मुल्ला ने कहा. आदमी ने अपनी जेब से पांच दीनार निकालकर मुल्ला को दिए. "अच्छा, मुझे इलाज बताएं?" उसने पूछा.

मुल्ला ने आदमी की चारपाई के चारों पैर कटवा दिए. "देखो, अब भूत तुम्हारी चारपाई के नीचे बिल्कुल नहीं घुस पाएगा!"

# गोलू के मामा

गोलू के मामा आए
सब देख रहे मुंह बाए
मुंह उनका है गुब्बारा
था किसने उन्हें पुकारा
नारंगी उनको भाए
गोलू के मामा आए.

वे पूरब से हैं आते
गोलू से गप्प लड़ाते
हौले से उसे सुलाकर
फिर पश्चिम को उड़ जाते.

सच बात अगर मैं बोलूं
तो पोल पुरानी खोलूं
सूरज का फटा पजामा
सिलते गोलू ने मामा.

पर जाने क्या जादू है
रहते हैं सब पर छाए
सब देख रहे मुंह बाए
गोलू के मामा आए.

ये बड़े दिनों में आए
झोले में हैं कुछ लाए
हमको तो पता चले तब
जब गोलू हमें खिलाए.

लो दिखा-दिखा नारंगी
बन जाते एक बताशा
यूं सबको देते झांसा
करते ये खूब तमाशा.

हर पंद्रह दिन में कैसे
आ जाते बिना बुलाए
मैं देख रहा मुंह बाए
गोलू के मामा आए.

*रमेशचंद्र शाह*

हिंदी : अरविंद गुप्ता

**A Bagful of Stories**
*Published by*
**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# ड्रम की मौत

ताताचारी और
रामलिंगाड़ू पड़ोसी थे.
ताताचारी बहुत कंजूस
था और लालची भी.

एक दिन रामलिंगाड़ू
को एक ड्रम की
ज़रुरत थी. वो ड्रम
मांगने ताताचारी
के घर गया.
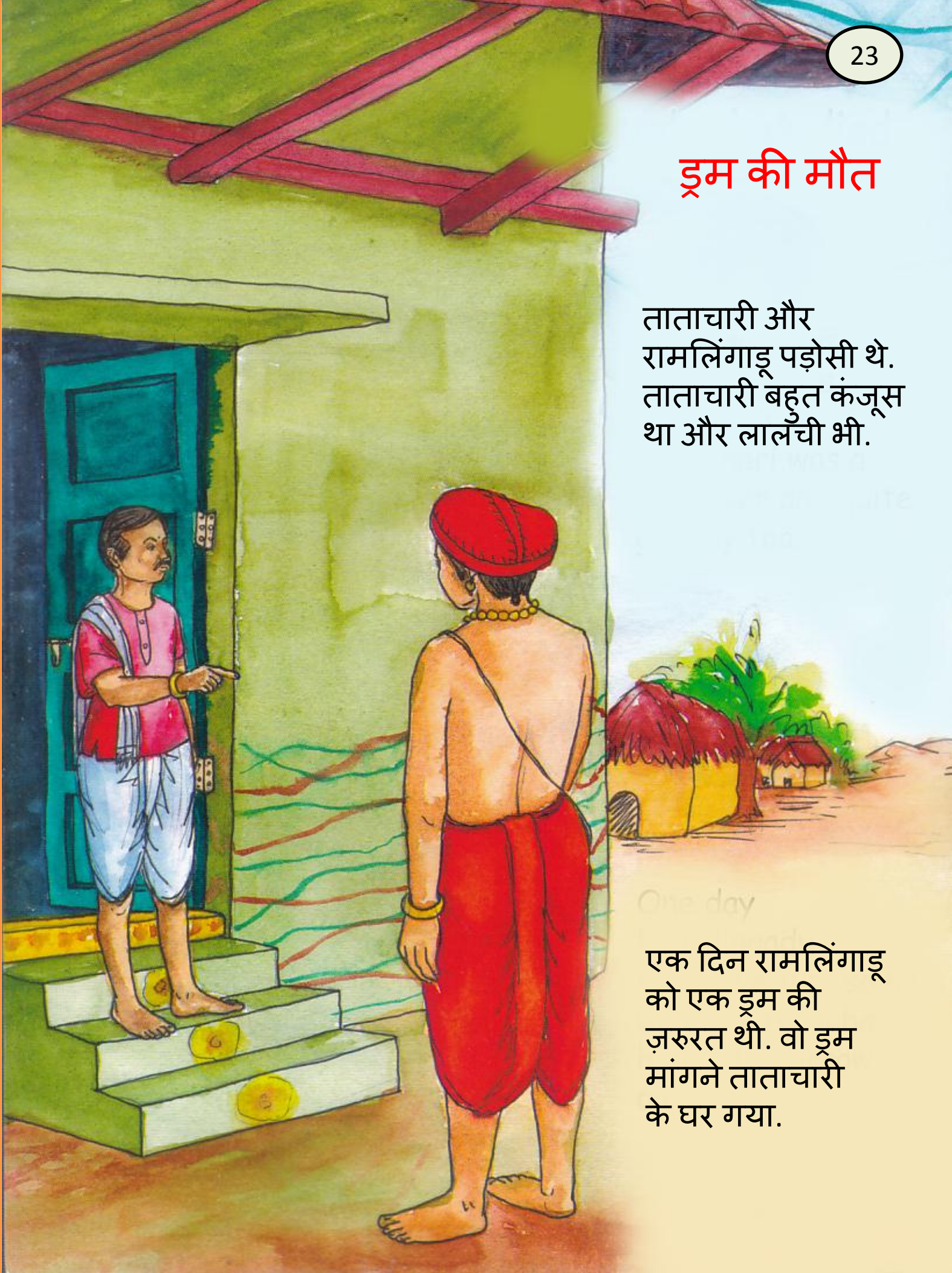
"ड्रम का तुम्हें दो रूपए रोज़ के हिसाब से किराया देना होगा. क्या तुम्हें वो मंज़ूर है?" ताताचारी ने पूछा. गरीब रामलिंगाडू के पास हामी भरने के अलावा और कोई चारा नहीं था.

चार दिनों के बाद रामलिंगाडू ने ड्रम वापिस कर दिया. वो ड्रम के साथ में एक लोटा भी लाया. "तुम्हारे ड्रम ने इस लोटे को जन्म दिया है. कृपा उसे भी रख लो," उसने कहा और ताताचारी को लोटा भी थमा दिया.

ताताचारी ने ख़ुशी-ख़ुशी लोटे को स्वीकार किया और बिना एक शब्द कहे उसे अपने घर के अंदर ले गया.
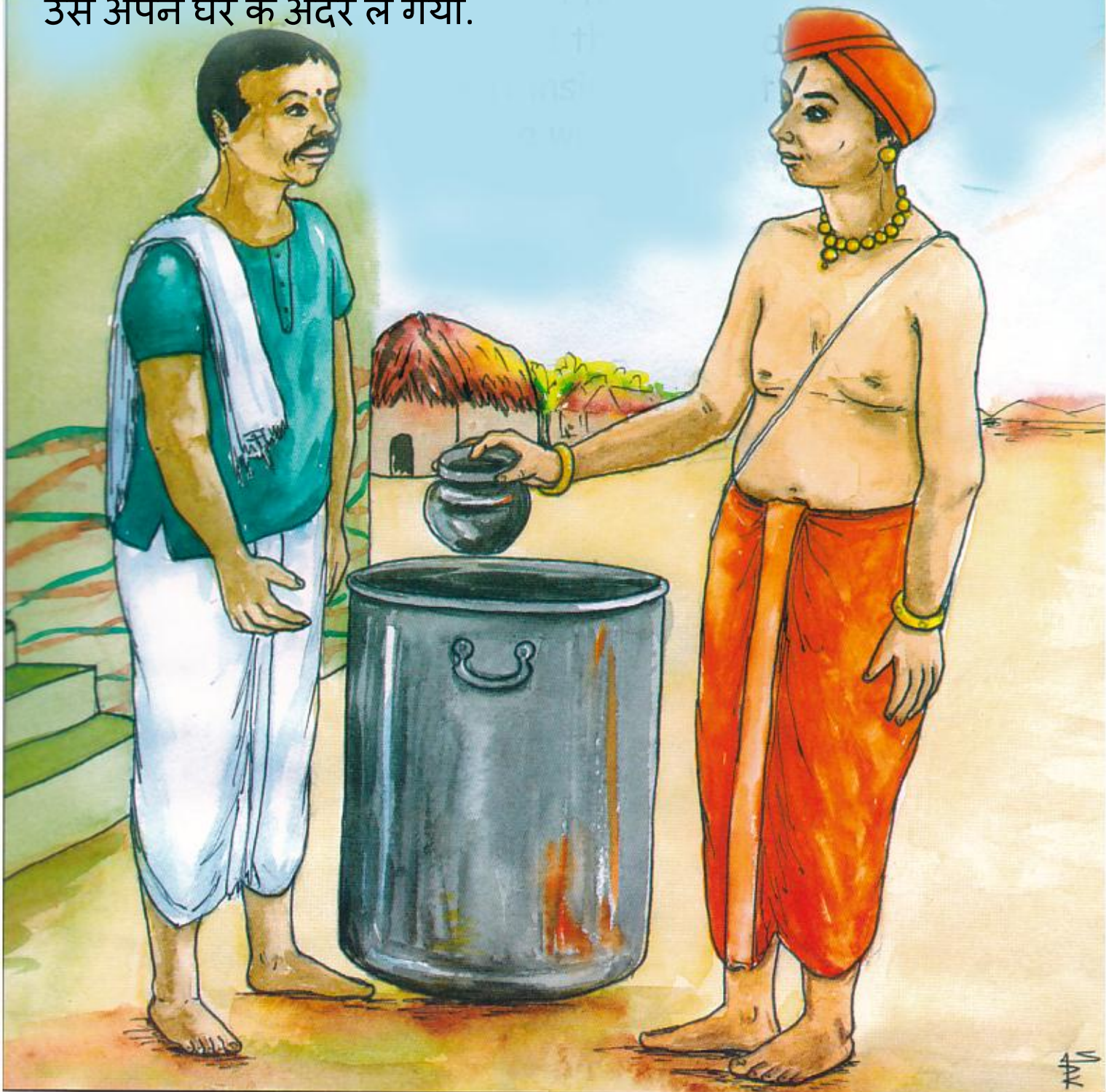
कुछ दिनों के बाद
रामलिंगाडू ने उसी ड्रम
को एक हफ्ते के लिए
फिर उधार लिया.

एक हफ्ते के बाद रामलिंगाडू अपने पड़ोसी ताताचारी के पास खाली हाथ गया. "ताताचारी! तुम्हारे ड्रम की मृत्यु हो गई," रामलिंगाडू ने बड़ी दुखी आवाज़ में कहा.

"भला, ड्रम की मृत्यु कैसे हो सकती है? यह तो सरासर बेईमानी है," ताताचारी गुस्से में चिल्लाया.
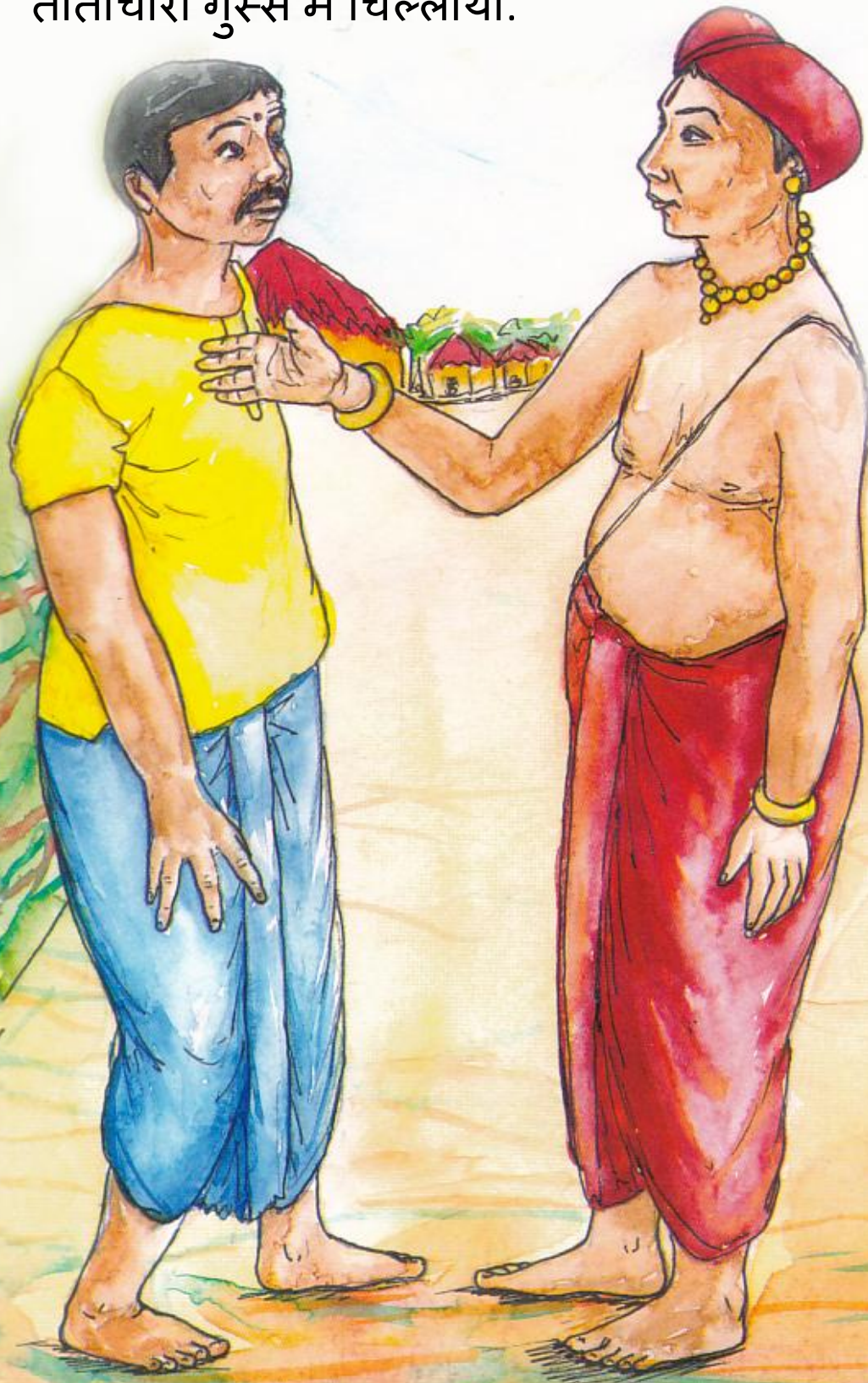
"अगर ड्रम एक लोटे को जन्म दे सकता है, तो फिर वो मर क्यों नहीं सकता है?" रामलिंगाडू ने पूछा. ताताचारी उसके प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दे सका.

हिंदी : अरविंद गुप्ता

*Published by*
**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# हाथी और कुत्ता



पुराने ज़माने में एक राजा था. उसका एक हाथी था. एक महावत उस हाथी की देखभाल करता था.

महावत का एक पालतू कुत्ता था. कुत्ता अपने मालिक के साथ-साथ हर जगह जाता था.
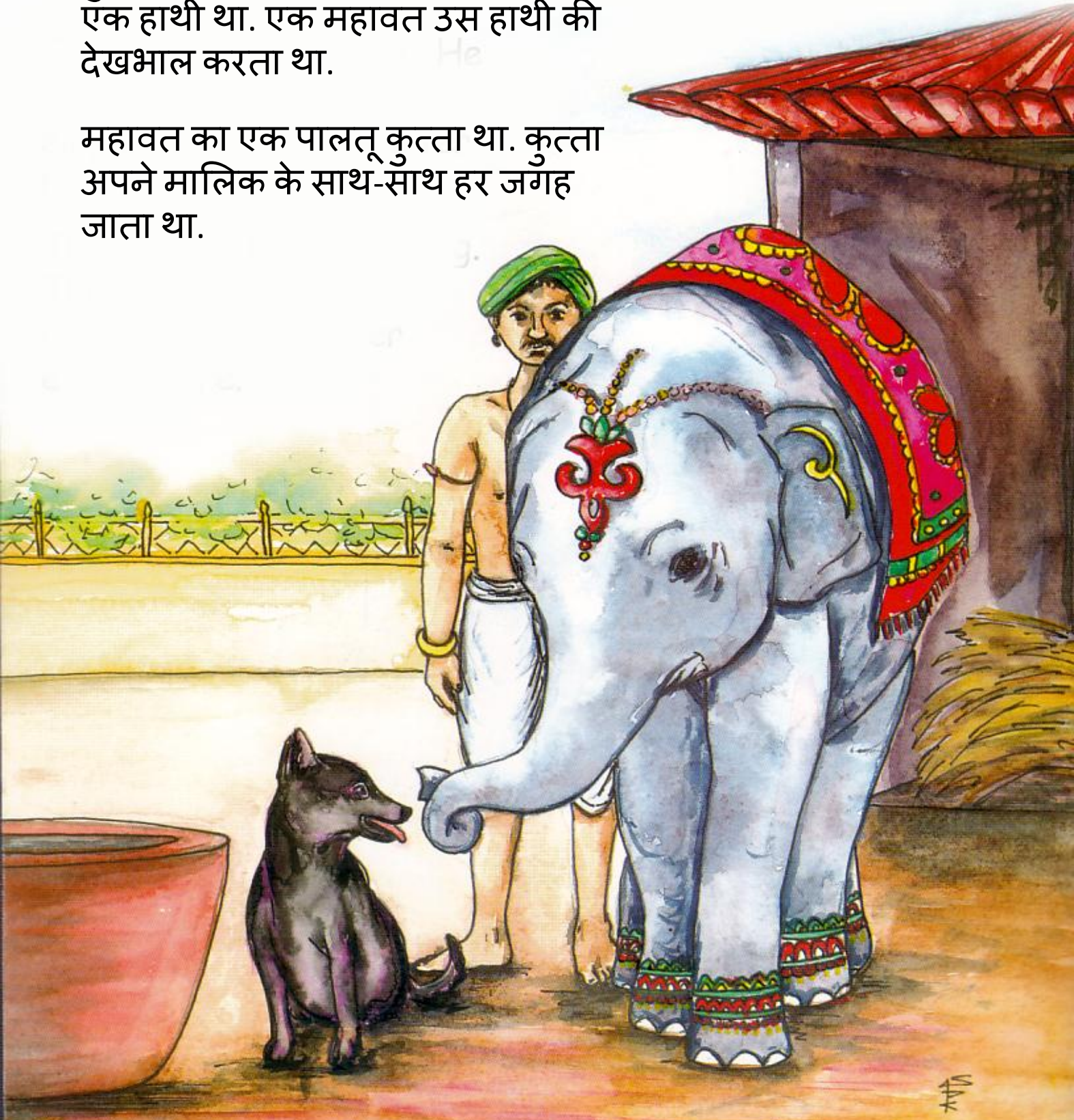
हाथी और कुत्ता एक साथ खाते और खेलते थे. उन दोनों में पक्की दोस्ती थी. हाथी, रोज़ाना कुत्ते के आने का इंतज़ार करता था.

एक बार महावत को पैसे की सख्त ज़रुरत पड़ी. उसने अपना कुत्ता एक रईस आदमी को बेंच दिया. उससे कुत्ते को बहुत दुःख हुआ, उसका दिल टूट गया. पर उसे अपने मालिक का आदेश मानना ही पड़ा.

हाथी को कुत्ते की बहुत याद आई, और उसने खाना-पानी सबकुछ छोड़ दिया. हाथी ने यह क्यों किया यह किसी को समझ में नहीं आया.

जानवरों के डॉक्टर ने हाथी का मुआयना किया. "हाथी को वैसे तो कोई बीमारी नहीं है. लगता है उसे किसी की बहुत याद सता रही है," डॉक्टर ने कहा.
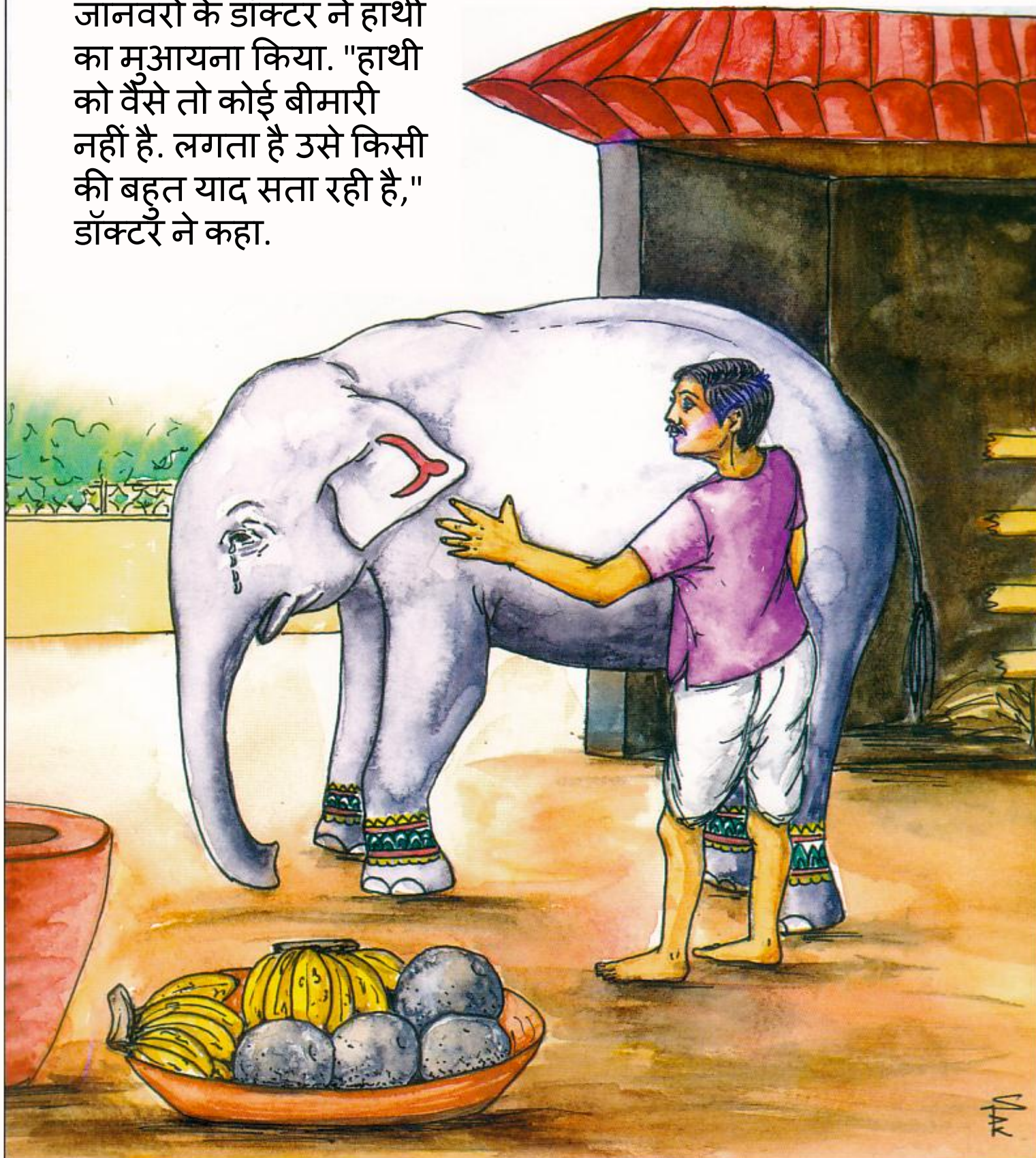
"हाथी के साथ खेलना वाला वो कुत्ता कहाँ है? उसे तुरंत वापिस लाओ," राजा ने आदेश दिया.

जब रईस आदमी ने राजा का आदेश सुना तो उसने कुत्ते को तुरंत रिहा कर दिया. कुत्ता, दौड़ता हुआ अपने दोस्त हाथी के पास आया.

दोनों मित्र एक-दूसरे को देखकर बेहद खुश हुए और ख़ुशी से नाचने लगे.

हिंदी : अरविंद गुप्ता

**A Bagful of Stories**

*Published by*

Manchi Pustakam

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# कुतरो और लुढ़को....

कद्दू की एक बेल छत पर चढ़ गई.

बेल मज़बूती और तेज़ी से बढ़ी और जल्द ही पूरी छत पर छा गई. जल्द ही छत कद्दुओं से लद गई.

कबेलू वाली छत, एक चूहे का घर थी. उस घर में चूहा मज़े से अपने पूरे परिवार के साथ रहता था.

चूहे के घर के चारों ओर हरी घास उगी थी.

एक नौजवान बकरी एक दिन वहां पर घास खाने आई. और तभी चूहे ने के एक कद्दू की डंडी कुतरी.

डंडी कटने के बाद कद्दू छत से नीचे लुढ़का और सीधे बकरी के सिर पर "धम्म" से जाकर गिरा. उसके बाद बकरी ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी.

तब से 'कुतरो, लुढ़का और धम्म' एक कहावत बन गई है.

# गधा और शेर

एक दिन शेर, गधे को अपने साथ शिकार करने ले गया.

"अरे गधे, तुम्हारी आवाज़ कितनी ज़ोरदार और बुलंद है. तुम यहाँ पर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना. तुम्हारी आवाज़ सुनकर जंगल के जानवर इधर-उधर दौड़ेंगे, और तब मैं उनका शिकार करूंगा," शेर ने गधे से कहा.

गधे ने बिल्कुल वैसा ही किया.
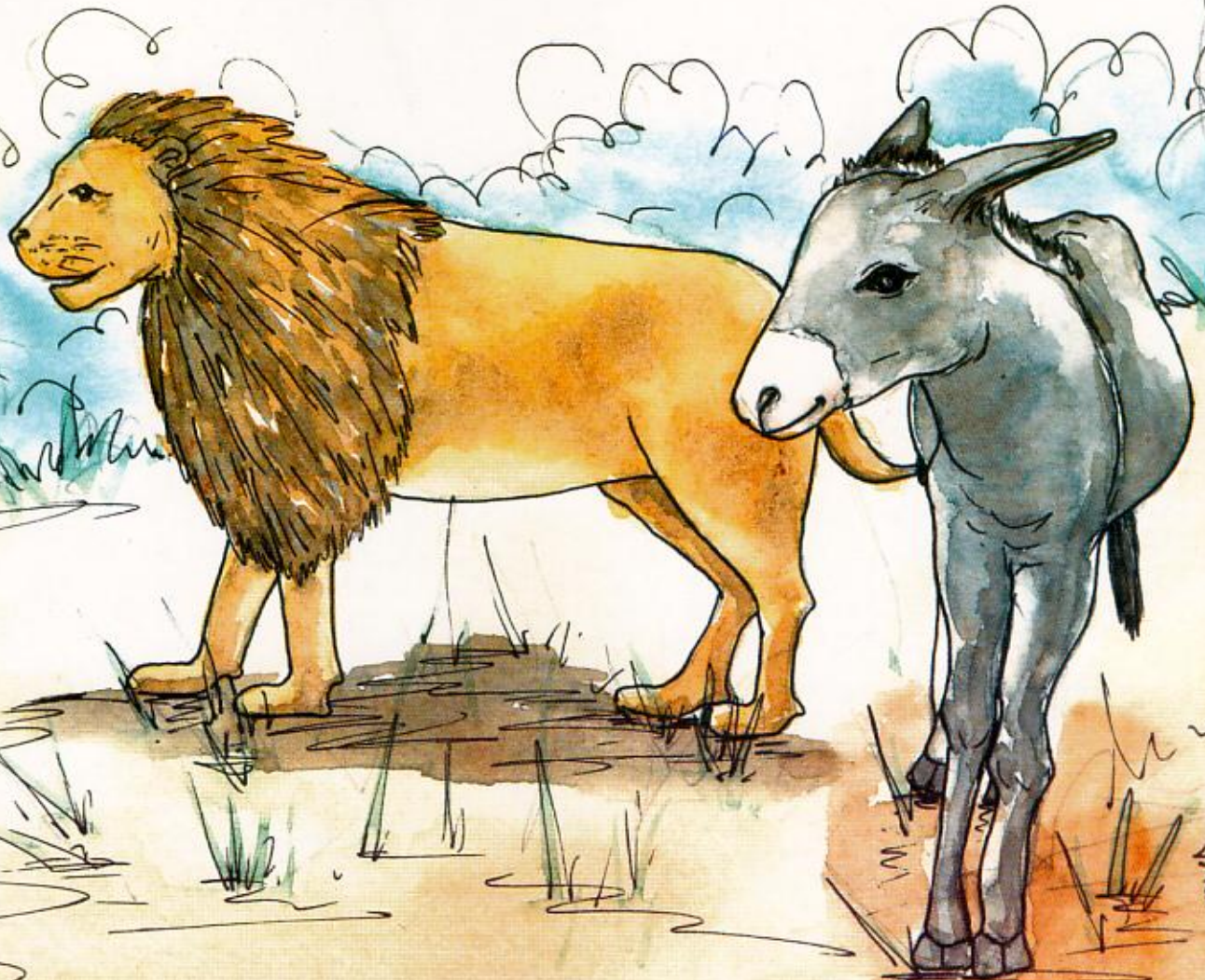
गधे की आवाज़ सुनकर जानवर परेशान होकर जंगल में इधर-उधर दौड़ने लगे.

शेर ने उन जानवरों का खूब शिकार किया. "तुम कितना बढ़िया चिल्लाए," शेर ने गधे को शाबाशी देते हुए कहा.

तब से सभी गधे लोगों की प्रशंसा पाने के लिए हमेशा ज़ोर-ज़ोर से रेंकते हैं.

हिंदी : अरविंद गुप्ता

A Bagful of Stories
Published by
Manchi Pustakam

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions
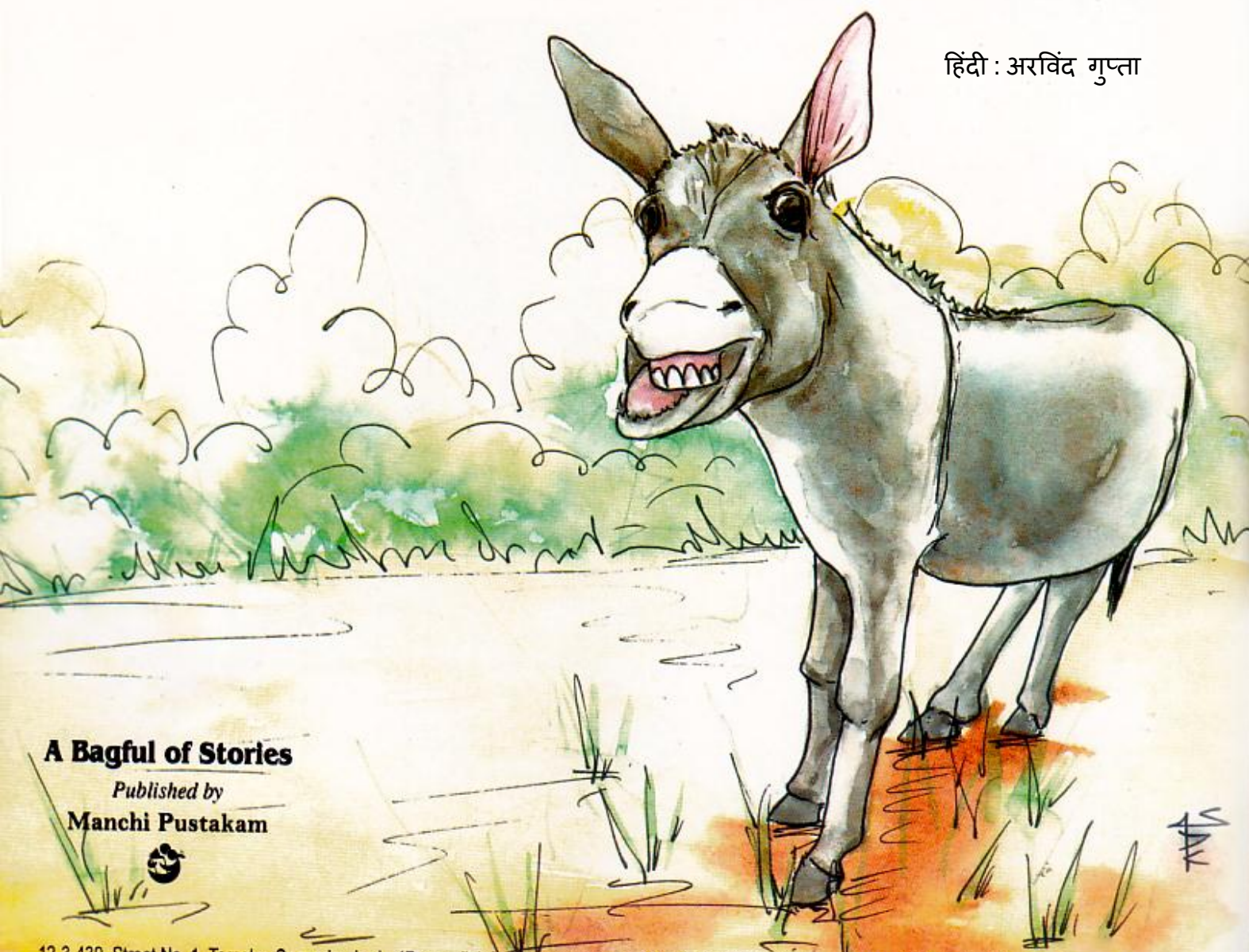
# वो मक्खी जो अपना नाम भूल गई

त्यौहार वाले दिन मक्खी अपने घर के फर्श को गोबर से लीपने लगी. वो इस काम में इतनी तल्लीन हो गई, कि वो अपना नाम तक भूल गई.

"मेरा नाम क्या है?" उसने अचरज में सोचा. फिर वो उड़कर सबसे अपना नाम पूछने गई.

उसे पेड़ के नीचे बैठीं पेदारासी पेडम्मा दिखाई दीं. मक्खी ने उनके पास जाकर पूछा, "पेदारासी पेडम्मा, क्या आपको मेरा नाम पता है?"

"मुझे तो तुम्हारा नाम नहीं पता, पर तुम मेरे बेटे से अपना नाम पूछ सकती हो," पेडम्मा ने कहा. फिर मक्खी उड़कर पेडम्मा के बेटे के पास गई.

"पेदारासी पेडम्मा, पेडम्मा के बेटे, क्या तुम्हें मेरा नाम पता है?" मक्खी ने पूछा.

"मुझे तुम्हारा नाम तो नहीं पता, पर तुम मेरी कुल्हाड़ी से अपना नाम ज़रूर पूछ सकती हो," पेडम्मा के बेटे ने कहा
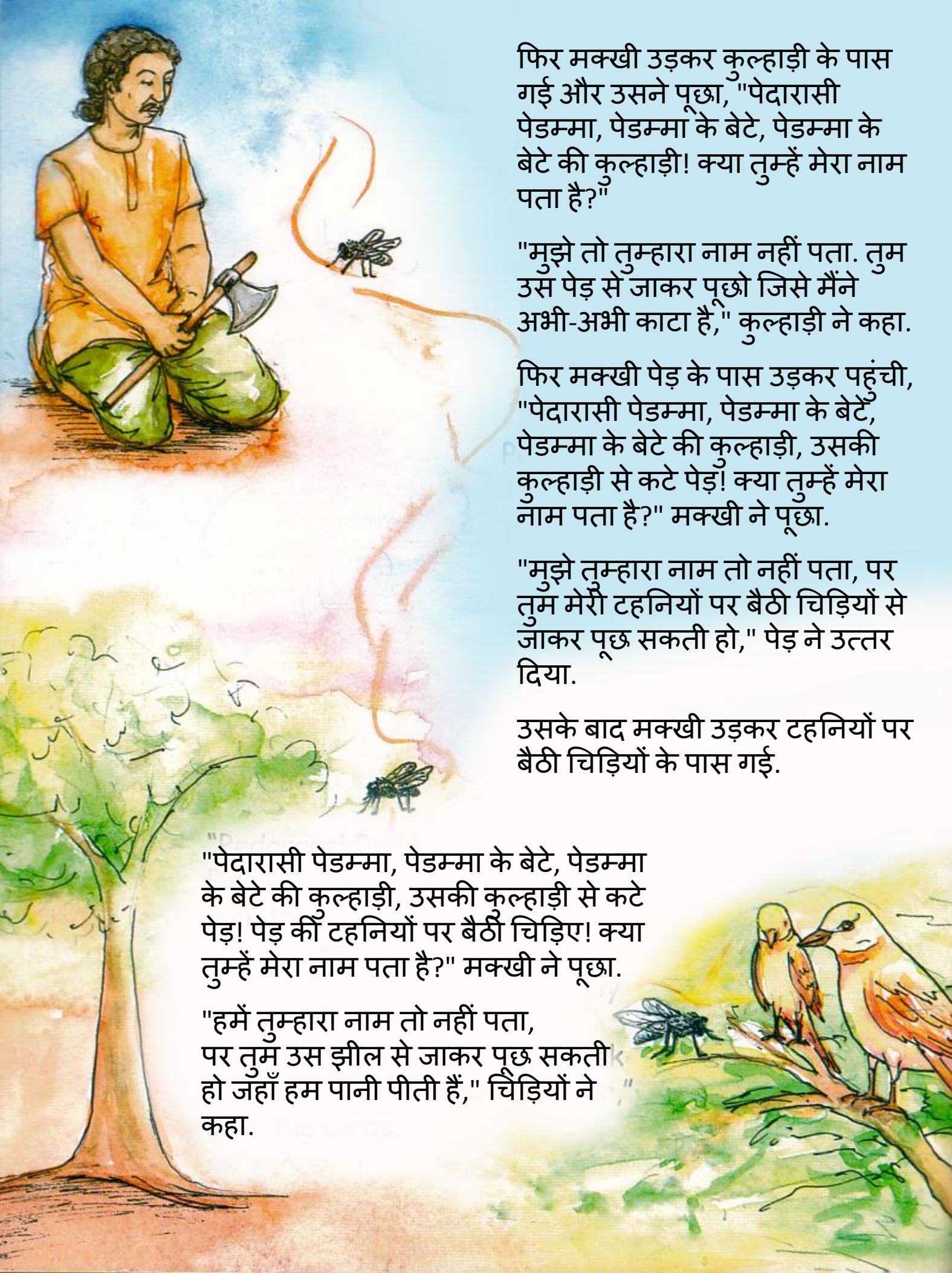
फिर मक्खी उड़कर कुल्हाड़ी के पास गई और उसने पूछा, "पेदारासी पेडम्मा, पेडम्मा के बेटे, पेडम्मा के बेटे की कुल्हाड़ी! क्या तुम्हें मेरा नाम पता है?"

"मुझे तो तुम्हारा नाम नहीं पता. तुम उस पेड़ से जाकर पूछो जिसे मैंने अभी-अभी काटा है," कुल्हाड़ी ने कहा.

फिर मक्खी पेड़ के पास उड़कर पहुंची, "पेदारासी पेडम्मा, पेडम्मा के बेटे, पेडम्मा के बेटे की कुल्हाड़ी, उसकी कुल्हाड़ी से कटे पेड़! क्या तुम्हें मेरा नाम पता है?" मक्खी ने पूछा.

"मुझे तुम्हारा नाम तो नहीं पता, पर तुम मेरी टहनियों पर बैठी चिड़ियों से जाकर पूछ सकती हो," पेड़ ने उत्तर दिया.

उसके बाद मक्खी उड़कर टहनियों पर बैठी चिड़ियों के पास गई.

"पेदारासी पेडम्मा, पेडम्मा के बेटे, पेडम्मा के बेटे की कुल्हाड़ी, उसकी कुल्हाड़ी से कटे पेड़! पेड़ की टहनियों पर बैठी चिड़िए! क्या तुम्हें मेरा नाम पता है?" मक्खी ने पूछा.

"हमें तुम्हारा नाम तो नहीं पता, पर तुम उस झील से जाकर पूछ सकती हो जहाँ हम पानी पीती हैं," चिड़ियों ने कहा.

फिर मक्खी उड़कर झील पर गई और उसने पूछा, "पेदारासी पेडम्मा, पेडम्मा के बेटे, पेडम्मा के बेटे की कुल्हाड़ी, उसकी कुल्हाड़ी से कटे पेड़! पेड़ की टहनियों पर बैठी चिड़िए! वो झील जिसका पानी चिड़िये पीती हैं! क्या तुम्हें मेरा नाम पता है?" मक्खी ने पूछा.

"मुझे तुम्हारा नाम तो नहीं पता, पर तुम उस मछली से जाकर ज़रूर पूछ सकती हो जो मेरे पानी में तैरती है," झील ने कहा.

"पेदारासी पेडम्मा, पेडम्मा के बेटे, पेडम्मा के बेटे की कुल्हाड़ी, उसकी कुल्हाड़ी से कटे पेड़! पेड़ की टहनियों पर बैठी चिड़िए! वो झील जिसका पानी चिड़िए पीती हैं! पानी में तैरती मछली! क्या तुम्हें मेरा नाम पता है?" मक्खी ने पूछा.

"मुझे तुम्हारा नाम तो नहीं पता, पर तुम उस लड़के से जाकर पूछो तो मुझे पकड़ने की कोशिश करता है," मछली ने कहा.

"पेदारासी पेडम्मा, पेडम्मा के बेटे, पेडम्मा के बेटे की कुल्हाड़ी, उसकी कुल्हाड़ी से कटे पेड़! पेड़ की टहनियों पर बैठी चिड़िए! वो झील जिसका पानी चिड़िए पीती हैं! पानी में तैरती मछली! मछली को पकड़ने की कोशिश करने वाला लड़के! क्या तुम्हें मेरा नाम पता है?" मक्खी ने पूछा.

"तुम्हारा नाम तो मुझे नहीं पता. पर मैं जिस घोड़े पर सवारी करता हूँ, तुम उससे जाकर ज़रूर पूछ सकती हो," लड़के ने कहा.
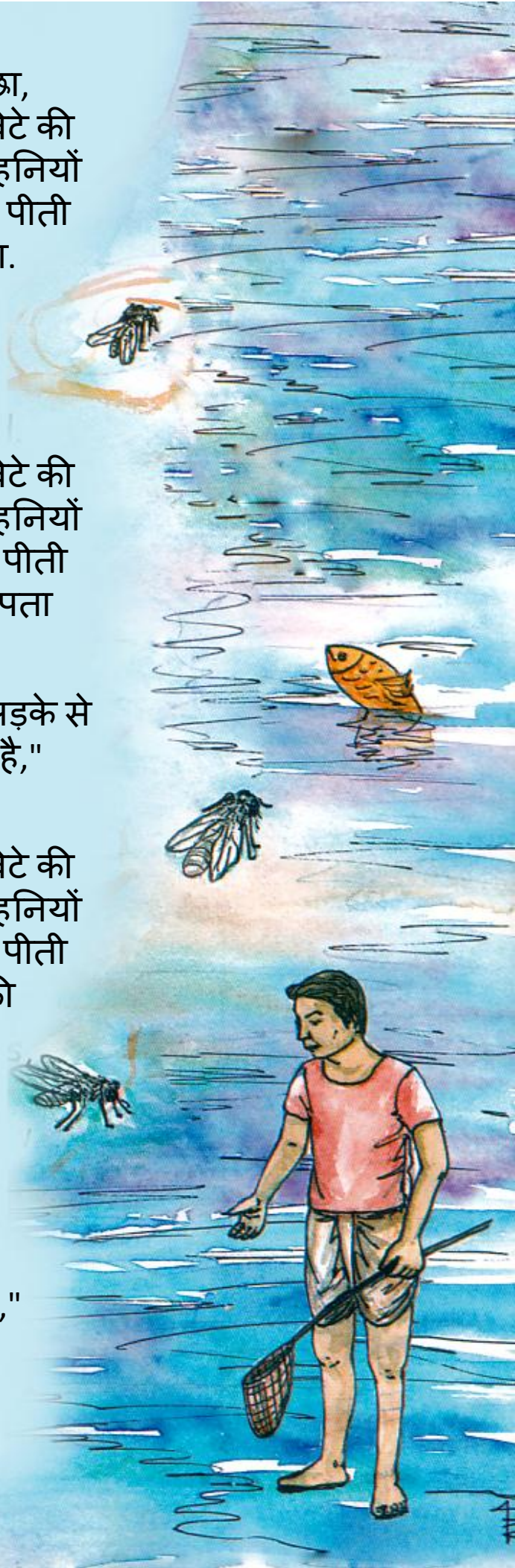
"पेदारासी पेडम्मा, पेडम्मा के बेटे, पेडम्मा के बेटे की कुल्हाड़ी, उसकी कुल्हाड़ी से कटे पेड़! पेड़ की टहनियों पर बैठी चिड़िए! वो झील जिसका पानी चिड़िए पीती हैं! पानी में तैरती मछली! मछली को पकड़ने की कोशिश करने वाला लड़का! उस लड़के के घोड़े! क्या तुम्हें मेरा नाम पता है?" मक्खी ने पूछा.

"मुझे नहीं पता. तुम मेरे बच्चे से पूछ सकती हो जो अभी भी मेरे पेट में ही है," घोड़े ने जवाब दिया.

"पेदारासी पेडम्मा, पेडम्मा के बेटे, पेडम्मा के बेटे की कुल्हाड़ी, उसकी कुल्हाड़ी से कटे पेड़! पेड़ की टहनियों पर बैठी चिड़िए! वो झील जिसका पानी चिड़िए पीती हैं! पानी में तैरती मछली! मछली को पकड़ने की कोशिश करने वाला लड़का! उस लड़के के घोड़े! घोड़े के पेट में छोटे बच्चे! क्या तुम्हें मेरा नाम पता है?" मक्खी ने पूछा.

घोड़े के छोटे बच्चे ने तुतलाते हुए कहा, "तुम्हारा नाम! तुम्हारा नाम है म....क्.....खी!"

यह सुनकर मक्खी चिल्लाई, "सही! मेरा नाम मक्खी ही है!"

उसके बाद मक्खी ख़ुशी-ख़ुशी उड़कर अपने घर वापिस चली गई

हिंदी : अरविंद गुप्ता

**A Bagful of Stories**
*Published by*
Manchi Pustakam

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# प्रकृति के अचरज

गर्मी का मौसम था और दोपहर का वक्त था.

एक किसान बादाम के पेड़ के नीचे आराम कर रहा था. उसके बिल्कुल सामने एक कद्दू की बेल थी. उसे बेल पर लगे बड़े-बड़े कद्दू दिखाई दे रहे थे. उसे पेड़ से लटके छोटे-छोटे बादाम भी दिख रहे थे.
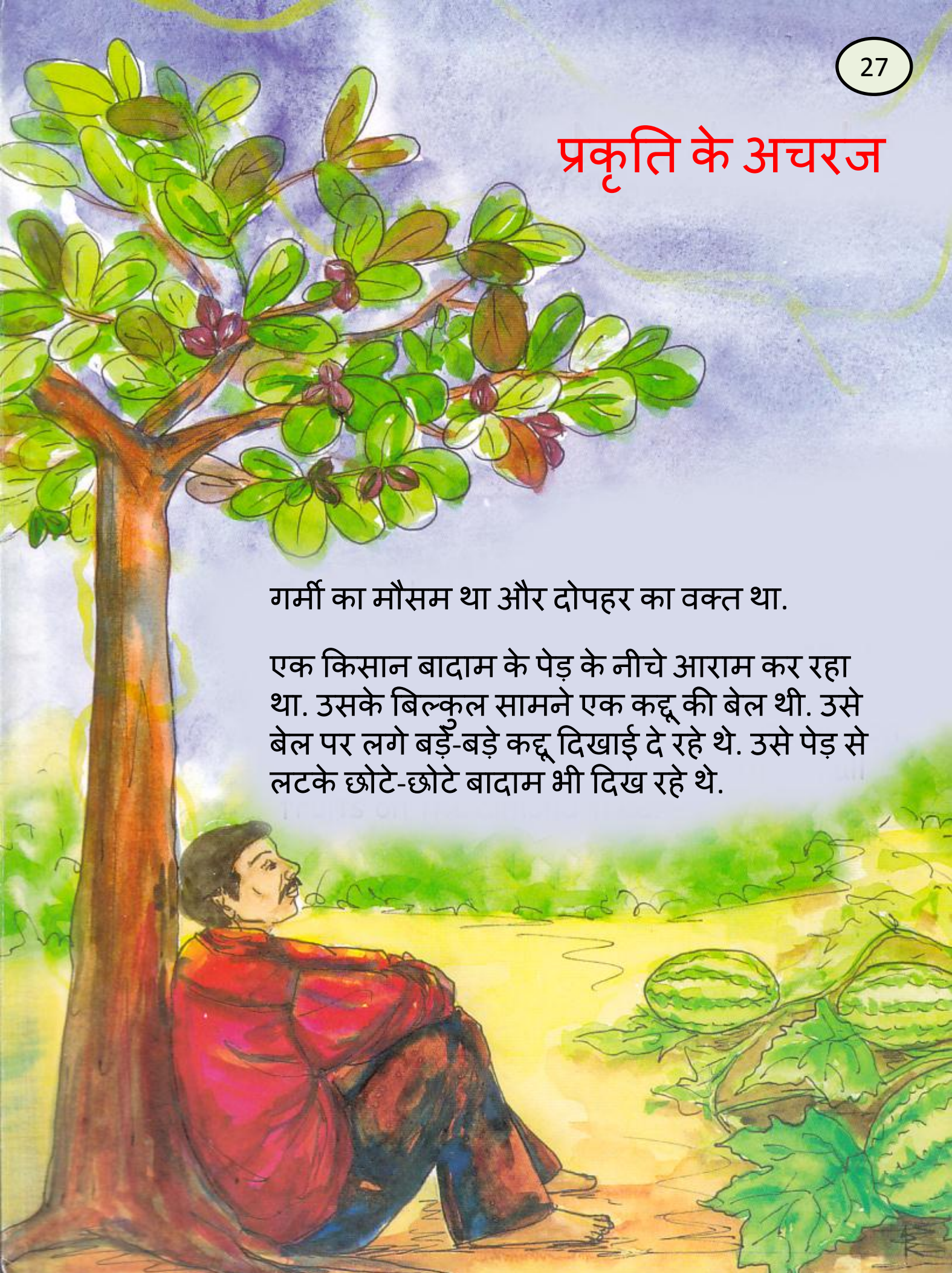
"एक पतली सी बेल में इतने बड़े-बड़े फल हैं, और इतने बड़े पेड़ में इतने छोटे-छोटे फल!" किसान बड़े अचरज में सोचने लगा.

तभी पेड़ से एक बादाम किसान के सिर पर जाकर गिरा.

वो एकदम भौचक्का रह गया.

"अगर बादाम के फल, कद्दू जितने बड़े होते तो मुझे कितनी ज़्यादा चोट लगती? सचमुच प्रकृति तमाम अचरजों से भरी है!" किसान ने ख़ुशी-ख़ुशी सोचा.

करके देखो

मुल्ला नसरुद्दीन मरम्मत करने के लिए अपने घर की छत पर चढ़े. पर अचानक वो फिसले, नीचे गिरे और बेहोश हो गए.

कुछ देर में वहां तमाम पड़ोसी इकट्ठे हो गए.

"मुल्ला! क्या हुआ?" पहले पड़ोसी ने पूछा. "क्या आपको चक्कर आया," दूसरे ने पूछा. "अब आपको कैसा लग रहा है?" तीसरे ने पूछा.

"मुझ पर अपने सवालों के तीर मत चलाओ. खुद छत पर चढ़ो और मेरे जैसे गिरकर देखो. फिर तुम्हें अपने सभी प्रश्नों के उत्तर मिल जाएंगे," मुल्ला ने जवाब दिया.

हिंदी : अरविंद गुप्ता

A Bagful of Stories
Published by
Manchi Pustakam

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions
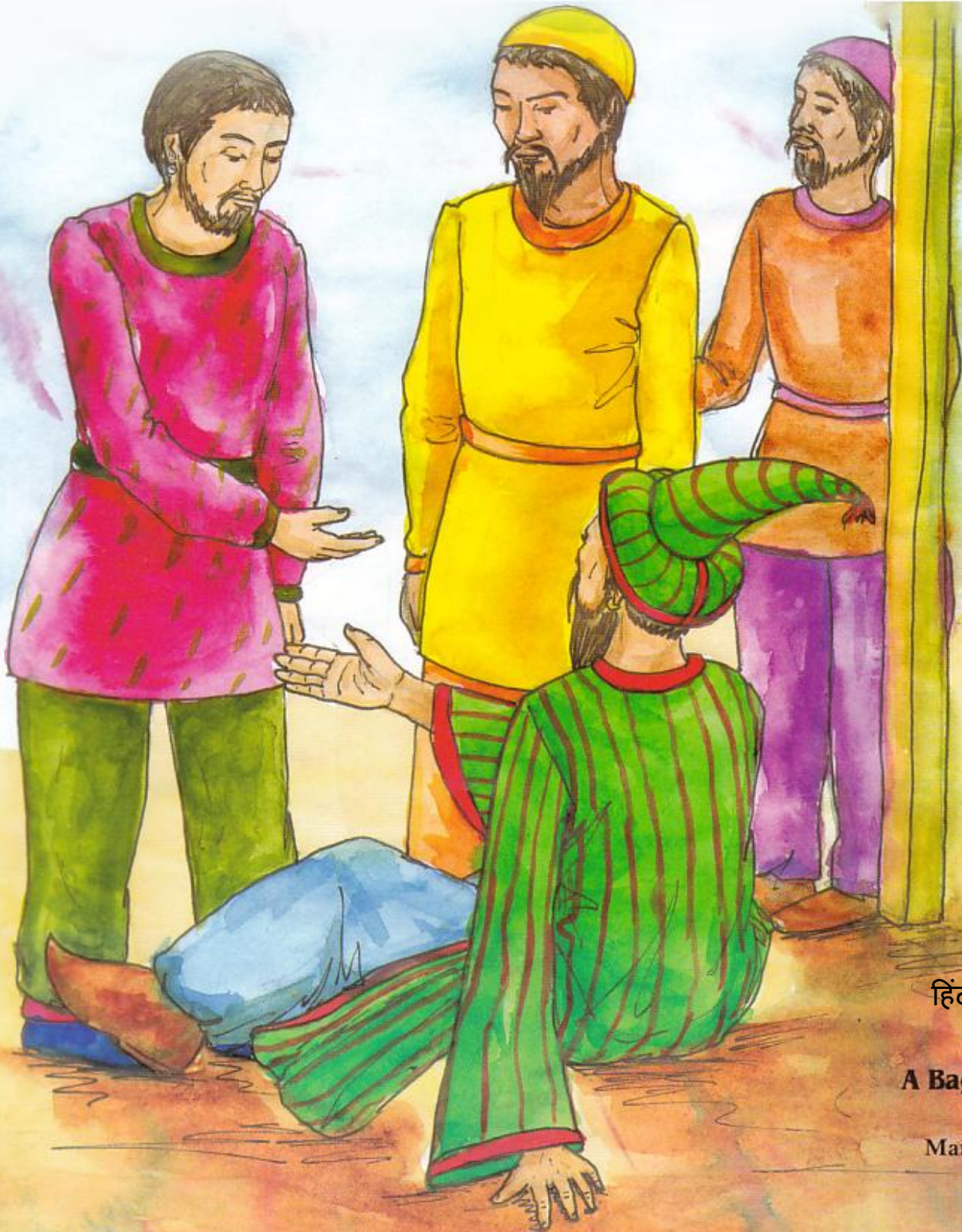
# मेरा परिवार

मेरा नाम कल्पना है.
मैं सात साल की हूँ.
मैं स्कूल जाती हूँ.
मैं दूसरी कक्षा में पढ़ती हूँ.

मुझे गीत गाना पसंद हैं.
मैं कई खेल खेलती हूँ.
मुझे रंगों से चित्रकारी
करना बहुत पसंद है.

विनोद मेरा छोटा भाई है.

वो अभी चार साल का है. वो हमेशा खेलता ही रहता है. उसकी आवाज़ बड़ी मधुर है.

वो भी मेरे साथ स्कूल जाने को बहुत उत्सुक है.

गर्मियों की छुट्टियां ख़त्म होने के बाद विनोद का भी स्कूल में दाखिला होगा. फिर हम दोनों साथ-साथ स्कूल जाया करेंगे.

मेरे पिताजी के नाम रंगा राव है.
सभी लोग उन्हें "रंगा" कहकर बुलाते है.

कभी-कभी मैं पिताजी के साथ खेत पर जाती हूँ. वो मुझे तरह-तरह के पक्षी, कीट, फूल और फल दिखाते है.

मेरी माँ का नाम सुशीलाम्मा है. माँ मुझे गीत गाना सिखाती हैं. वो मुझे और छोटे भाई को खाना खिलाती हैं.

मेरे पिताज़ी और माँ खेत में काम करने जाते है. वो खेत में फसलें उगाते हैं.
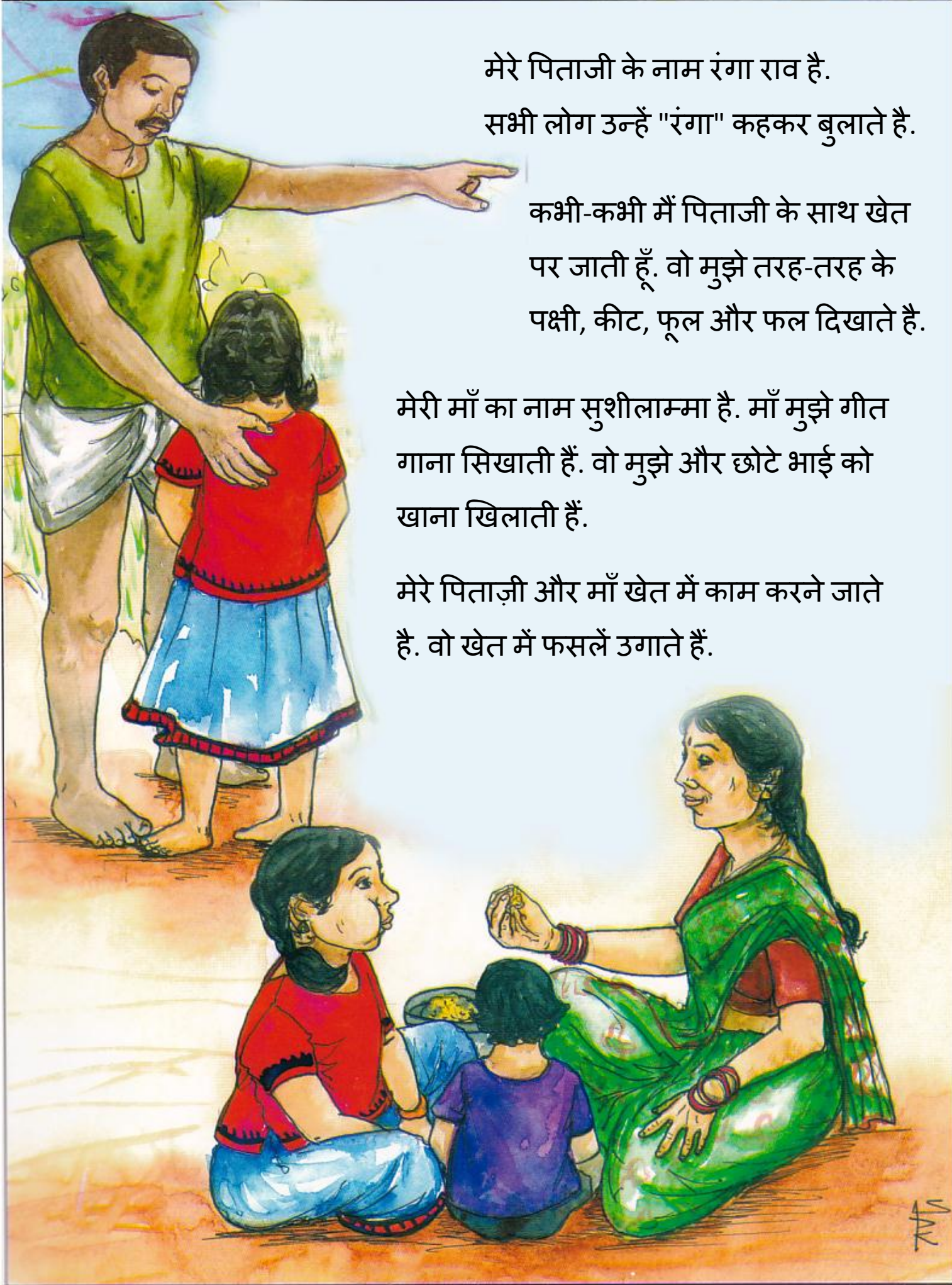
हमारी गौशाला में कई गाय और भैंसे हैं.

उनके बछड़े इधर-उधर कूदते और नाचते हैं.
मेरा भाई और मैं भी बछड़ों के साथ-साथ
दौड़ते हैं. हम उन्हें खाने को चारा देते हैं.

हमने उनके गलों में घंटियां बाँधी हैं.
घंटियों की झंकार हमें बहुत पसंद है.

हिंदी : अरविंद गुप्ता

**A Bagful of Stories**
*Published by*
**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# लोमड़ी और सारस

लोमड़ी और सारस दोनों गहरे मित्र थे.

"कृपा करके मेरे घर आओ, सारस भाई! और मेरे साथ भोजन करो," यह कहकर लोमड़ी ने एक दिन सारस को अपने घर पर खाने का निमंत्रण दिया.
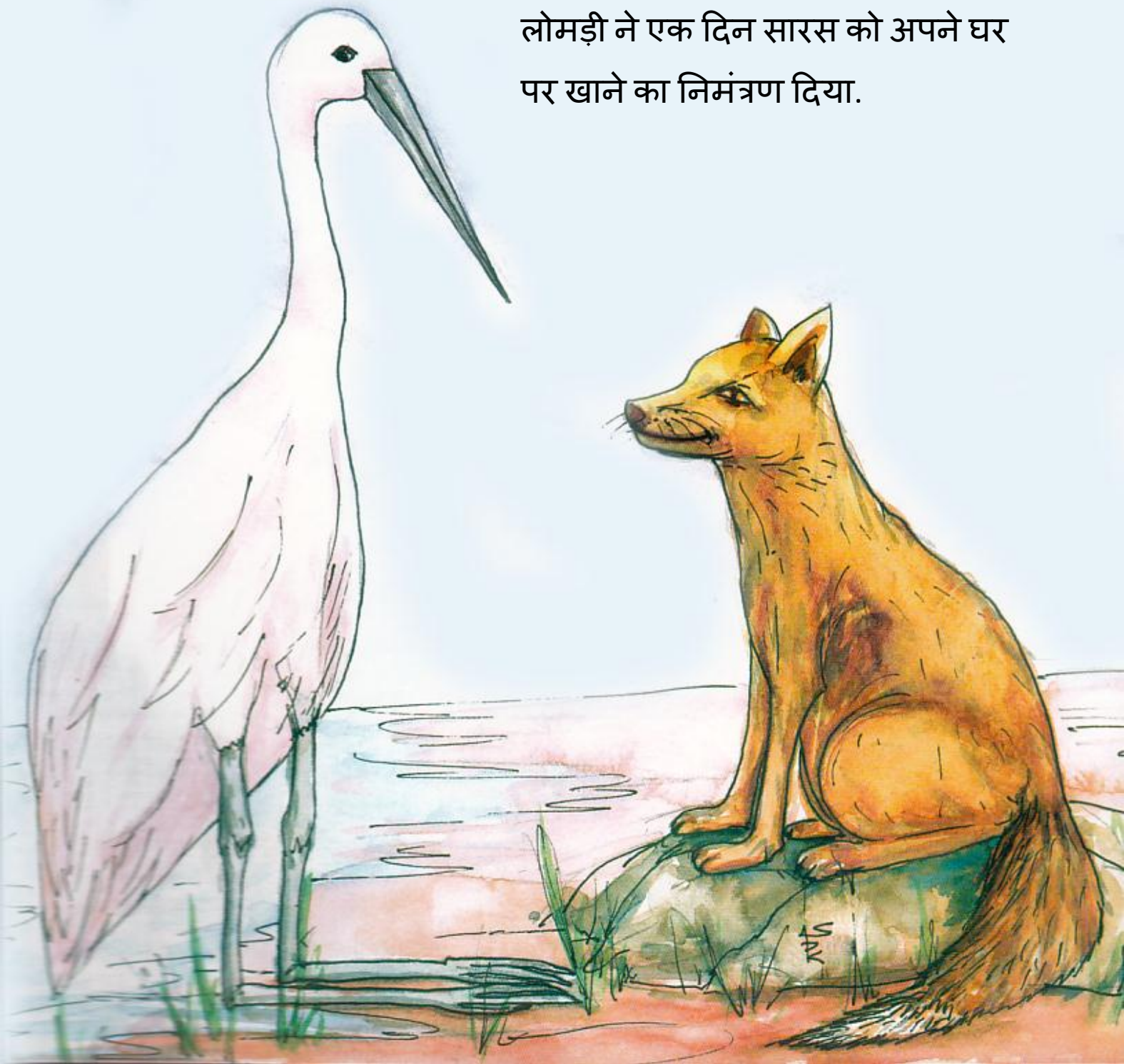
लोमड़ी ने दलिया पकाया. उसने दलिए को एक सपाट थाली में डालकर सारस को खाने को दिया. सारस ने बहुत कोशिश की पर वो अपनी चोंच से उस चपटी थाली में से दलिया चख तक नहीं पाया.

लोमड़ी अपनी जीभ से सारा दलिया चाट गई. "देखो सारस भाई, तुम्हें इस तरह से खाना चाहिए," यह कहकर लोमड़ी ने अपना सारा दलिया सफाचट्ट कर डाला. "मुझ पर नाराज़ न होना, सारस भाई. घर में और कुछ भी खाने को नहीं है," लोमड़ी ने कहा.

"कोई बात नहीं लोमड़ी बहन! अब तुम जल्दी ही मेरे घर पर खाने के लिए आना," सारस ने कहा.

कुछ दिनों के बाद लोमड़ी, सारस के घर खाना खाने गई. सारस ने मछली का शोरबा बनाया जिसे उसने एक सकरे मुंह वाली सुराही में रखा.

लोमड़ी ने सुराही के चारों ओर कई चक्कर लगाए. उसने सुराही को सूंघा और चाटा, पर वो उसे स्वादिष्ट शोरबे को बिल्कुल भी नहीं चख पाई.

"प्रिय बहन, देखो शोरबे को इस तरह से पीना चाहिए," सारस ने अपनी चोंच सुराही में डालते हुए कहा. सारस, शोरबे की आखरी बूँद तक पी गया. "देखो, मुझे पर नाराज़ मत होना. मेरे घर में खाने का और कुछ नहीं है."

लोमड़ी बहुत नाराज़ हुई. वो कुछ बढ़िया खाने के लिए आई थी, पर भूखी वापिस गई! तब से लोमड़ी और सारस के बीच की दोस्ती गड़बड़ा गई है.

# ताली बजाओ

ताली बजाओ, भाई ताली बजाओ
संगीत सुनो और ताली बजाओ.

पंजों को मारो, भाई पंजों को मारो
संगीत सुनो और पंजों को मारो.

गोल-गोल घूमो, भाई गोल-गोल घूमो
संगीत सुनो और गोल-गोल घूमो.

ऊपर को कूदो, भाई ऊपर को कूदो
संगीत सुनो और ऊपर को कूदो.

ताली बजाओ, भाई ताली बजाओ
संगीत सुनो और ताली बजाओ.

हिंदी : अरविंद गुप्ता

A Bagful of Stories
*Published by*
Manchi Pustakam

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# मूली

एक बूढ़े आदमी ने मूली बोई. धीरे-धीरे मूली बढ़कर एक बड़ा पौधा बनी. बूढ़े आदमी ने मूली को ज़मीन से उखाड़ने की कोशिश की. पर उससे वो अकेले बना नहीं. तबी बूढ़े ने अपनी बूढ़ी पत्नी को बुलाया.

बूढ़ी औरत ने बूढ़े आदमी को पकड़ा, बूढ़े आदमी ने मूली को पकड़ा. उन दोनों ने बहुत ज़ोर लगाया, लेकिन वो मूली को उखाड़ने में असमर्थ रहे. फिर बूढ़ी औरत ने अपनी पोती को बुलाया.

पोती ने बूढ़ी औरत को पकड़ा, बूढ़ी औरत ने बूढ़े आदमी को पकड़ा, बूढ़े आदमी ने मूली को पकड़ा. उन्होंने बहुत ज़ोर लगाया लेकिन फिर भी वो मूली को उखाड़ने में असमर्थ रहे. फिर पोती ने अपने कुत्ते को बुलाया.
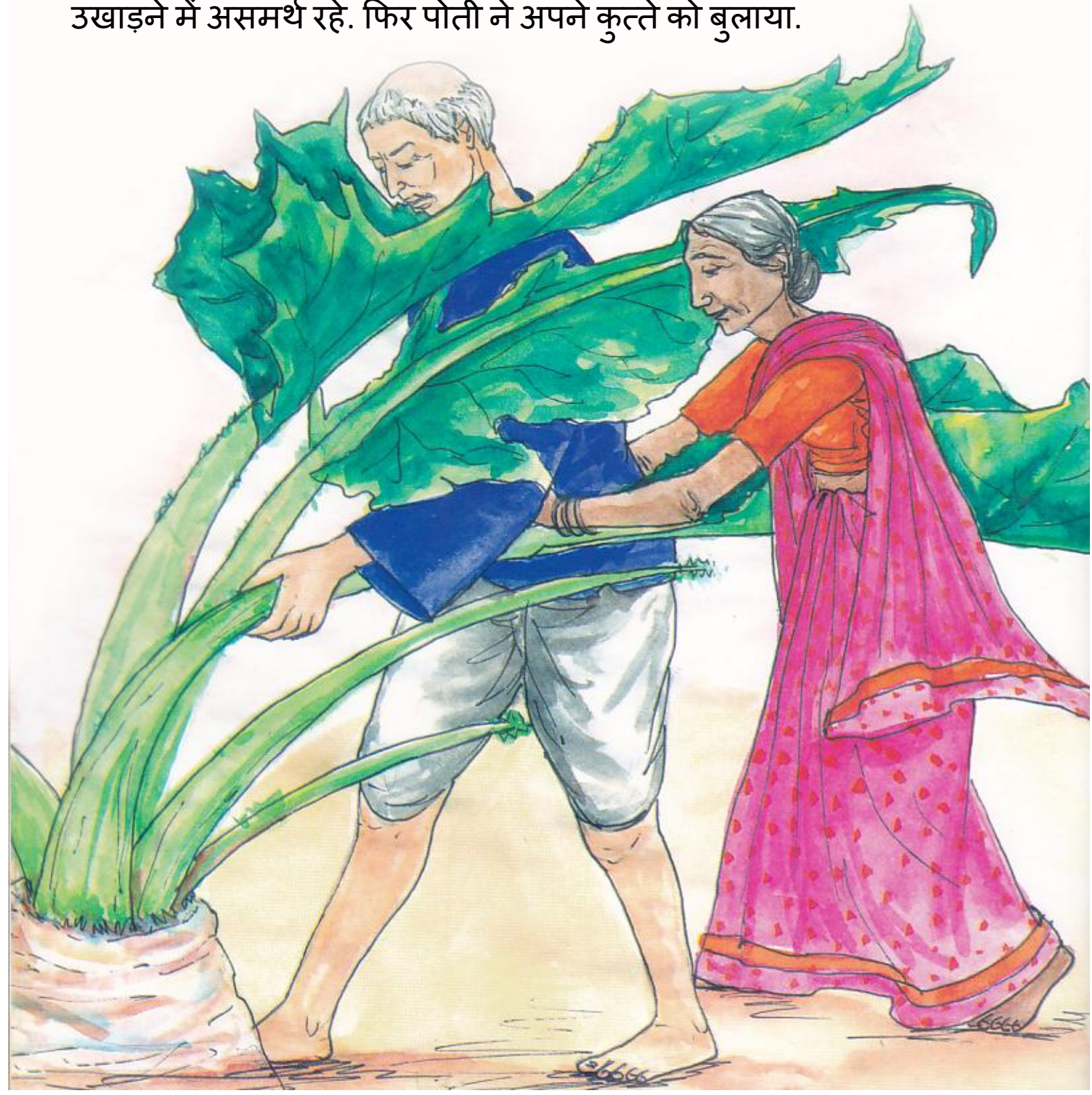
कुत्ते ने पोती को पकड़ा, पोती ने बूढ़ी औरत को पकड़ा, बूढ़ी औरत ने बूढ़े आदमी को पकड़ा, बूढ़े आदमी ने मूली को पकड़ा. उन्होंने बहुत ज़ोर लगाया लेकिन वो मूली को उखाड़ने में असमर्थ रहे. फिर कुत्ते ने बिल्ली को बुलाया.

बिल्ली ने कुत्ते को पकड़ा, कुत्ते ने पोती को पकड़ा, पोती ने बूढ़ी औरत को पकड़ा, बूढ़ी औरत ने बूढ़े आदमी को पकड़ा, बूढ़े आदमी ने मूली को पकड़ा. उन्होंने बहुत ज़ोर लगाया लेकिन वो फिर भी वे मूली को उखाड़ने में असमर्थ रहे. फिर बिल्ली ने चूहे को बुलाया.

चूहे ने बिल्ली को पकड़ा, बिल्ली ने कुत्ते को पकड़ा, कुत्ते ने पोती को पकड़ा, पोती ने बूढ़ी औरत को पकड़ा, बूढ़ी औरत ने बूढ़े आदमी को पकड़ा, बूढ़े आदमी ने मूली को पकड़ा. उन्होंने बहुत ज़ोर लगाया. पर इस बार वे मूली को उखाड़ने में सफल रहे.

# प्यासा कौवा

एक कौवे को बड़ी ज़ोर की
प्यास लगी थी. उसे एक
मटका दिखा. पर मटके में
बहुत थोड़ा ही पानी था.

मटके की तले में बस
थोड़ा सा पानी था.
भला कौवा उस तक
कैसे पहुंचता?

तभी कौवे को आसपास कुछ
कंकड़ पड़े हुए दिखे. उसने
एक-एक करके उन कंकड़ों
को मटके में डाला.

जैसे-जैसे कंकड़ पानी में
डूबे, वैसे-वैसे पानी ऊपर
आया. फिर कौवे ने पानी
पीकर अपनी प्यास
बुझाई और बाद में वो
वहां से उड़ गया.

**A Bagful of Stories**

*Published by*

**Manchi Pustakam**

हिंदी : अरविंद गुप्ता

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17. e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# नटखट बालक



एक दिन बीरबल दरबार में बहुत देरी से आए. बादशाह अकबर ने उनसे देरी का कारण जानना चाहा.

"जहांपनाह, मैं अपने रोते हुए बच्चे को चुपा रहा था," बीरबल ने उत्तर दिया.

"क्या वो इतना कठिन काम है?" अकबर ने पूछा.

"हाँ, वो वाकई बहुत मुश्किल काम है. क्या आप उसे करने की कोशिश करेंगे? कृपा आप कुछ समय के लिए मेरे पिता की भूमिका निभाएं," बीरबल ने सुझाव दिया. अकबर राज़ी हो गया.

फिर अकबर ने पिता का रोल निभाया और बीरबल बच्चा बन गया.

बीरबल ने एक थैले की फरमाइश की और उसके तुरंत बाद खाने के लिए मिठाई और खेलने के लिए खिलोने मांगे. अकबर ने अपने आदमियों से वो सारी चीज़ें लाने को कहा.

फिर बीरबल ने एक असली हाथी की मांग की. अकबर ने अपने आदमियों से तुरंत हाथी लाने को कहा.

"अब हाथी को इस थैले में डालें," बीरबल ने कहा. अकबर ने खिलोने वाले हाथी को थैले में डालने की कोशिश की. "नहीं, नहीं! आप असली हाथी को इस थैले में डालें." यह कहकर बीरबल रोने लगा.

"तुमने बिल्कुल ठीक कहा - एक बच्चे को मानना वाकई में बेहद मुश्किल काम है," अकबर ने बीरबल से सहमति जताई.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**

*Published by*

**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani, Printed at Charita Impressions

# मिठाई की खुशबू और सिक्कों की झनक

सोमा शर्मा बड़ा भोला और गरीब आदमी था. एक बार वो शहर गया. वहां उसे एक मिठाई की दुकान दिखाई दी.

उस दुकान में मालपुए, लड्डू और जलेबियाँ बिक रही थीं. उन्हें देखकर सोमा शर्मा के मुंह में पानी आ गया. वो दूर खड़े होकर दुकान में सजी मिठाइयों को देखता रहा.

कुछ देर बाद दुकानदार ने सोमा शर्मा को देखा और उससे पूछा, "तुम कौन हो? तुम बिना कीमत चुकाए मेरी दुकान की मिठाइयों को क्यों सूंघ रहे हो? एक ईमानदार आदमी जैसे तुम उसकी कीमत चुकाओ." यह सुनकर बेचारा सोमा शर्मा एकदम घबरा गया.

उसी समय रमन्ना दुकान के पास से गुज़रा. उसने पूरी बात सुनी. "आपकी बात बिल्कुल सच है. पर क्योंकि सोमा शर्मा गरीब है इसलिए मैं उसका क़र्ज़ चुकाऊंगा," उसने दुकानदार से कहा.

दुकानदार यह सुनकर ख़ुश हुआ. रमन्ना ने अपने पैसों की थैली दुकानदार के सामने हिलाई.

"देखो, सोमा शर्मा तुम्हारी मिठाई की खुशबू सूंघ कर क़र्ज़ में डूब गया था. अब क्योंकि तुमने मेरे सिक्कों की झंकार सुनी, इसलिए उससे तुम्हारा क़र्ज़ उतर गया!" रमन्ना के कहा.

यह सुनकर दुकानदार का सिर शर्म से झुक गया.
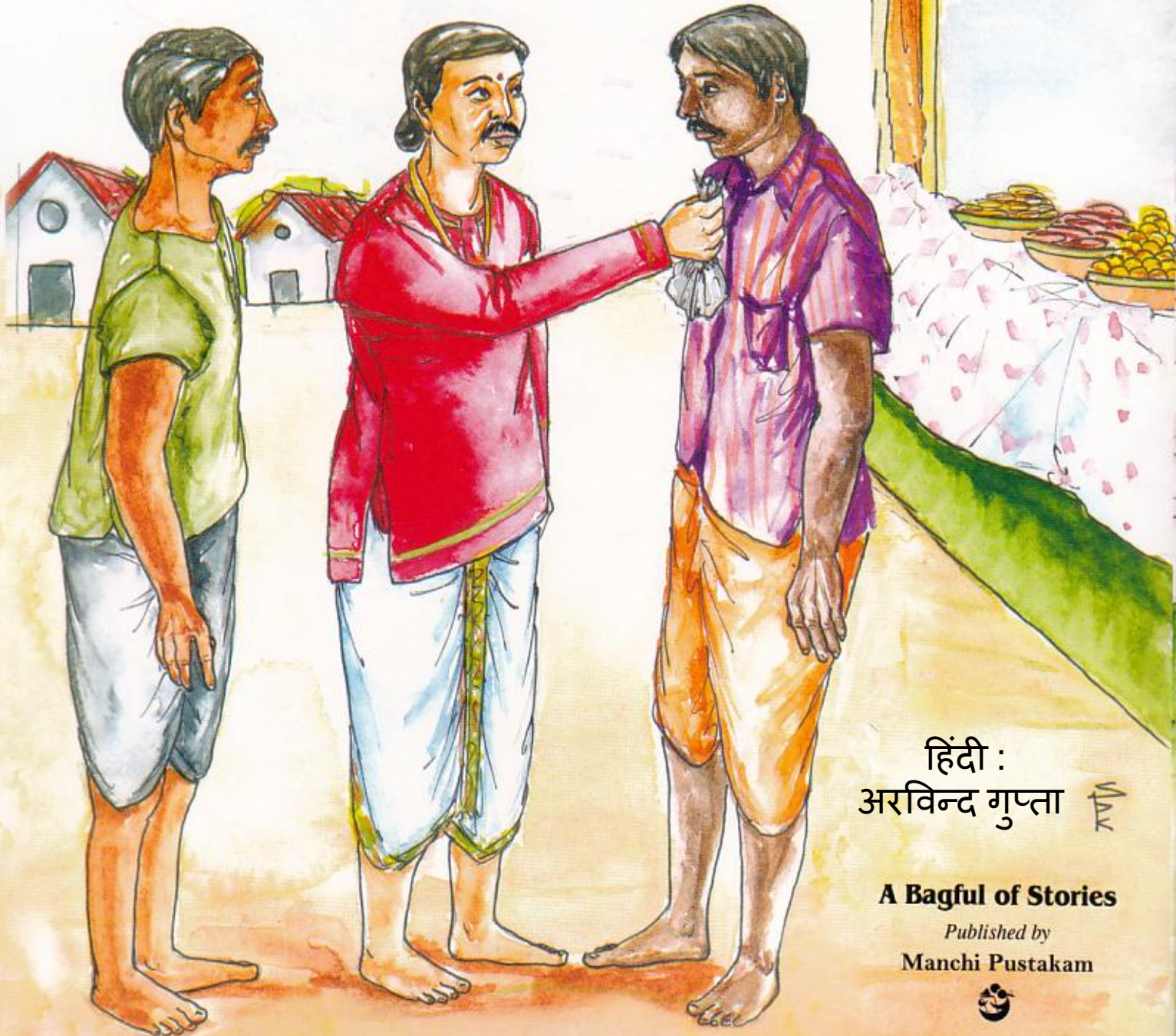
हिंदी :
अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**

*Published by*

**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# गांव का चूहा, शहर का चूहा



एक शहर का चूहा, गांव के चूहे से मिलने आया. गांव के चूहे ने शहर के चूहे को हरे चने, गेहूं, चावल और अन्य अनाज खिलाए.

शहर के चूहे ने देसी अनाज खाने के बाद कहा, "तुम्हारे गांव में क्योंकि सिर्फ अनाज के दाने ही खाने को मिलते हैं, इसीलिए तुम इतने पतले-दुबले और कमज़ोर हो. शहर में हम कई स्वादिष्ट पकवान खाते हैं!" यह कहकर उसने गांव के चूहे को शहर में आमंत्रित किया.

फिर एक दिन गांव का चूहा, शहर के चूहे से मिलने गया.

वहां रसोई के काउंटर पर एक कटोरे में दलिया रखा था. दोनों चूहे दलिया खाने ही वाले थे तभी एक बिल्ली ने उनपर झपट्टा मारा!

गनीमत थी कि दोनों चूहे बच गए. फिर पूरे दिन दोनों अपने बिल में छिपे रहे.

कुछ देर में रात हुई. शहर का चूहा अपने दोस्त को घर के अंदर ले गया. दोनों चूहे खाने वाली मेज़ पर चढ़ गए. मेज़ पर कई बढ़िया पकवान और खाने की चीज़ें सजी थीं. गांव के चूहे ने अपने ज़िंदगी में खाने की इतनी स्वादिष्ट चीज़ें नहीं देखी थीं.

"तुमने जो कुछ कहा था वो एकदम सच था! मैंने अपने गांव कभी भी इतना स्वादिष्ट खाना नहीं देखा," वो ख़ुशी से चिल्लाया.

तभी एक आदमी ने दोनों चूहों को देखा और उसने उन्हें भगाया. दोनों चूहे बचकर किसी तरह खुले दरवाज़े से बाहर भागने में सफल हुए.

"मैं खेत में अपने बिल में ही खुश हूँ. मुझे वहां डबलरोटी, मक्खन और पनीर तो खाने को नहीं मिलता है. पर मैं वहां बिना किसी के डर के बेफिक्र रहता हूँ!" यह कहकर गांव का चूहा अपने घर की तरफ वापिस चला.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**

*Published by*

**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# मेढकों का राजा



एक बड़े तालाब में कई मेंढक रहते थे. वहां उन्हें खूब खाने को मिलता था. वो दिन भर खेलते और मज़ा करते थे. वे बहुत खुश थे. वहां पर उन्हें किसी का कोई डर भी नहीं था.

पर उनमें से एक मेढक को यह पसंद नहीं था. वो सोचता था कि मेढकों के कुछ नियम-कानून और उनका एक राजा होना चाहिए. उसने मेंढकों की एक बैठक बुलाई और सबके सामने अपने विचार रखे. सभी उसकी बात से सहमत हुए.
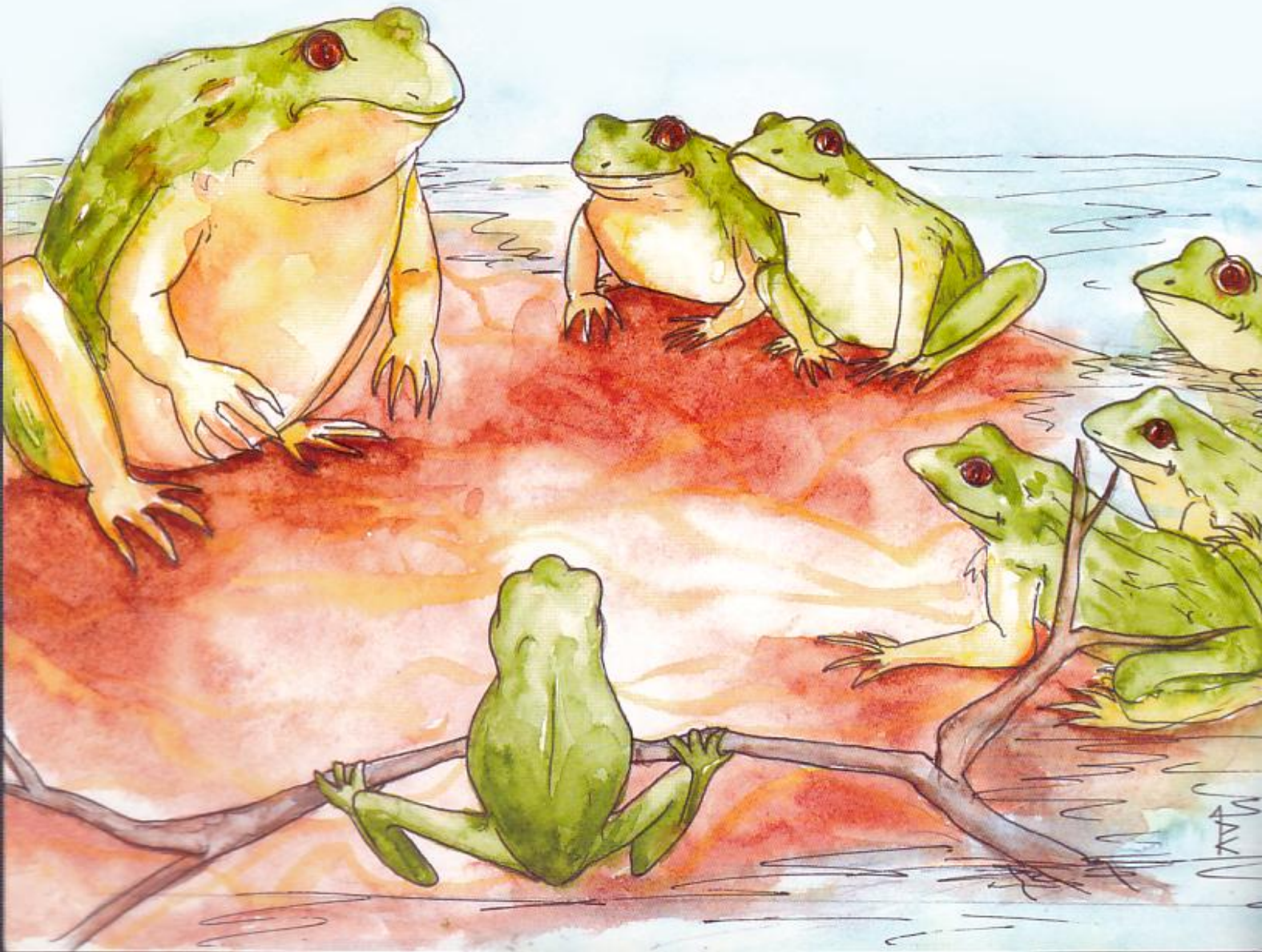
"हे भगवान, हम पर राज करने के लिए किसी राजा को भेजो," मेढकों ने प्रार्थना की.

तभी तालाब में एक छपाके के साथ एक बड़ा लकड़ी का लट्ठा गिरा. उसकी आवाज़ सुनकर मेंढक डर गए. सभी पानी से किनारे पर कूदे और तालाब को घूरने लगे.

जब पानी शांत हुआ तो वो तालाब में लकड़ी के लट्ठे को देख पाए. उन्होंने उस लट्ठे को भगवान द्वारा भेजा हुआ राजा समझा. फिर दो बहादुर मेंढक तालाब में कूदे. वो लट्ठे के पास तैरकर गए और उन्होंने उसे हल्का सा धक्का दिया. पर लट्ठा टस-से-मस नहीं हुआ. फिर उनमें से एक मेंढक कूदकर लट्ठे पर चढ़ा फिर उसने हवा में कूदकर पानी में गोता लगाया. कुछ देर बाद सभी मेंढक वही करने लगे.

इस तरह कुछ दिन बीते. फिर मेंढकों की अपने राजा में रुचि घटने लगी. उन्हें ऐसा राजा पसंद नहीं था जो न तो हिलता-डुलता था और न ही बातचीत करता था. "हमें एक असली राजा चाहिए. एक योग्य राजा, जो हम पर अच्छी तरह से राज कर सके," उन्होंने प्रार्थना की. तभी एक सारस वहां उड़कर आया और तालाब के किनारे आकर बैठ गया.

"वो हमारा नया राजा है. वो ज़रूर हमारी समस्यों को सुनेगा. हमारे राजा की अपनी आवाज़ है," यह कहकर मेंढक ख़ुशी से नाचने लगे.

पर जल्द ही तालाब में मेंढकों की संख्या कम होने लगी. तब मेंढकों को लगा कि पिछला राजा जो कुछ नहीं बोलता था शायद एक बेहतर राजा था.
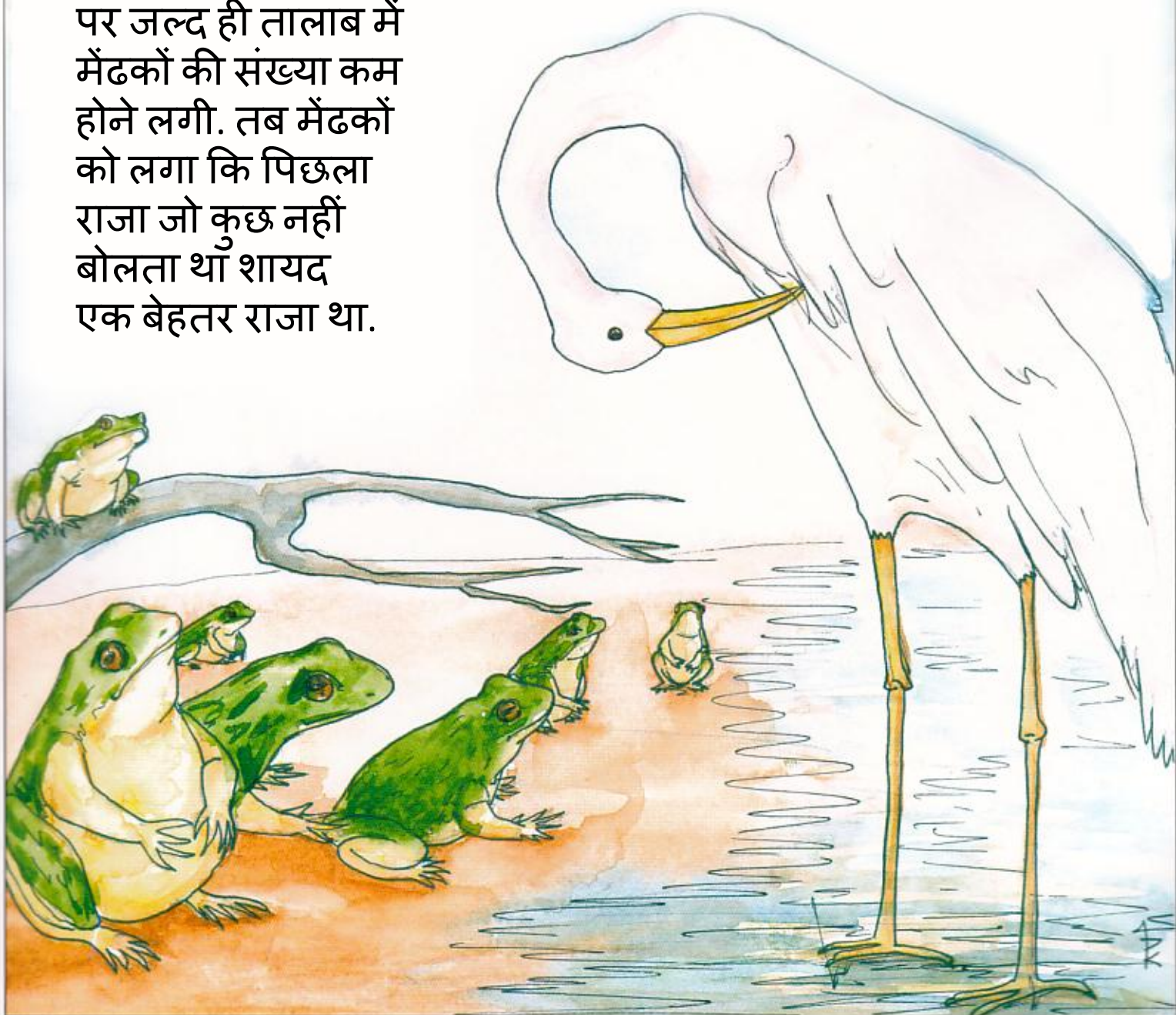
# धम्मक-धम्मक

निरंकार देव "सेवक"

धम्मक-धम्मक आता हाथी
धम्मक-धम्मक जाता हाथी
अपनी सूंड उठाता हाथी
अपनी सूंड गिराता हाथी
अपनी पूंछ हिलाता हाथी
धम्मक-धम्मक आता हाथी

जब पानी में जाता हाथी
भर-भर सूंड नहाता हाथी
कितने केले खाता हाथी
यह तो नहीं बताता हाथी
धम्मक-धम्मक आता हाथी
धम्मक-धम्मक जाता हाथी

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**

*Published by*

**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# कुत्ते, बिल्लियों का पीछा क्यों करते हैं? बिल्लियां, चूहों का पीछा क्यों करती हैं?



जब दुनिया शुरू हुई तब कुत्ता, बिल्ली और चूहा आपस में मित्र थे. वे हमेशा एक-साथ रहना चाहते थे. उन्होंने इस समझौते को बाकायदे एक कागज़ पर लिखा भी.

कुत्ता बाहर का सारा काम देखता था, जबकि बिल्ली और चूहा घर के काम की पूरी देखभाल करते थे.

बिल्ली ने समझौते को संभाल कर अटारी में रख दिया.
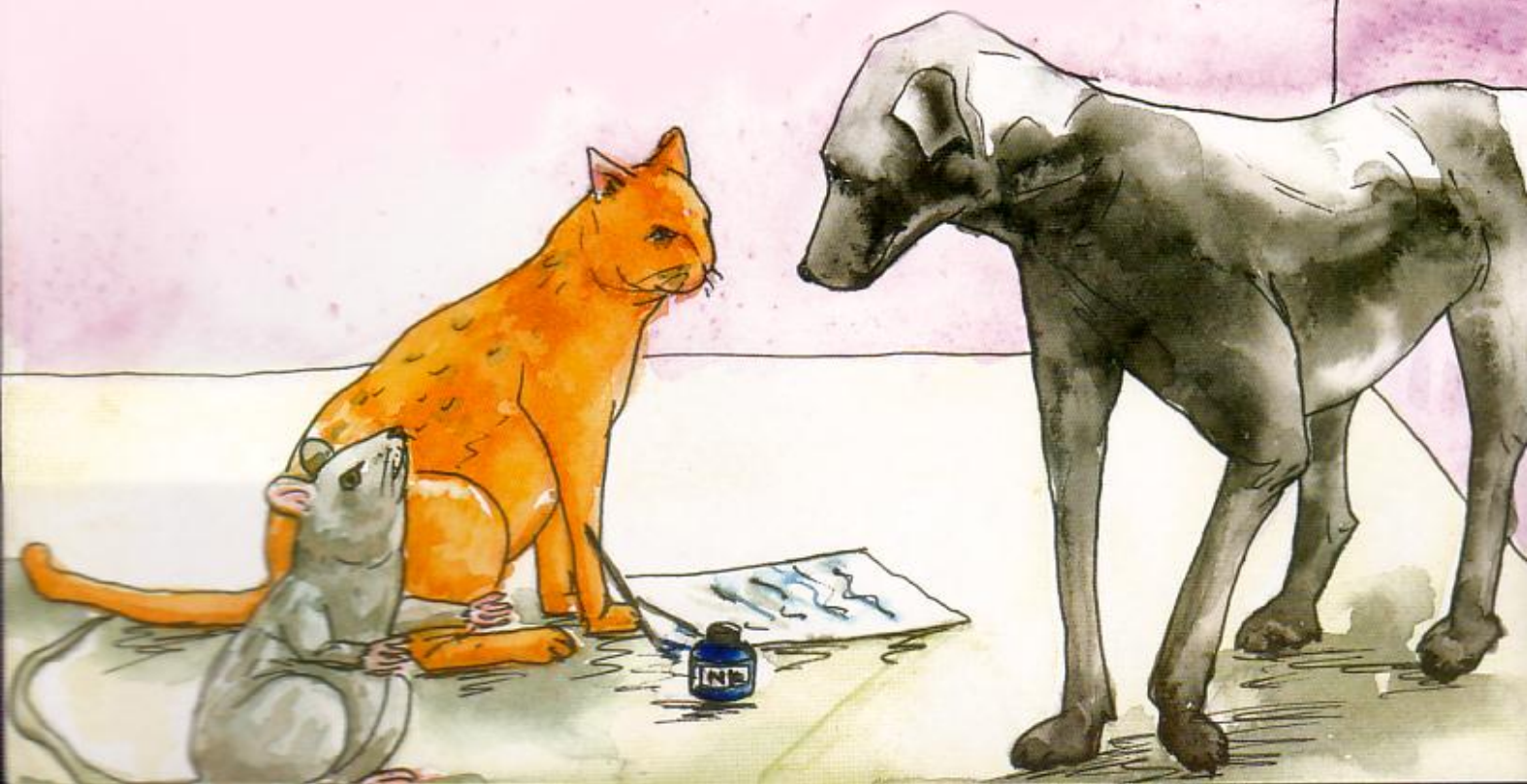
जैसे-जैसे दिन बीते वैसे-वैसे कुत्ते को अपना काम बहुत उबाऊ लगने लगा.
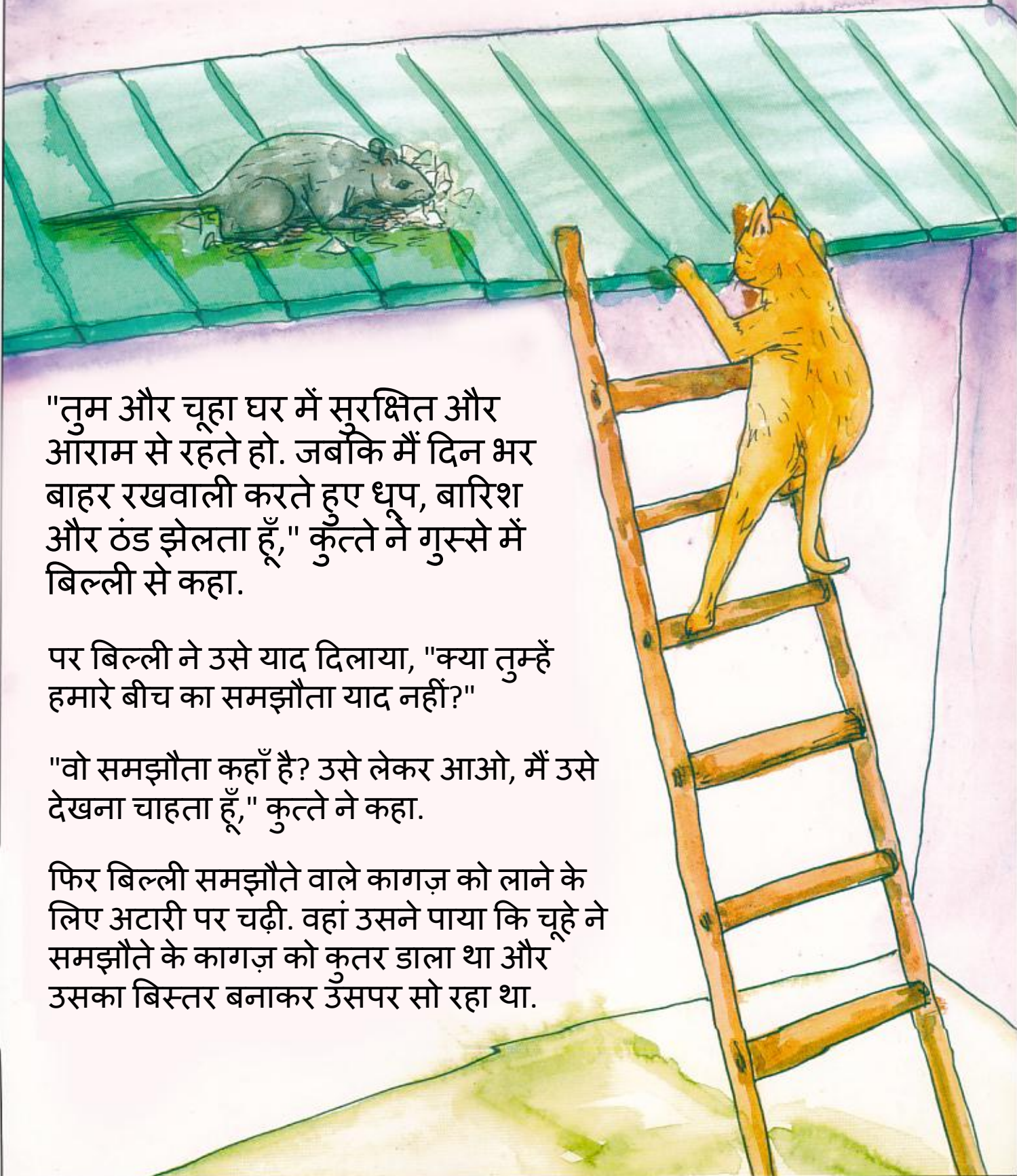
"तुम और चूहा घर में सुरक्षित और आराम से रहते हो. जबकि मैं दिन भर बाहर रखवाली करते हुए धूप, बारिश और ठंड झेलता हूँ," कुत्ते ने गुस्से में बिल्ली से कहा.

पर बिल्ली ने उसे याद दिलाया, "क्या तुम्हें हमारे बीच का समझौता याद नहीं?"

"वो समझौता कहाँ है? उसे लेकर आओ, मैं उसे देखना चाहता हूँ," कुत्ते ने कहा.

फिर बिल्ली समझौते वाले कागज़ को लाने के लिए अटारी पर चढ़ी. वहां उसने पाया कि चूहे ने समझौते के कागज़ को कुतर डाला था और उसका बिस्तर बनाकर उसपर सो रहा था.

यह देखकर बिल्ली को
बहुत गुस्सा आया और
उसने चूहे को खदेड़ना
शुरू किया. पर बिल्ली,
चूहे को पकड़ नहीं पाई.

फिर हारी-थकी बिल्ली अटारी
से नीचे उतरकर आई.

"समझौता कहाँ है?" कुत्ते ने पूछा. क्योंकि बिल्ली
समझौते का कागज़ नहीं लाई थी इसलिए कुत्ते ने
बिल्ली को खदेड़ना शुरू किया.

चूहे की करतूत को याद करके बिल्ली को जहाँ कहीं मौका
मिलता है वो चूहे को खदेड़ने की कोशिश करती है.

अब तुम समझ गए होगे कि बिल्लियां, चूहों का क्यों
पीछा करती हैं और कुत्ते, बिल्लियों को क्यों खदेड़ते हैं.

# पांच छोटी चिड़िया

पांच छोटी चिड़िया खाती थीं अनार
एक उनमें से उड़ गई बाकी बची चार.

चिड़िया-चिड़िया उड़ती जा
चिड़िया-चिड़िया ख़ुशी से गा.

चार छोटी चिड़िया बजा रही थीं बीन
एक उनमें से उड़ गई बाकी बची तीन.

चिड़िया-चिड़िया उड़ती जा
चिड़िया-चिड़िया ख़ुशी से गा.

तीन छोटी चिड़िया धान रही थीं बो
एक उनमें से उड़ गई बाकी बची दो.

चिड़िया-चिड़िया उड़ती जा
चिड़िया-चिड़िया ख़ुशी से गा.

दो छोटी चिड़िया धूप रही थीं सेक
एक उनमें से उड़ गई बाकी बची एक.

चिड़िया-चिड़िया उड़ती जा
चिड़िया-चिड़िया ख़ुशी से गा.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**

*Published by*

**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# चमगादड़

बहुत पुरानी बात है. एक बार जानवरों और चिड़ियों के बीच में लड़ाई छिड़ी.

परन्तु चमगादड़ किसी भी पक्ष में शामिल नहीं हुआ. वो इंतज़ार करता रहा, और देखता रहा कि कौन सा पक्ष जीतेगा.

शुरू में ऐसा लगा जैसे चिड़िये जीतेंगी. फिर वो खुद को चिड़िया बताकर चिड़ियों की पार्टी में शामिल हो गया. उसने पंख फैलाकर और उड़कर खुद के चिड़िया होने का सबूत दिया.

पर कुछ दिनों बाद उसे ऐसा लगा जैसे जानवर जीत रहे हों. फिर वो जानवरों की पार्टी में जाकर शामिल हो गया.

उसने जानवर होने का सबूत देने के लिए अपने पैने दांत दिखाए. उसने सबसे यह भी कहा कि वो जानवरों को बहुत चाहता था.
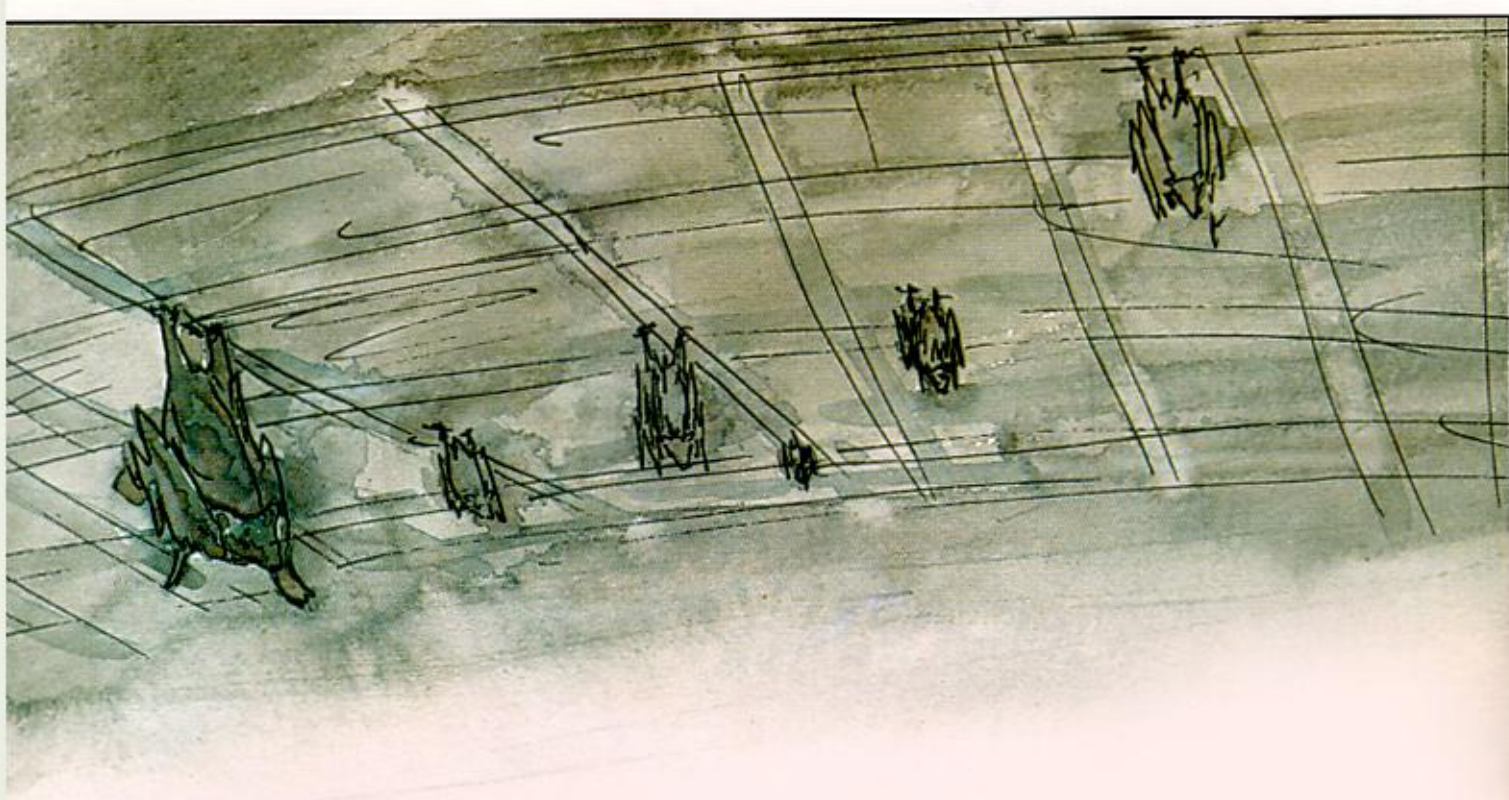
पर लड़ाई के अंत में, चिड़ियों की जीत हुई. फिर से चमगादड़, चिड़ियों की पार्टी में शामिल हो गया. पर इस बार चिड़ियों ने उसे अपने समूह में से खदेड़कर बाहर निकाल दिया.

फिर चमगादड़ ने जानवरों की पार्टी में दुबारा शामिल होने की कोशिश की. पर जानवरों ने भी उसे भगा दिया.

तब से चमगादड़ दिन का समय काली गुफाओं में या पेड़ों के कोटर में बिताते हैं. वे जानवरों और चिड़ियों दोनों से बचने के लिए सिर्फ रात के अँधेरे में ही बाहर निकलते हैं.

# वही जवाब

"मुल्ला! आपकी उम्र कितनी है?" एक आदमी ने पूछा.

"चालीस साल," मुल्ला ने जवाब दिया.

"यह कैसे संभव हो सकता है? आपने दस साल पहले भी यही कहा था कि आप चालीस साल के हैं!"

"मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जो अपनी बात पलटते हों. अगर तुम मुझ से बीस साल बाद भी पूछोगे तो भी मैं वही जवाब दूंगा!" मुल्ला ने उत्तर दिया.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**

*Published by*

**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# खोई अंगूठी



एक दिन मुल्ला की अंगूठी उंगली से फिसल कर नीचे गिर गई. ज़मीन पर उसके गिरने की आवाज़ आई.

पर उसी समय तेल ख़त्म होने से लालटेन बुझ गई. क्योंकि मुल्ला अँधेरे में अंगूठी को नहीं ढूंढ पाया इसलिए वो अपने घर के बाहर आया.

वो बाहर चाँद की रोशनी में अंगूठी को ढूंढने लगा.

"मुल्ला, आप क्या ढूंढ रहे हैं?" रास्ता चलते एक राहगीर ने पूछा.

"मेरी अंगूठी गिर गई है," मुल्ला ने कहा.

"वो कहाँ गिरी थी?" राहगीर ने मुल्ला की मदद करने की मंशा से पूछा.

"अंगूठी घर के अंदर गिरी थी," मुल्ला ने कहा.

"तो फिर आप उसे यहाँ बाहर क्यों ढूंढ रहे हैं?“ राहगीर ने पूछा.

"घर में अँधेरा है, इसलिए मैं उसे बाहर चाँद की रोशनी में खोज रहा हूँ!" मुल्ला ने जवाब दिया.
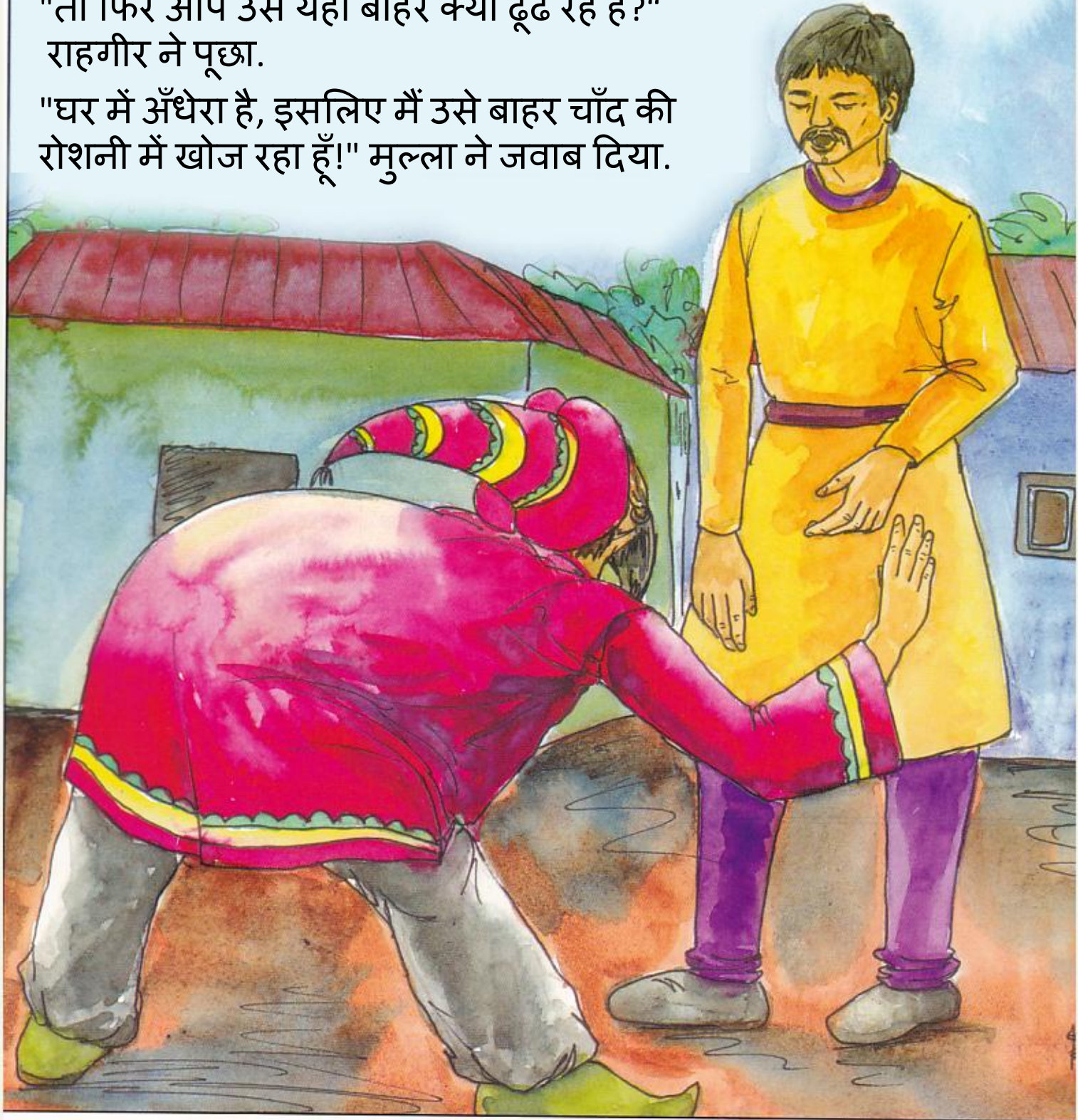
# हिरण

एक हिरण झरने में पानी पीने गया. जब उसने अपनी परछाई को पानी में देखा तो वो खुद को निहारने लगा. पर तभी उसका ध्यान अपने पैरों पर गया. पैर, उसे बिल्कुल पसंद नहीं आए. 'वो एकदम माचिस की तीलियों जैसे पतले और सींकिया हैं,' उसने सोचा.
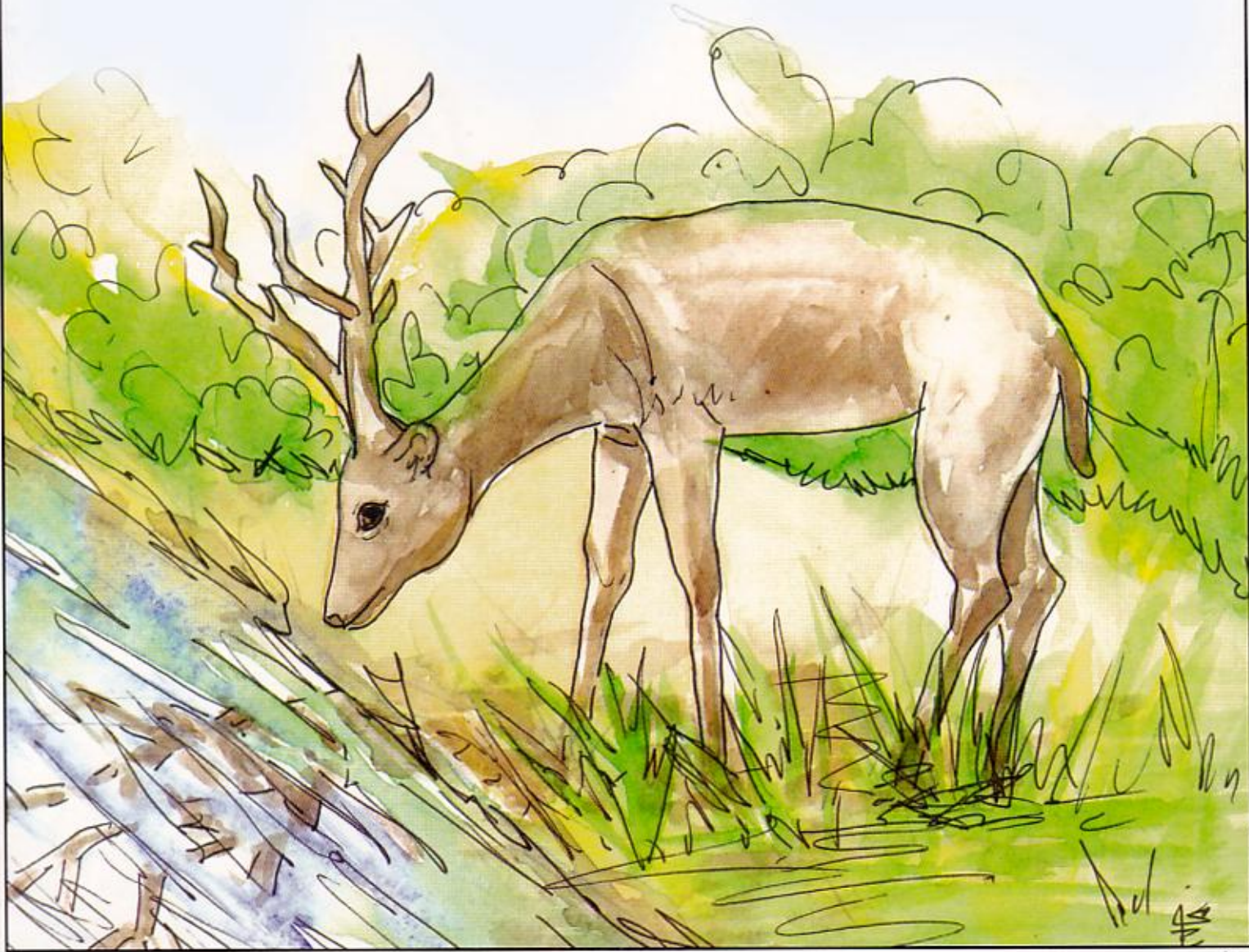
फिर एक दिन शेर ने हिरण को देखा. शेर को देखकर हिरण तेज़ी से घास के मैदान में भागने लगा. पर जैसे ही वो जंगल में घुसा उसके सींग एक पेड़ की टहनी में फंस गए. बड़ी मुश्किल से उसने खुद को छुड़ाया और शेर से बचने में सफल हुआ.

'जिन पैरों को मैं सींकिया और माचिस की तीलियों जैसा पतला मानता था उनके कारण ही मैं आज तेज़ दौड़ पाया. जिन सींगों की मैं बहुत प्रशंसा करता था उनके कारण आज मैं मरते-मरते बचा,' हिरण ने सोचा.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

A Bagful of Stories

*Published by*

Manchi Pustakam

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614; Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# कभी न ख़त्म होने वाली कहानी



एक राजा को कहानियां सुनना बहुत पसंद था. वो रोज़ नई-नई कहानियां सुनता था और फिर कहानी सुनाने वालों को महंगे उपहार देता था.

राजा के एक मंत्री ने राजा को, कहानियों की लत को छुड़ाने की एक योजना बनाई. फिर पूरे देश में घोषणा की गई कि जो कोई भी एक “कभी न ख़त्म होने वाली कहानी” सुनाएगा उसे राजा एक बड़ा इनाम देगा. कई लोगों ने कोशिश की पर उनकी कहानियों का अंत निकला. इसलिए किसी को भी इनाम नहीं मिला.

फिर एक दिन राजा के पास एक आदमी आया. उसने कहा कि वो उसे कभी ख़त्म न होने वाली एक कहानी सुनाएगा. राजा ने उससे तुरंत कहानी सुनाने को कहा.

"पर महाराज, मेरी एक शर्त है! जैसे-जैसे आप कहानी सुनें, वैसे-वैसे आप लगातार कहें, फिर उसके बाद....फिर उसके बाद...." उसने राजा से कहा.

राजा ने उसकी शर्त मान ली.

"बहुत पुरानी बात है. एक चिड़िया खाने की खोज में निकली."

"फिर उसके बाद ...."

"चिड़िया को अनाज की एक टोकरी दिखी. उसने अपनी चोंच से टोकरी में एक छेद बनाया."

"फिर उसके बाद ...."

"फिर उसने अपनी चोंच में एक दाना उठाया और फुर्र से उड़ गई."

"फिर उसके बाद ...."

"चिड़िया फिर वापिस आई, उसने अपनी चोंच में एक और दाना उठाया और फिर फुर्र से अपने घोंसले में उड़ गई."

"फिर उसके बाद ...."

"चिड़िया फिर वापिस आई, उसने अपनी चोंच में एक और दाना उठाया और फिर फुर्र से उड़ गई."

"फिर उसके बाद क्या हुआ?" राजा ने पूछा.

"चिड़िया फिर वापिस आई, उसने अपनी चोंच में एक और दाना उठाया और फिर फुर्र से उड़ गई."

फिर राजा बहुत नाराज़ हुआ.

"अरे वो चिड़िया कितनी बार दाना लेकर उड़ेगी. उसके बाद क्या होगा?"

"महाराज! क्योंकि उसे टोकरी में भरे अनाज के सभी दानों को खाली करना है!" कहानीकार ने कहा.

"बाप रे! लगता है इस कहानी का कभी कोई अंत नहीं होगा. चलो अब तुरंत कहानी बंद करो! अपना इनाम लो और यहाँ से दफा हो," राजा ने कहा.

उसके बाद राजा ने दुबारा कभी कोई कहानी नहीं सुनी.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**

*Published by*

**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# जिनमें दोस्ती नहीं होनी चाहिए थी



एक चूहे ने शेर की मांद में, अपना बिल खोदा. उसे लगा कि शेर की मांद में वो सुरक्षित रहेगा.

पर चूहा मांद में शांत नहीं बैठा. जब कभी शेर सोता तो चूहा शेर के ऊपर उछल-कूद करता. और जब शेर चूहे को पकड़ने की कोशिश करता तो वो झट से अपने बिल में घुस जाता था.

जब शेर से और बर्दाश्त नहीं हुआ तब वो अपनी मांद में एक बिल्ली लाया.

"तुम जितना चाहोगी, मैं तुम्हें उतना खाने को दूंगा. पर इस शरारती चूहे से तुम मेरा पिंड छुड़ाओ," शेर ने बिल्ली से कहा.

उसके बाद से चूहा बहुत सावधान रहने लगा.

एक दिन जब शेर अपनी मांद में नहीं था तब बिल्ली ने चूहे को पकड़ लिया. वो बस उसे खाने ही वाली थी.

"रुको! अगर तुमने मुझे खा लिया तो शेर तुम्हें अपनी मांद में से भगा देगा. अगर तुम मुझे छोड़ दोगी फिर मैं और तुम, हम दोनों यहाँ पर शांति से जी सकेंगे," चूहे ने बिल्ली को सलाह दी.

"तुम्हारी बात बिल्कुल सच है," बिल्ली ने कहा. फिर उसने चूहे को छोड़ दिया. उसके बाद जब कभी शेर बाहर जाता तब बिल्ली और चूहा, आपस में मिलकर खेलते थे.

पर जब शेर मांद में होता तो बिल्ली चूहे को पकड़ने का नाटक करती थी. और चूहा भी डरने का नाटक करते हुए अपने बिल की ओर भागता था.

उसके बाद बिल्ली और चूहे के बीच की दोस्ती कायम रही. शेर भी खुश था क्योंकि बिल्ली के कारण, अब चूहा उसे परेशान नहीं करता था.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

A Bagful of Stories
Published by
Manchi Pustakam

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# अनुमान लगाओ?



गिलहरी और खरगोश में पक्की दोस्ती थी. गिलहरी बड़ी जिज्ञासु थी और वो हमेशा नई-नई चीज़ें सीखना चाहती थी. खरगोश भी बड़ा होशियार था और वो हमेशा पहेलियों में बातें करता था.

गिलहरी : तुम सुबह-सुबह, इतनी जल्दी कहाँ जा रहे हो?

खरगोश : मैं अपने एक नए दोस्त के साथ खेलने जा रहा हूँ.

गिलहरी : तुम्हारा नया दोस्त? वो कौन है?

खरगोश : तुम उसका अनुमान लगाओ? उसके चार पैर हैं.

गिलहरी : हम सभी के चार पैर हैं! क्या तुम्हारा दोस्त बहुत बड़ा है?

खरगोश : हाँ!

गिलहरी : क्या हाथी तुम्हारा दोस्त है.

खरगोश : नहीं मेरे दोस्त की सूंड नहीं है.

गिलहरी : फिर ज़रूर गेंडा तुम्हारा दोस्त होगा. गेंडा बड़ा है
और उसकी सूंड नहीं है.

खरगोश : नहीं! नहीं! मेरे दोस्त के सींग नहीं हैं.

गिलहरी : फिर तुम्हारा दोस्त ऊँट होगा. उसके चार पैर हैं, साथ में
सूंड और सींग नहीं हैं.
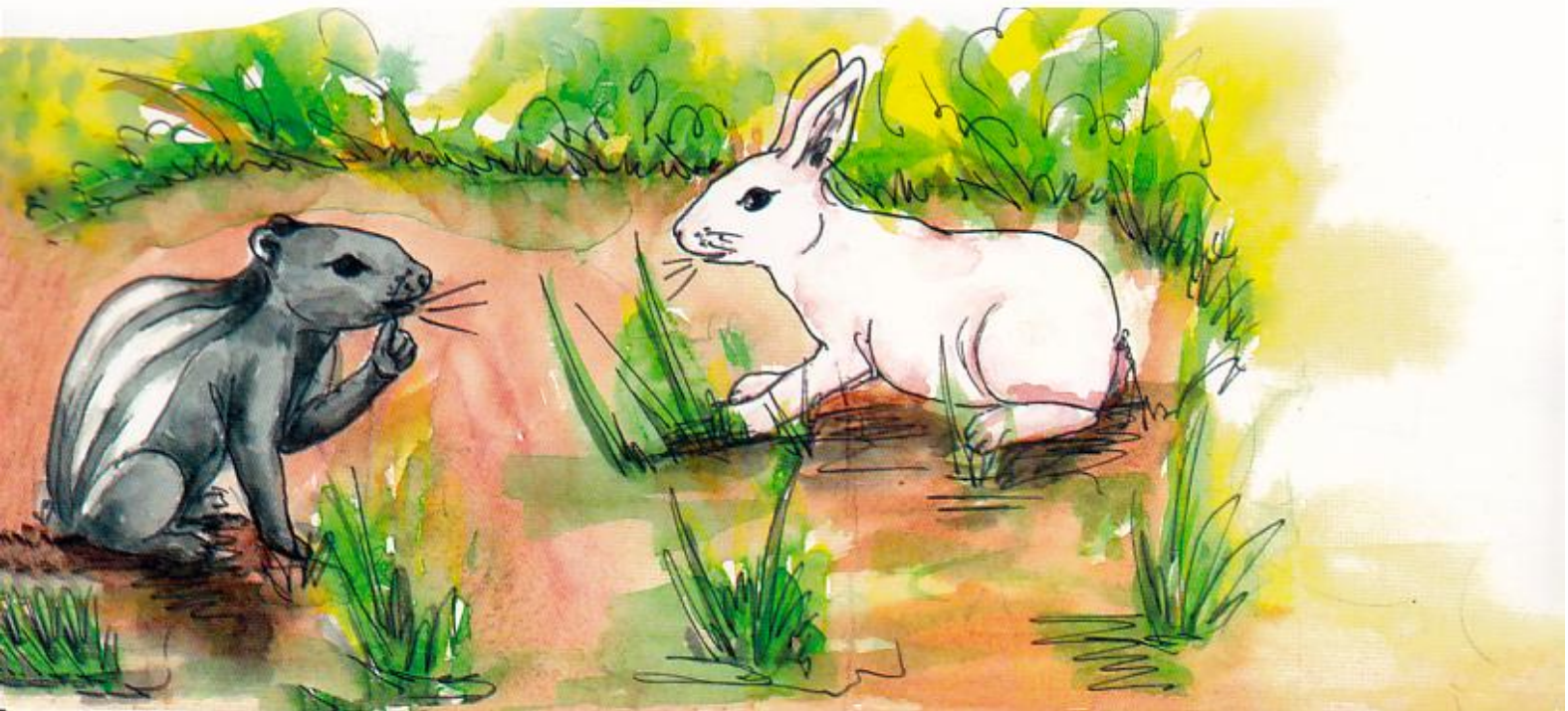
खरगोश : नहीं! मेरे दोस्त की पीठ पर ऊँट का कूबड़ नहीं है.

गिलहरी : तब शायद बाघ तुम्हारा दोस्त हो. उसके चार पैर हैं, और कोई सूंड, सींग और कूबड़ नहीं है.

खरगोश : नहीं! मेरे दोस्त के शरीर पर बाघ जैसी धारियां नहीं हैं.

गिलहरी : फिर भालू तुम्हारा दोस्त हो सकता है. उसके शरीर पर धारियां नहीं होती हैं.

खरगोश : नहीं! मेरे दोस्त के शरीर पर फर (रोवां) भी नहीं है.

गिलहरी : अच्छा रुको! क्या तुम्हारे दोस्त के शरीर पर धब्बे हैं?

खरगोश : हाँ! वो ज़रूर हैं.

गिलहरी : फिर हिरण तुम्हारा दोस्त होगा! उसके चार पैर हैं, कोई सूंड, सींग, कूबड़, धारियां, और फर नहीं है. और उसके शरीर पर धब्बे हैं.

खरगोश : नहीं! नहीं! मेरे दोस्त की गर्दन बड़ी लम्बी है.

गिलहरी : अब मुझे समझ में आया! तुम्हारा दोस्त जिराफ होगा.....उसके चार पैर हैं, कोई सूंड, सींग, कूबड़, धारियां, और फर नहीं है. उसके शरीर पर धब्बे हैं और उसकी गर्दन बड़ी लम्बी है.

खरगोश : बिल्कुल ठीक! तुमने सही अनुमान लगाया. अब तुम भी मेरे साथ चलो. हम दोनों जिराफ की पीठ पर बैठकर खेलेंगे.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**

*Published by*

**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# नौ या दस
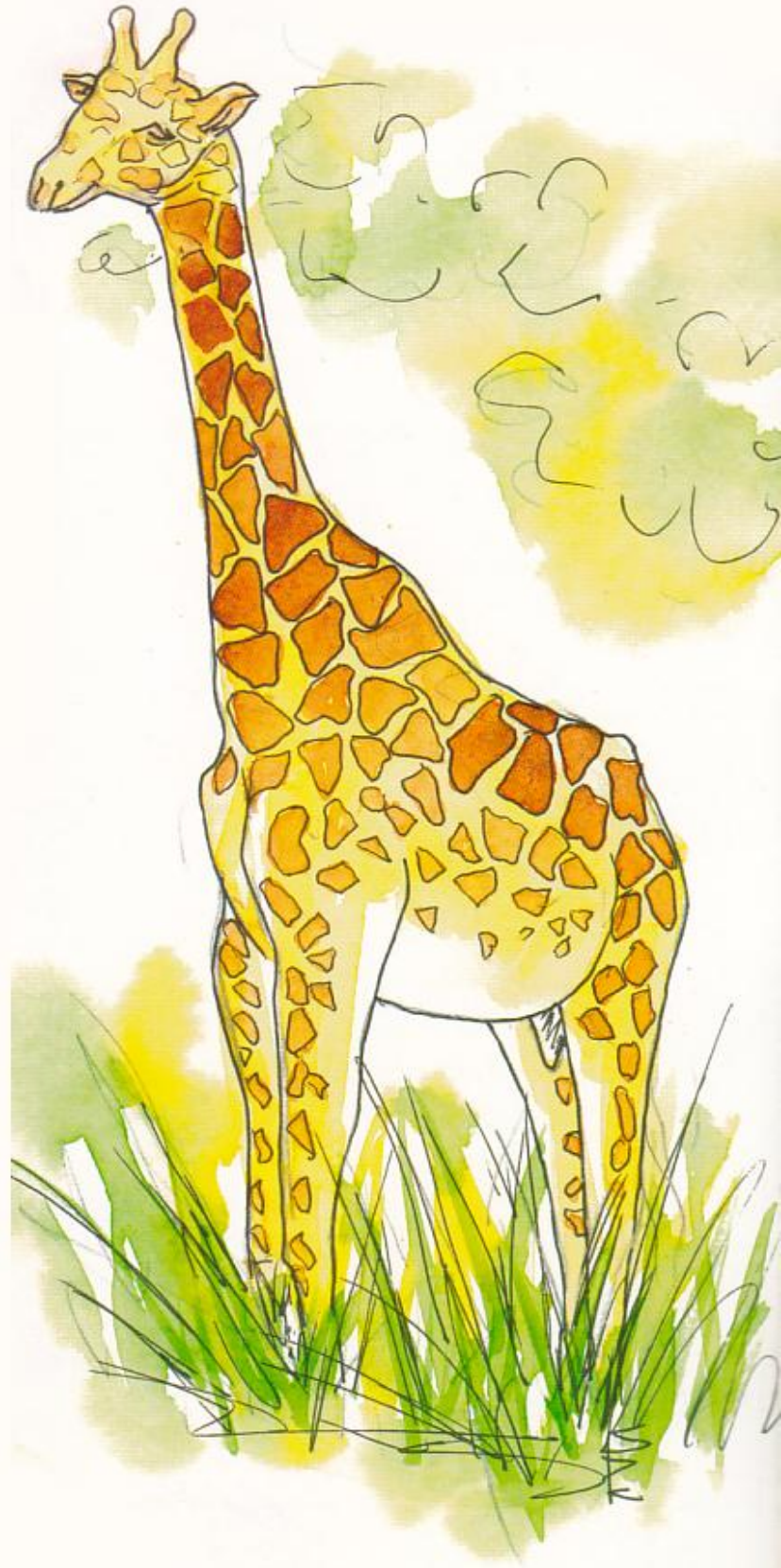


एक सौदागर अपने दस ऊंटों के साथ सफर कर रहा था. वो खुद एक ऊंट पर बैठा था. बाकी नौ उसके पीछे-पीछे चल रहे थे.
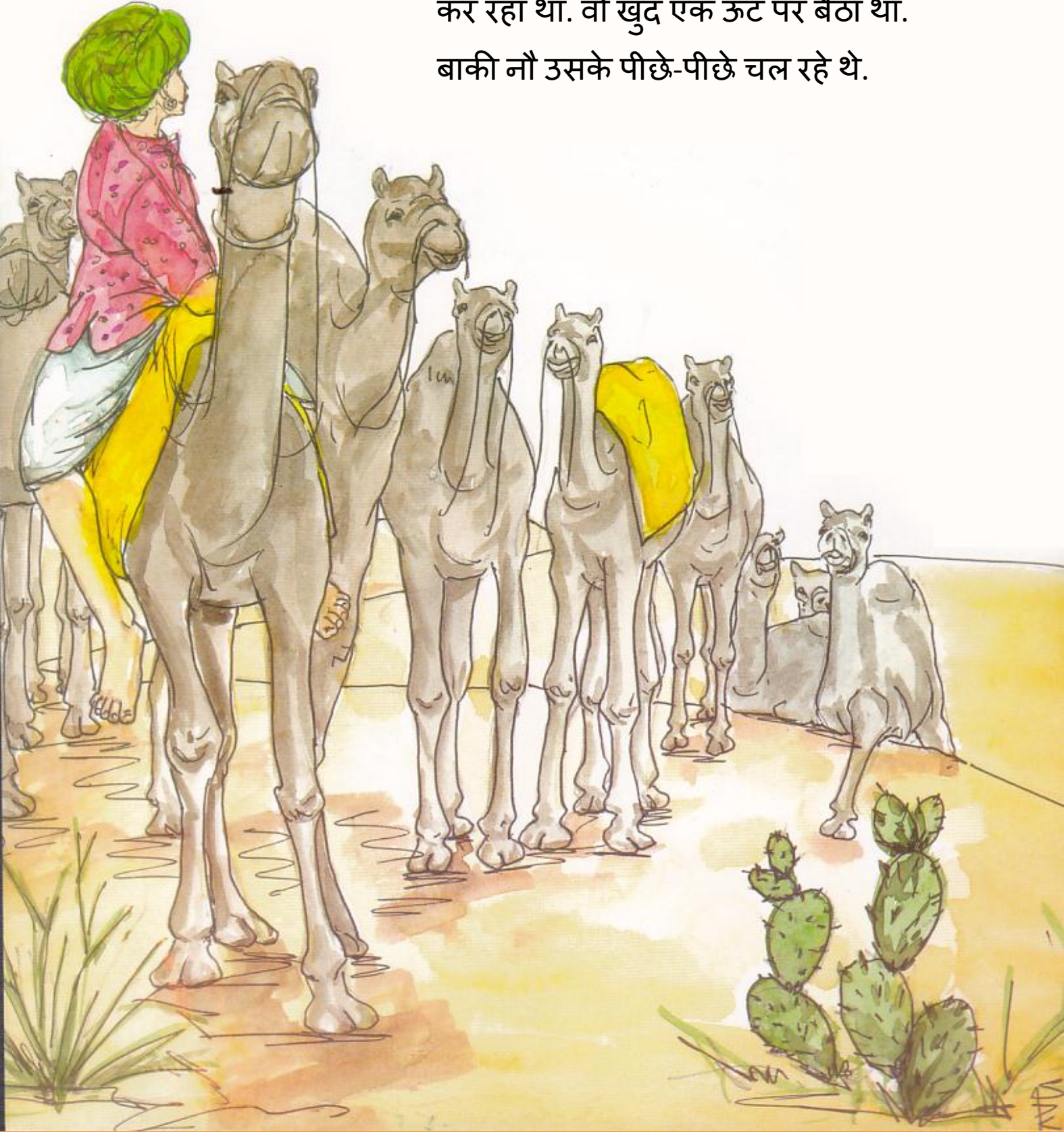
कुछ देर यात्रा करने के बाद वो यह सोचने लगा - क्या सभी ऊंट मेरे पीछे हैं?

फिर सौदागर मुड़ा और उसने ऊंटों को गिनना शुरू किया, 'एक, दो, तीन, चार, पांच, छह, सात, आठ, नौ. अरे नहीं! दसवां ऊंट गायब है!' फिर सौदागर खुद के ऊंट से नीचे उतरा और ज़ोर-ज़ोर से सोचने लगा.
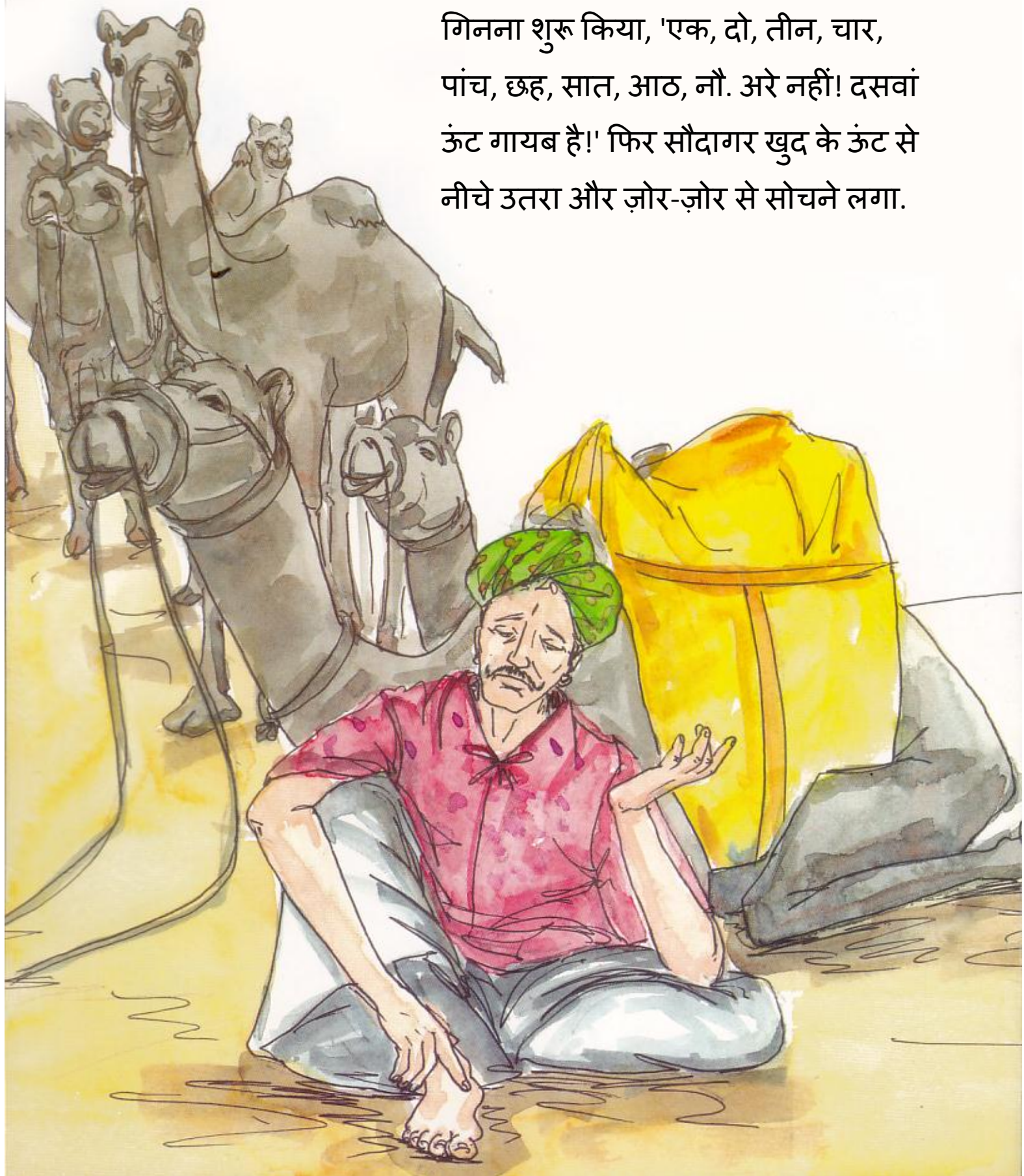
वो खोए हुए ऊंट को खोजने लगा. ऊंट नहीं मिलने पर वो वापिस लौटा और फिर से गिनने लगा. "एक, दो, ...... नौ, दस..."

उसने अपनी यात्रा ज़ारी रखी. कुछ देर बाद वो फिर से सोचने लगा - क्या मेरे सभी ऊंट मेरे पीछे-पीछे आ रहे हैं. उसने उन्हें दुबारा गिना और पाया कि वे सिर्फ नौ ही थे.

परेशान होकर सौदागर फिर अपने खुद के ऊंट से उतरा और खोए हुए ऊंट की तलाश करने लगा. पर तमाम कोशिश के बावजूद भी उसे ऊंट नहीं मिला.

आश्चर्य!! सभी दस ऊंट वहां थे.

सौदागर को कुछ समझ में नहीं आया. उसे वो सब कुछ जादुई लगा!!

'जब मैं ऊंट पर सवार था, तो एक ऊंट गायब था. पर जब मैं पैदल चला, तो मेरे दसों ऊंट मौजूद थे,' उसने सोचा.

फिर उसने निश्चय किया कि वो रेगिस्तान की तपती धूप में ऊंट पर सवारी नहीं करेगा और अपने दसों ऊंटों के साथ पैदल-पैदल ही चलेगा.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता
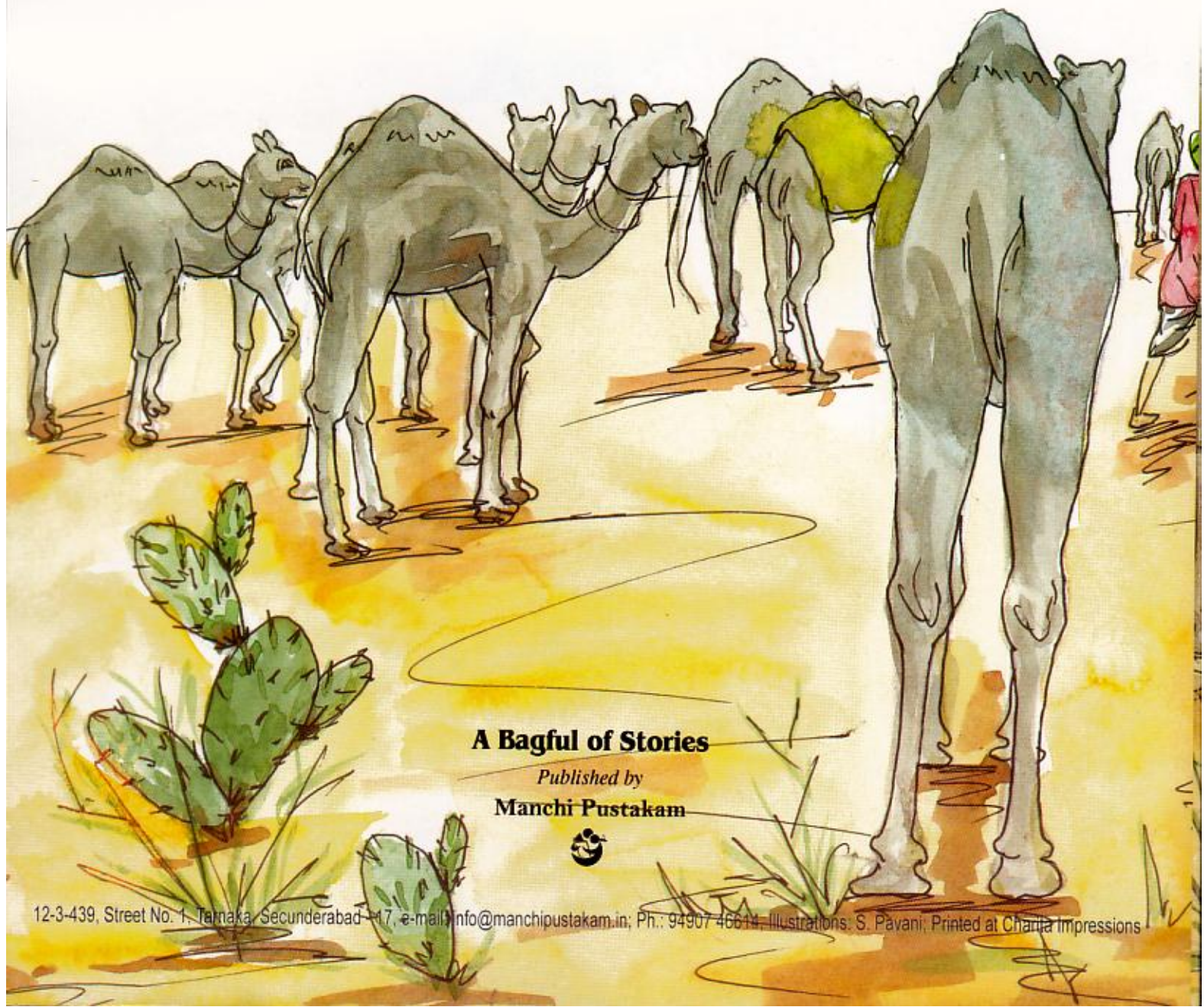
# कांटा खोया, उस्तरा पाया



एक बन्दर था. एक दिन उसके पैर में कांटा चुभ गया.

तभी उसके पास से एक नाई गुज़रा. बन्दर ने नाई से कांटा निकालने की प्रार्थना की. नाई, कांटा निकालने में सफल हुआ लेकिन निकालते समय कांटा दो हिस्सों में टूट गया.

"मुझे मेरा कांटा वापिस दो, नहीं तो मुझे अपना उस्तरा दो," बन्दर ने की मांग की. नाई के पास बन्दर को उस्तरा देने के अलावा और कोई चारा नहीं बचा.

फिर रास्ते में बन्दर को एक लकड़हारा मिला. "क्या तुम मुझे लकड़ियां काटने के लिए अपना उस्तरा दोगे?" लकड़हारे ने पूछा.

"ठीक है," बन्दर ने कहा. फिर उसने लकड़हारे को अपना उस्तरा दे दिया. लकड़ियां काटते समय उस्तरा टूट गया. "मुझे मेरा उस्तरा वापिस दो, नहीं तो मुझे  अपना लकड़ियों का गट्ठर दो," बन्दर ने मांग की. लकड़हारे के पास लकड़ियां देने के अलावा और कोई चारा नहीं बचा.

जब बन्दर लकड़ियां लेकर जा रहा था तो उसे एक बूढ़ी औरत मिली. बूढ़ी औरत के पास चीले बनाने के लिए आटा और तेल था. पर उसके पास आग जलाने के लिए लकड़ियां नहीं थीं.

"मुझे चीले बनाने हैं. क्या तुम मुझे अपनी लकड़ियां दोगे?" बूढ़ी औरत ने पूछा. "ठीक है," बन्दर ने कहा और उसने वो लकड़ियां बूढ़ी औरत को दे दीं. चीले बनने के बाद लकड़ियां राख बन गईं.

फिर बन्दर ने बूढ़ी औरत से कहा, "मुझे मेरी लकड़ियां वापिस दो, नहीं तो मुझे अपने चीले दो." बूढ़ी औरत के पास और कोई चारा नहीं बचा. उसे सारे चीले बन्दर को देने पड़े.

आगे रास्ते में जब बन्दर चीले लेकर जा रहा था तो उसे एक रोता हुआ बच्चा दिखा. "मेरा बच्चा भूख से रो रहा है. क्या तुम उसे अपने चीले दोगे?" बच्चे की माँ ने बन्दर से पूछा. बन्दर चीले देने को तैयार हो गया. भूखे बच्चे ने सारे चीले खा लिये.  पेट भरने के बाद बच्चा चुप हो गया.

फिर बन्दर ने बच्चे की माँ से मांग की, "मुझे मेरे चीले वापिस दो नहीं तो मुझे अपना बच्चा दो." माँ ने बहुत दुखी होकर अपना बच्चा बन्दर को दिया.

कुछ देर आगे चलने के बाद बन्दर को एक सर्कस मंडली मिली. उसका जोकर एक ढोलक बजा रहा था. बन्दर को ढोलक बजते देखकर बड़ा मज़ा आया. उसने जोकर से कहा, "तुम मुझे अपनी ढोलक दे दो और यह बच्चा ले लो."

जोकर ने बन्दर की बात मान ली.

फिर ढोलक बजाते-बजाते बन्दर ने यह गीत गाया :

"कांटा खोया, उस्तरा पाया

टम, टम, टम.......

उस्तरा खोया, लकड़ी पाईं

टम, टम, टम.......

लकड़ी खोई, चीले पाए

टम, टम, टम.......

चीले खोए, बच्चा पाया

टम, टम, टम.......

"टम, टम, टम!"

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**

*Published by*

**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# ताड़ का पेड़, बरगद का पेड़



एक बार एक कौवे ने ताड़ के पेड़ पर एक बरगद का बीज डाल दिया.

ताड़ ने जब बरगद का छोटे बीज देखा तो उसने उसका मज़ाक बनाया. "देखो, मेरे फल आदमी के सिर जितने बड़े हैं. क्योंकि मेरे फल लोहे की गेंदों जैसे दिखते हैं इसलिए किसी की भी मेरी छांव के नीचे खड़े होने की हिम्मत नहीं होती है. ज़रा देखो, तुम्हारे बीज कितने छोटे हैं! इतने छोटे बीजों से कोई बड़ा पेड़ भला कैसे पैदा होगा?"

उसके बाद दिन बीतते गए. ताड़ का पेड़, बरगद के पेड़ के बारे में भूल गया. बरगद का बीज अंकुरित हुआ और उसमें से एक छोटा सा पौधा बाहर निकला.

ताड़ के पेड़ ने बरगद के छोटे पौधे से कहा : "तुम इतने छोटे से बीज से पैदा हुए हो, तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते हो. मैं बहुत ताकतवर हूँ."

ताड़ के पेड़ ने कई बार इस तरह की डींग मारी, मगर बरगद के पेड़ ने कभी एक शब्द भी नहीं कहा.

पर हर दिन बरगद का पेड़
कुछ बड़ा और बड़ा होता गया.

कुछ समय बाद वो ताड़ के पेड़
से भी बड़ा हो गया.

.

कुछ सालों के
बाद बरगद की
लटकती जड़ों में
ताड़ का पेड़ फंस
गया और धीरे-
धीरे करके मर
गया
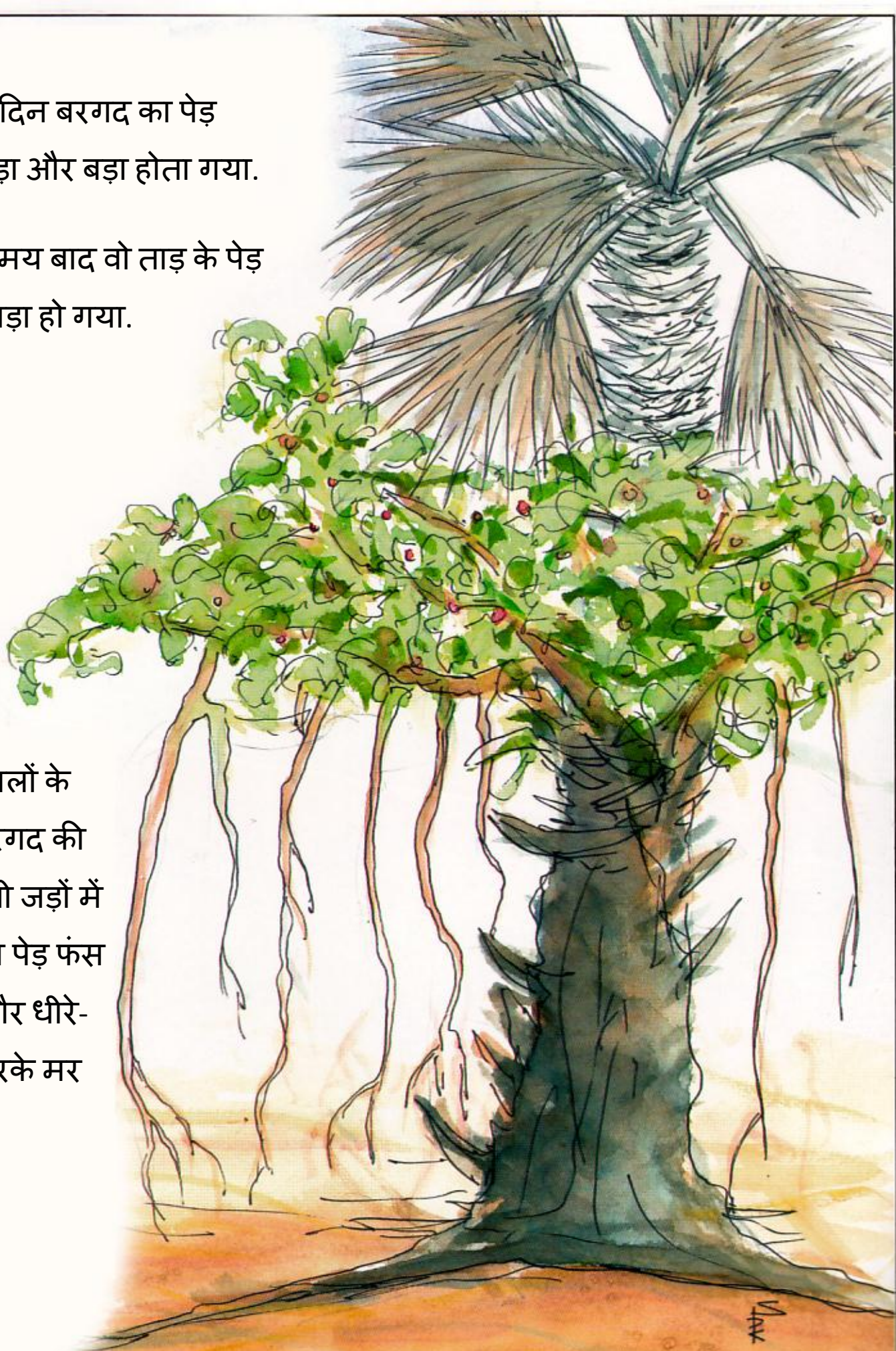
# पांव के निशान

एक बूढ़ा शेर था. उससे अब शिकार नहीं होता था. इसलिए वो एक गुफा में घुस गया और बीमार होने का बहाना करने लगा. बहुत से जानवर बीमार शेर को देखने के लिए आते. जो भी जानवर गुफा में घुसता, उसे शेर चुपचाप खा जाता था.

एक दिन एक लोमड़ी, शेर से मिलने के लिए आई. गुफा के बाहर खड़े होकर लोमड़ी ने पूछा, "महाराज शेर, आपकी तबियत कैसी है?"

"मैं बहुत बीमार हूँ," शेर ने कहा. "तुम मुझ से मिलने के लिए गुफा के अंदर क्यों नहीं आतीं?"

"मुझे आपकी गुफा में सिर्फ अंदर जाते हुए पैरों के निशान ही दिख रहे हैं, पर वहां बाहर आता हुआ कोई निशान नहीं है. इसलिए मैं अंदर नहीं आऊंगी," लोमड़ी ने जवाब दिया.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# सुई लाना
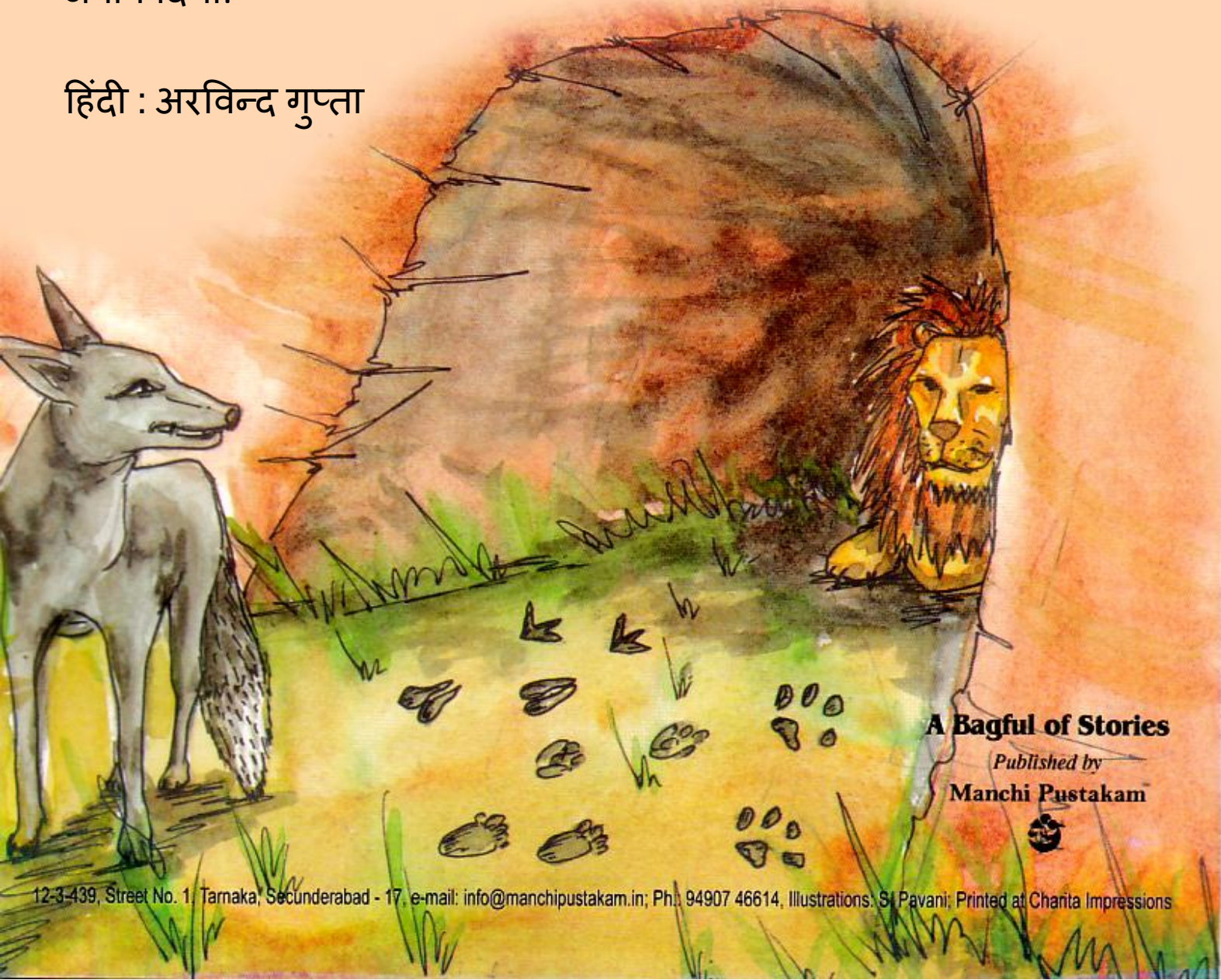
एक दिन परमानन्द ने अपने शिष्यों को बुलाया और उनसे पड़ोस के किसान से एक सुई उधार लाने को कहा.

शिष्य, किसान के घर गए और उन्होंने उससे सुई मांगी. किसान अपने घर में गया और उसने उन्हें सुई लाकर  दी.

तब तक शिष्य आपस में इस बात पर एक-दूसरे से लड़ रहे थे, कि वे सुई को कैसे वापिस लेकर जाएं.
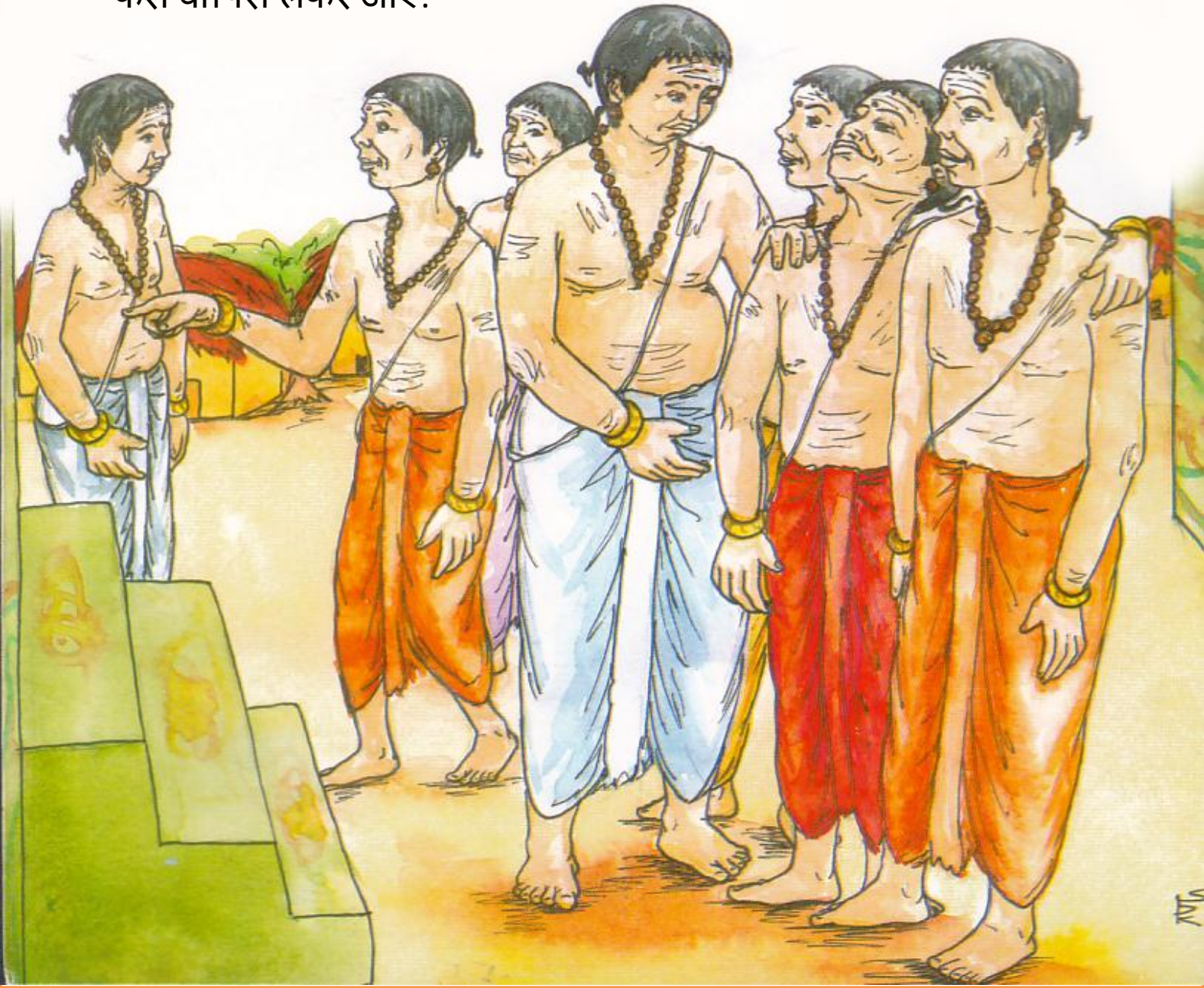
"तुम में से कोई एक उसे आसानी से ले जा सकता है," किसान ने कहा.

"महाशय, हम जो कुछ भी करेंगे, साथ मिलकर करेंगे," शिष्यों ने कहा.

यह सुनकर किसान मुस्कुराया और उसने कहा, "मेरे पिछवाड़े में एक ताड़ के पेड़ का तना पड़ा है. तुम उसमें सुई घुसा दो, और फिर तने को उठाकर ले जाओ," शिष्यों को किसान का सुझाव बहुत पसंद आया
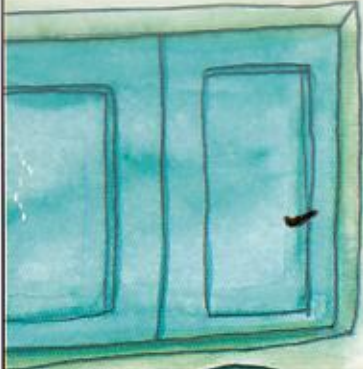
शिष्यों ने सुई को पेड़ के तने में घुसाया और
फिर उसे उठा कर अपने गुरु के पास ले गए.
गांव के लोगों को यह बड़ा अजीब लगा पर
शिष्यों ने इसकी कोई परवाह नहीं की.

पर जब गुरु ने उन्हें एक पेड़ का बड़ा तना लाते
हुए देखा तो उन्हें बड़ा ताज़ुब हुआ.
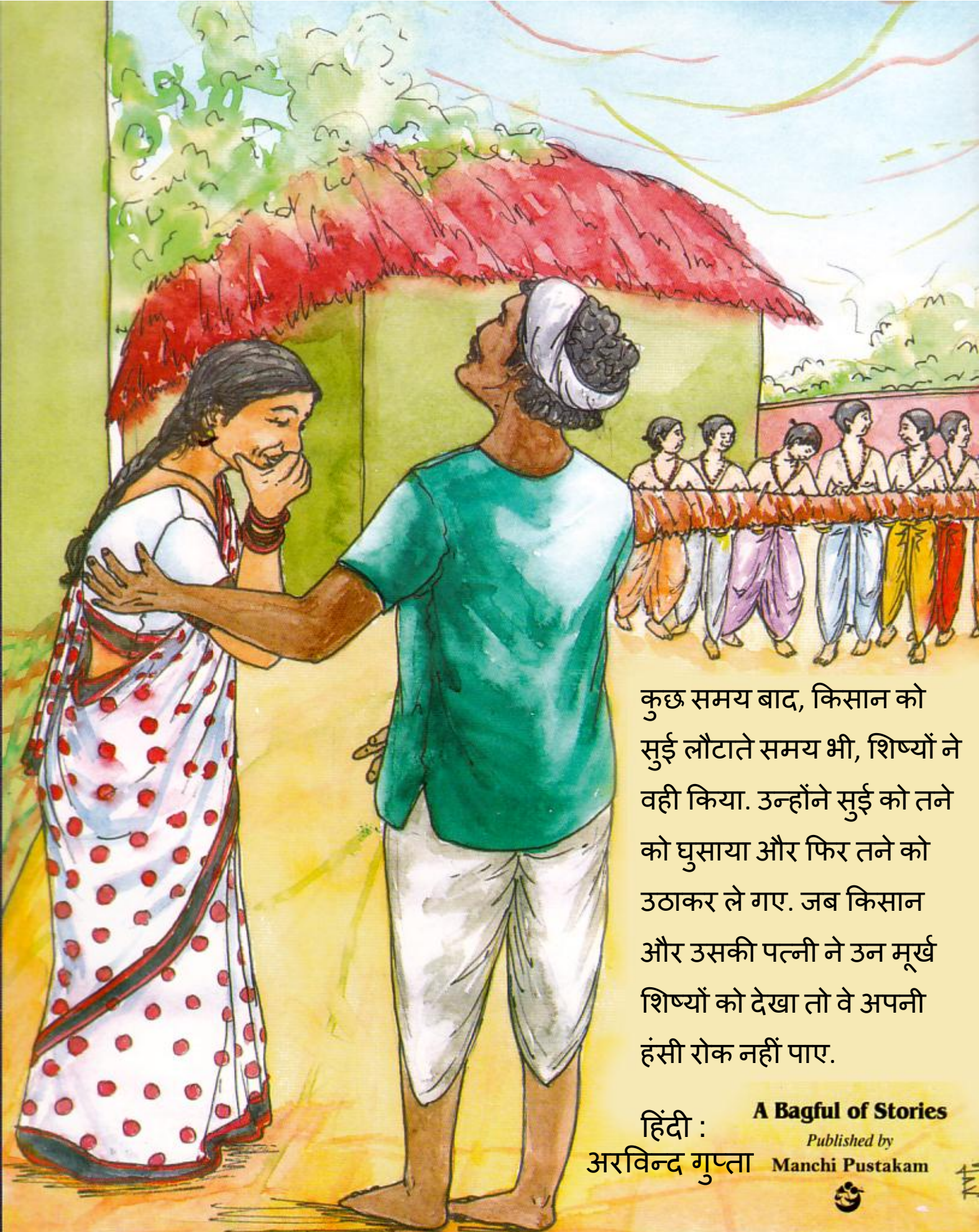
कुछ समय बाद, किसान को सुई लौटाते समय भी, शिष्यों ने वही किया. उन्होंने सुई को तने को घुसाया और फिर तने को उठाकर ले गए. जब किसान और उसकी पत्नी ने उन मूर्ख शिष्यों को देखा तो वे अपनी हंसी रोक नहीं पाए.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**

*Published by*

**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# हिरण और घोड़ा

बहुत पहले घोड़े भी जंगल में ही रहते थे.

एक बार एक हिरण और घोड़े में लड़ाई हुई. हिरण ने घोड़े को, अपने सींगों से मारकर भगा दिया.
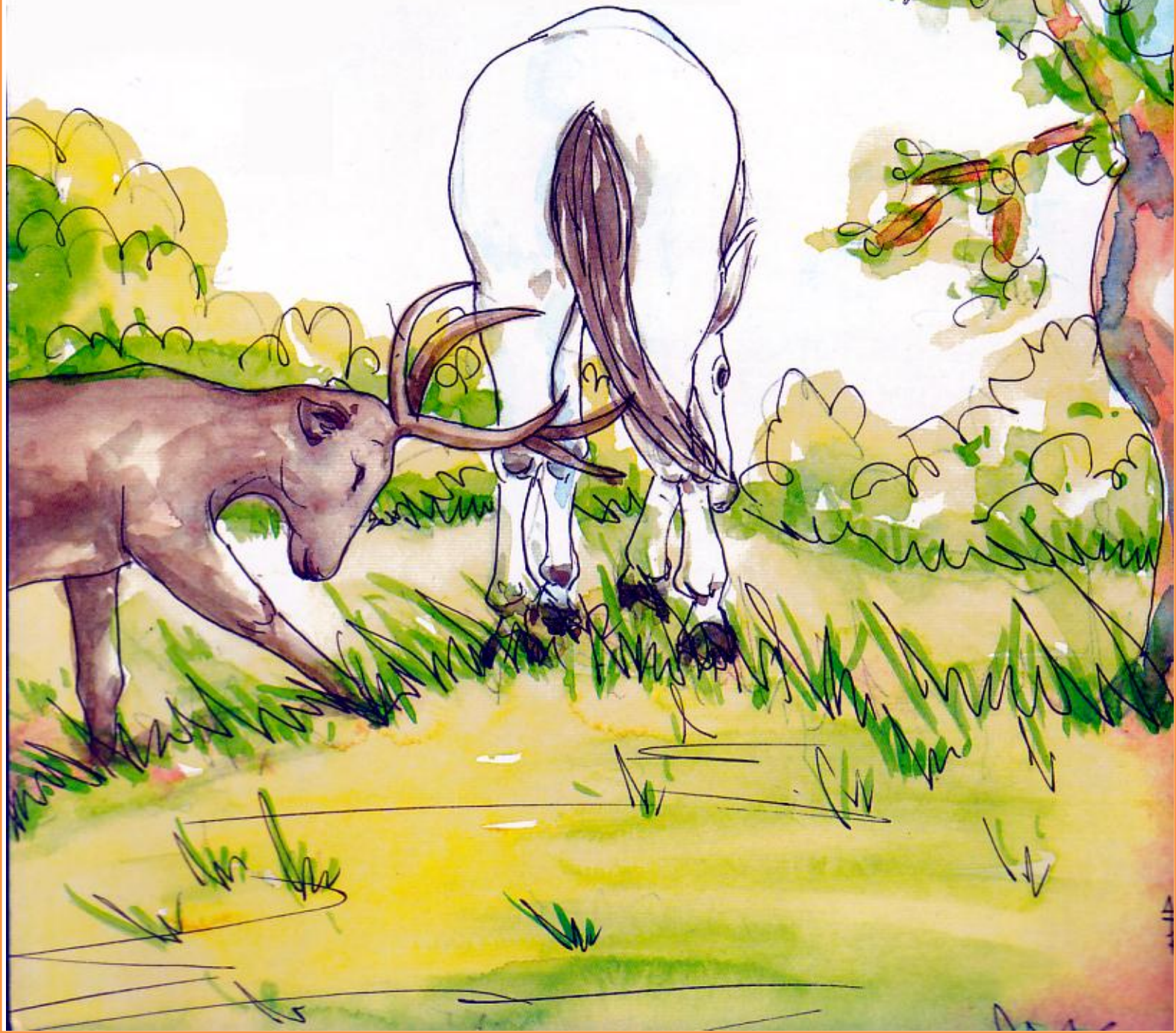
फिर घोड़े ने एक आदमी से मदद मांगी. आदमी ने घोड़े पर काठी बाँधी और फिर वो उस पर सवार हुआ. फिर उसने हिरण को वहां से खदेड़ दिया.

"भाई आदमी, तुमने सच में मेरी बहुत मदद की है. तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद! मैं अब तुमसे विदा लूँगा," घोड़े के कहा.

"तुम भी मेरे लिए बड़े काम के हो. अब मैं तुम्हें जाने नहीं दूंगा," आदमी ने कहा. तब से आदमी ने घोड़े से काम करवाया है.
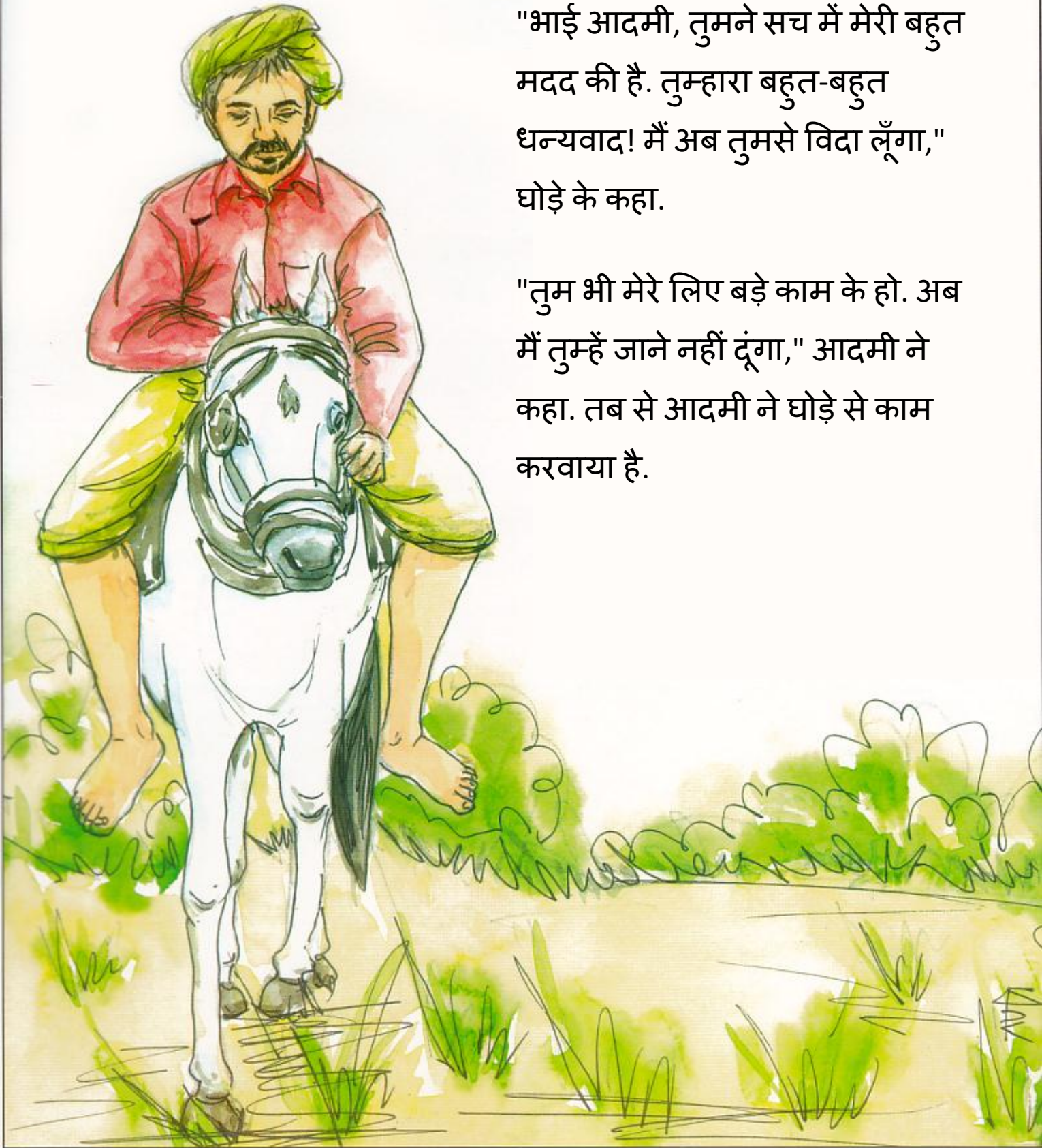
# जीवन का सबक

ईश्वरैया एक विद्वान था, और उसे बहुत सारे शास्त्र पढ़ने का बड़ा घमंड था. एक बार उसे नदी पार दूसरे गांव जाना था. उसने यात्रा के लिए एक नाव ली.

ईश्वरैया ने नाविक से पूछा, "क्या तुम कुछ भूगोल के बारे में जानते हो?"

"नहीं ज़नाब! मैं भूगोल के बारे में कुछ नहीं जानता," नाविक ने जवाब दिया.

"तब तुम्हारी आधी ज़िंदगी बेकार गई. अच्छा, क्या तुमने समुद्र के नियमों के बारे में पढ़ा है?" उसने पूछा.

"नहीं ज़नाब! " नाविक ने जवाब दिया.

"फिर तुम्हारी पूरी ज़िंदगी बेकार हुई. कम-से-कम अब तो तुम कुछ शास्त्र पढ़ना शुरू करो," ईश्वरैया ने कहा.

अचानक बहुत ज़ोर का तूफ़ान आया. "अब मेरी नाव किसी भी समय डूब सकती है. हम लोगों को कूदकर किनारे तक तैरकर जाना चाहिए," नाविक ने कहा. "क्या आपको तैरना आता है?"

"नहीं मुझे तैरना नहीं आता है. मैं तो एक विद्वान हूँ. कृपा मुझे बचाओ!" यह कहकर ईश्वरैया रोने लगा.

"महाशय, मैं आपको बचा नहीं पाऊंगा. क्योंकि आपने तैरना नहीं सीखा है, इसलिए आपकी जान को खतरा है. मैंने चाहें शास्त्र न पढ़ें हों, पर मैंने जीवन का सबक ज़रूर सीखा है!" यह कह कर नाविक नाव से कूदकर नदी के किनारे की तरफ तैरा.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**

*Published by*

**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# घर बदलो



एक गांव में एक अमीर आदमी रहता था. उसके घर के दाईं ओर एक लोहार का घर और बाईं ओर एक बढ़ई का घर था. लोहार क्योंकि लोहा पीटता था इसलिए उसके घर से दिन भर "ठोक! ठोक!" की आवाज़ आती थी. और क्योंकि बढ़ई दिन भर आरी से लकड़ी काटता था इसलिए उसके घर से लगातार "खर! खर!" की आवाज़ आती थी.

अमीर आदमी को वो शोर, बहुत तंग करता था.

'मैं इस शोर को कैसे बंद कर सकता हूँ?' अमीर आदमी ने कई दिनों तक उसके बारे में सोचा. अंत में उसे एक हल नज़र आया.

उसने लोहार और बढ़ई दोनों को बुलाया और कहा : "मैं तुम्हारे द्वारा पैदा शोर के कारण आराम से सो नहीं पाता हूँ. अगर तुम दोनों यहाँ से किसी दूसरी जगह पर शिफ्ट हो जाओ तो मैं तुम्हें खूब पैसे दूंगा."

"ठीक है! आप जैसा चाहते हैं हम वैसा ही करेंगे!" दोनों ने अमीर से कहा. फिर अमीर से पैसे लेकर वे वहां से चले गए.

जब अमीर ने देखा कि वो अपना सामान ठेलों पर लाद रहे थे तो वो खुश हुआ. 'भगवान की बड़ी कृपा हुई! अब मैं शांति से रह सकूंगा,' उसने सोचा.

पर अगले ही दिन अमीर को फिर से वही शोर सुनाई दिया. कहीं लोहार और बढ़ई ने उसे धोखा तो नहीं दिया? मामले की जांच करने के लिए उसने अपने नौकर को भेजा.

नौकर ने आकर बताया कि लोहार और बढ़ई दोनों ने समझौते के अनुसार अपने-अपने घर शिफ्ट किए थे. बढ़ई अब लोहार के घर में शिफ्ट हो गया था और लोहार, बढ़ई के घर में शिफ्ट हो गया था.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**
*Published by*
**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions
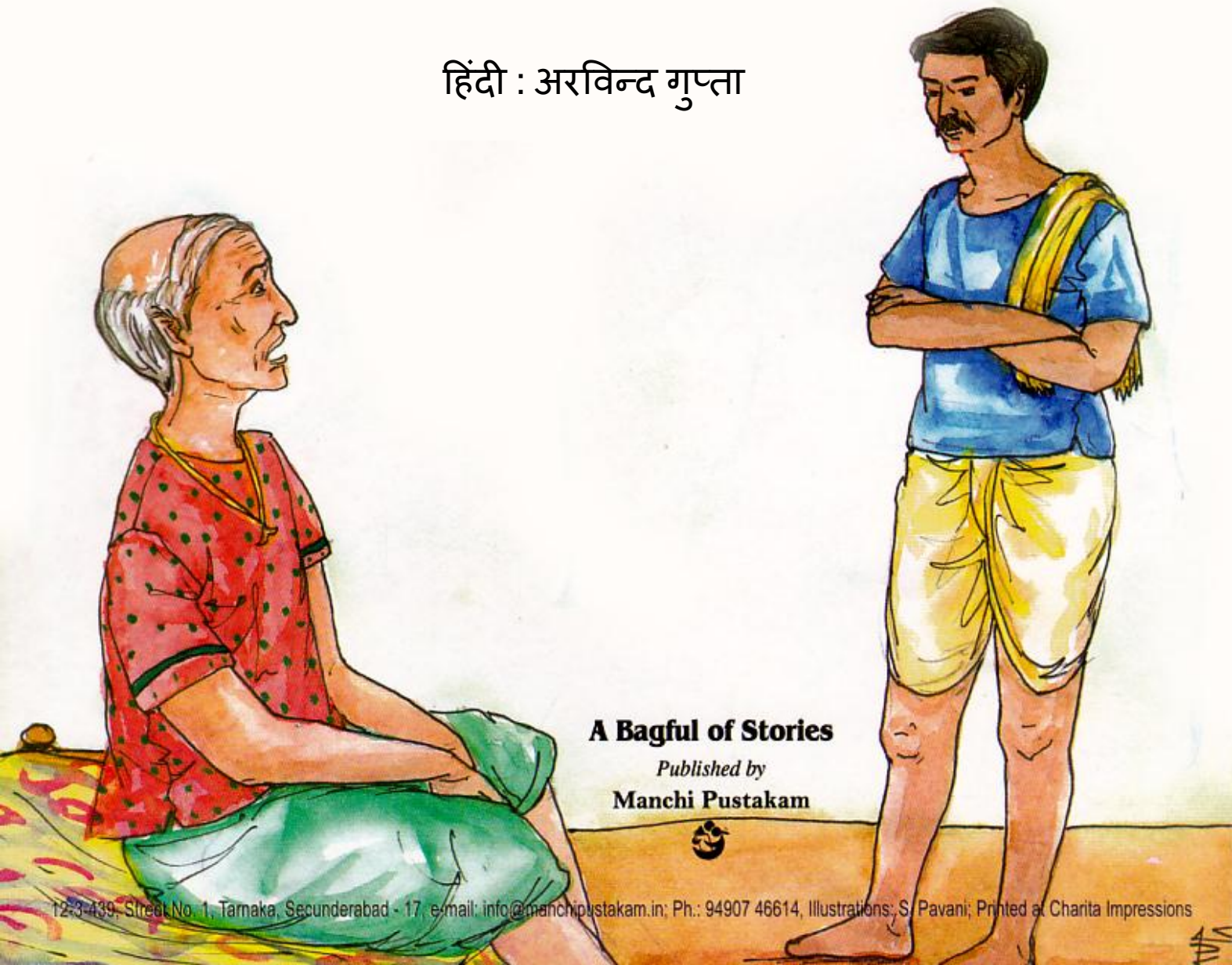
# सिक्कों वाला पेड़

पुराने ज़माने में एक राजा था. रोज़ाना वो शिकार करने जाता था. एक दिन बड़ी अजीब बात हुई. राजा ने एक बूढ़े आदमी को एक आम का पौधा लगाते हुए देखा.

"बाबा, आप बड़े भोले हैं! इस पेड़ को बढ़ने में न जाने कितने साल लगेंगे? उसमें फल कब लगेंगे? क्या आप तब तक ज़िंदा रहेंगे? राजा ने सवाल पूछे.
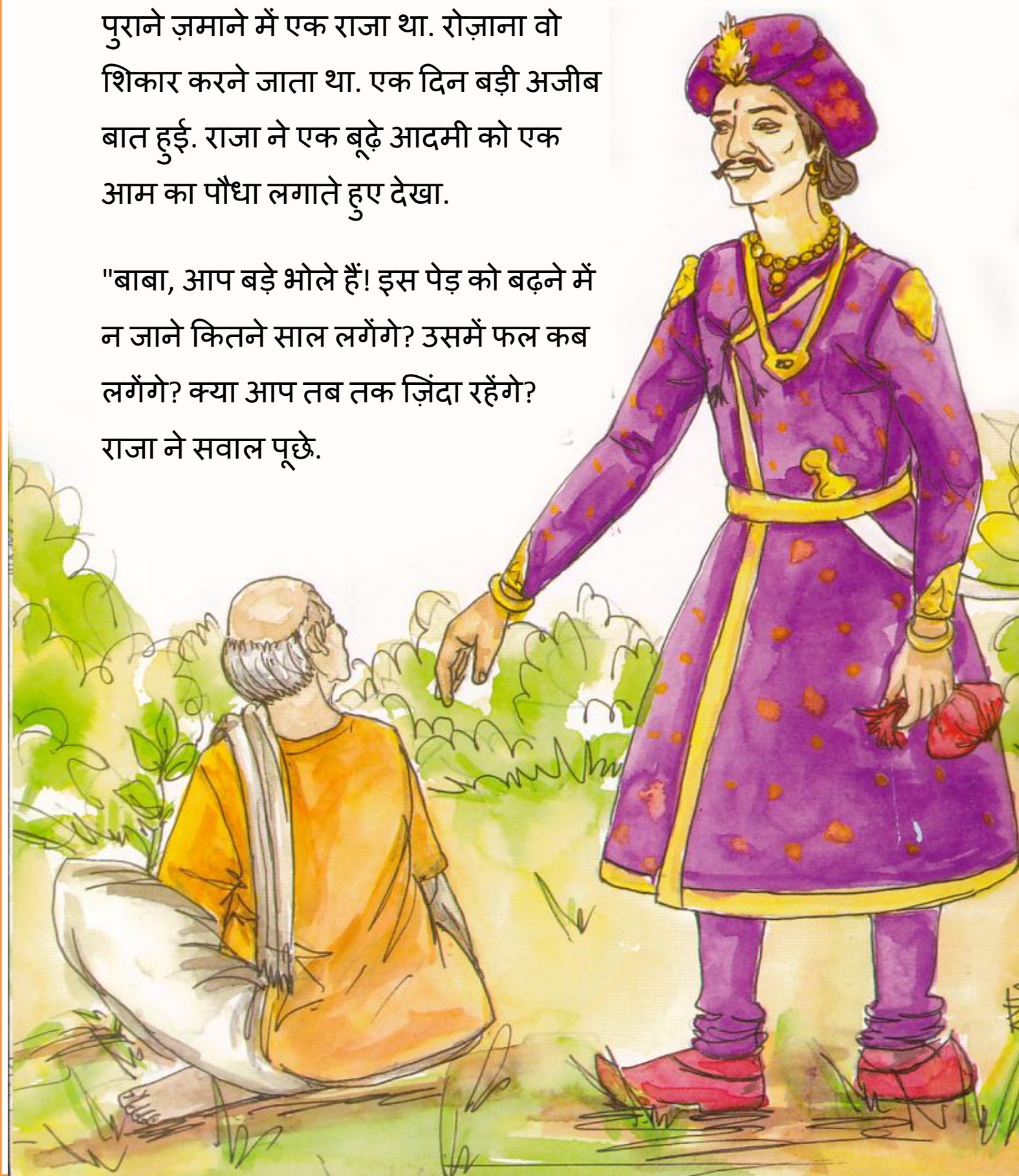
"महान राजा! जब आम के पेड़ में फल लगेंगे तब तक मैं शायद जीवित न रहूं. पर मेरे बच्चे और नाती-पाती उन फलों को खाएंगे और मुझे याद करेंगे."

राजा उस बूढ़े आदमी के उत्तर से बहुत प्रसन्न हुआ. उसने बूढ़े आदमी को दस सोने के सिक्कों का पुरुस्कार दिया. "महान राजा! जिस दिन मैंने पौधा लगाया उसी दिन से उसने सोने के सिक्के देना शुरू कर दिए," बूढ़े आदमी ने कहा.
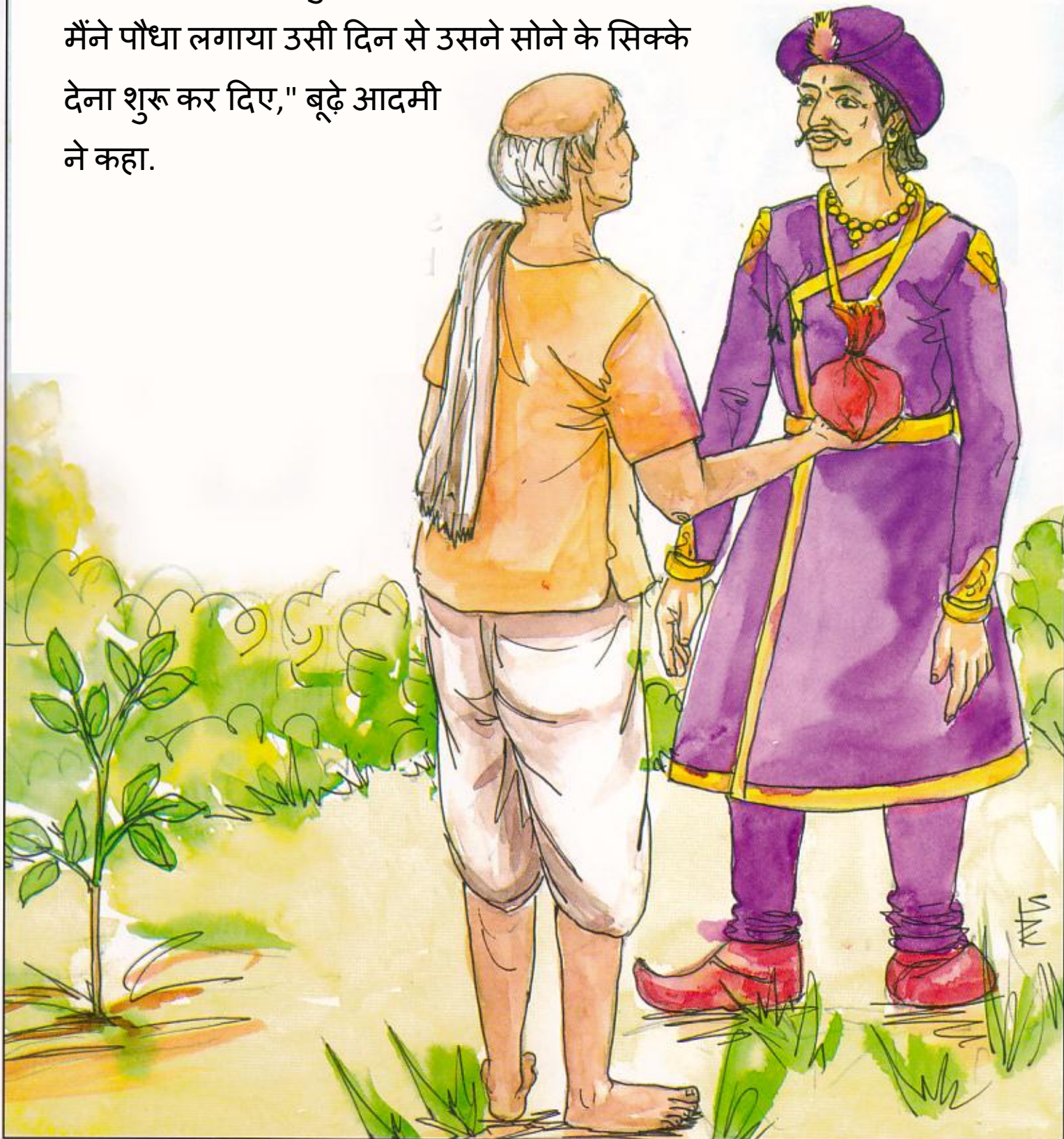
# किसान और नदी की देवी

एक किसान की कुल्हाड़ी नदी में गिर गई. बेचारा नदी के तट पर बैठकर रोने लगा. नदी की देवी को किसान पर तरस आया.

नदी की देवी पानी से एक सोने की कुल्हाड़ी निकालकर लाईं और उन्होंने पूछा : "क्या यह तुम्हारी कुल्हाड़ी है?" "नहीं, वो मेरी नहीं है," किसान ने कहा. फिर नदी की देवी एक चांदी की कुल्हाड़ी लेकर लौटीं. "यह भी मेरी नहीं है," किसान ने कहा. अंत में नदी की देवी एक लोहे की कुल्हाड़ी लाईं. "हाँ, यह कुल्हाड़ी मेरी है!" किसान ख़ुशी से चिल्लाया. किसान की सच्चाई देखकर नदी की देवी प्रसन्न हुईं और उन्होंने किसान को तीनों कुल्हाड़ियां दे दीं.
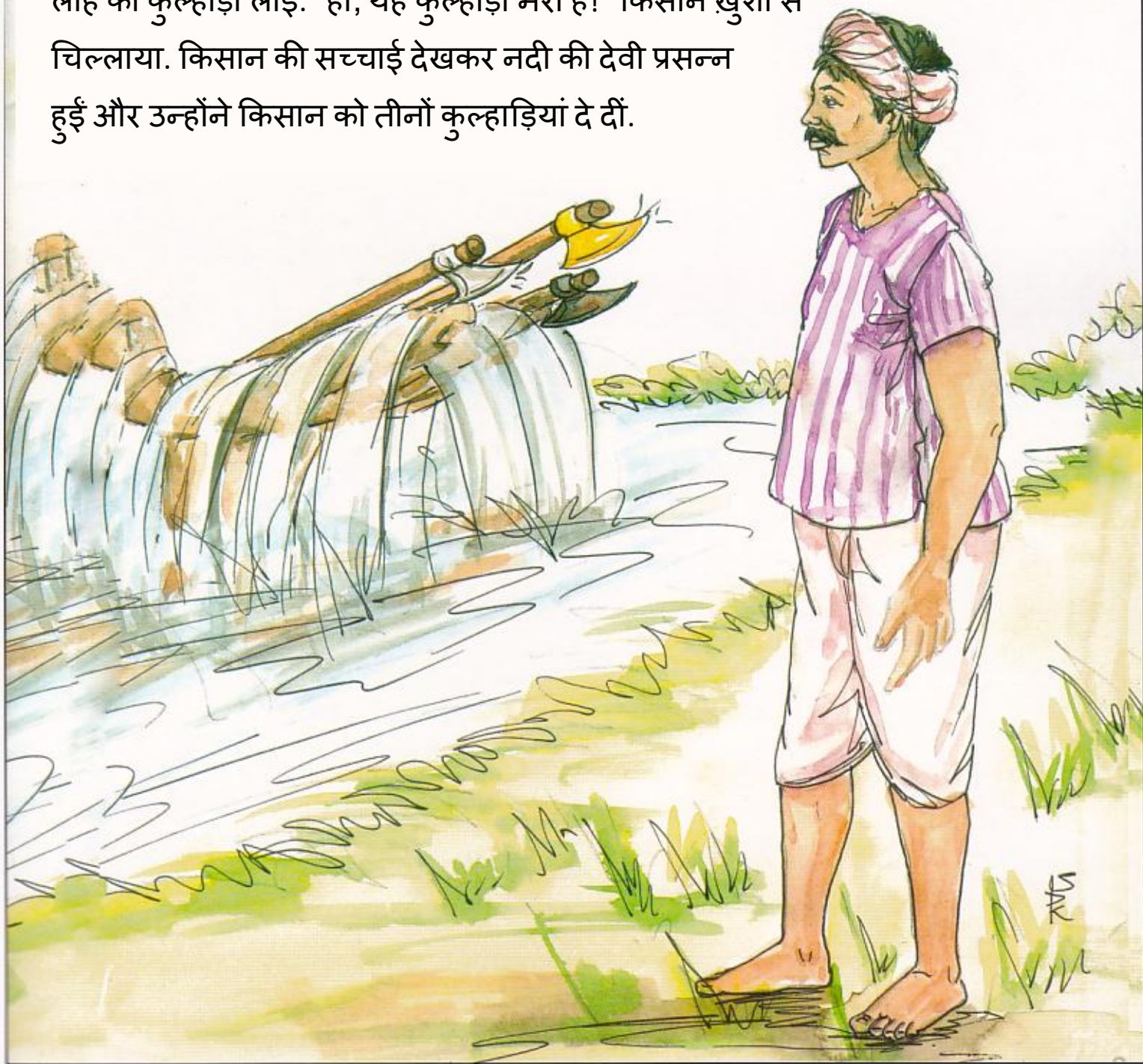
उसके बाद किसान घर लौटा. उसने अपने मित्रों को वो कहानी सुनाई और उन्हें तीनों कुल्हाड़ियां दिखाईं.

किसान का एक दोस्त बहुत लालची था. वो भी नदी किनारे गया. उसने अपनी कुल्हाड़ी जानबूझ कर नदी में फेंक दी और फिर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा. नदी की देवी एक सोने की कुल्हाड़ी लेकर आयीं और उन्होंने उससे पूछा, "क्या यह तुम्हारी है?" ख़ुशी से पागल होकर वो आदमी चिल्लाया, "हाँ! हाँ! वो कुल्हाड़ी मेरी है." क्योकि वो झूठ बोल रहा था इसलिए नदी की देवी ने उसे न सोने वाली बल्कि उसकी लोहे की कुल्हाड़ी भी नहीं दी.

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**

*Published by*

**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# जो छूए वो सोना



एक गांव में कोटया नाम का एक व्यापारी रहता था. उसके पास इतना सारा धन था कि लोग उसे "सिक्कों वाला कोटया" कहकर बुलाते थे. उसके पास बहुत सोना भी था. पर वो उससे खुश नहीं था क्योंकि वो और सोना चाहता था.

एक दिन कोटया सुबह बहुत जल्दी उठा और उसने नदी में स्नान किया. फिर उसने समीप के मंदिर में जाकर प्रार्थना की.

उससे प्रसन्न होकर देवी प्रगट हुईं और उन्होंने कहा : "चलो, एक इच्छा मांगो." "मैं बहुत सारा सोना चाहता हूँ," कोटया ने अपनी इच्छा ज़ाहिर की. "मैं जिस चीज़ को भी छूं वो सोने में बदल जाए," "ठीक! वैसा ही होगा!" देवी ने कहा.
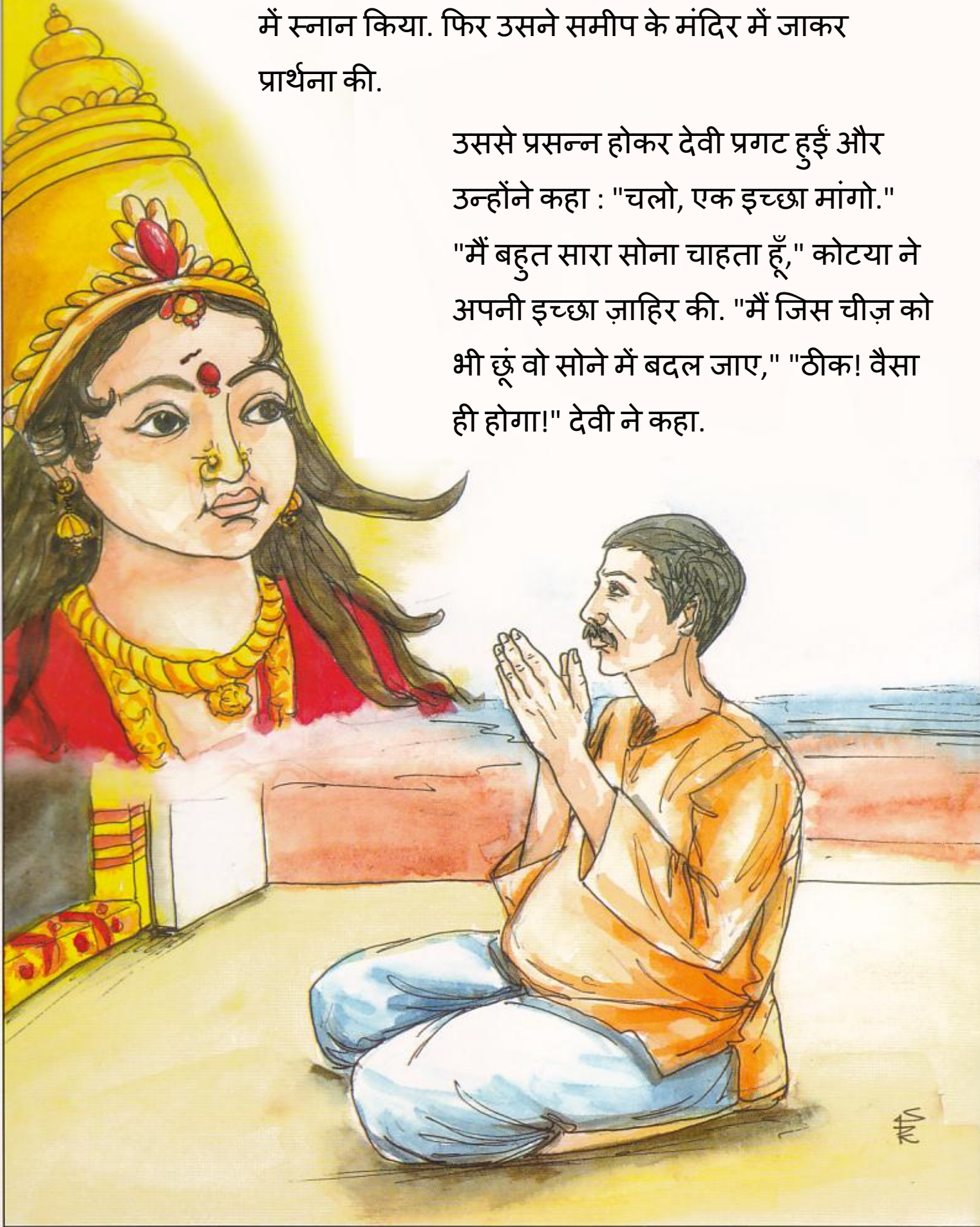
घर लौटकर "सिक्कों वाले कोटया" ने अपनी खाट छुई. वो तुरंत सोने की बन गई. उसने बगीचे में जाकर कुछ पौधे छुए, वे भी तुरंत सोने में बदल गए. उसने कपास के पौधों को छुआ, वे भी सोने में बदल गए.

घर के अंदर जाकर कोटया ने अपनी पत्नी से खाना लाने को कहा. पर जैसे ही उसने थाली छुई सारा खाना सोने में बदल गया. उसे बहुत प्यास लगी थी, इसलिए उसने पानी पीने की कोशिश की. पर गिलास और पानी दोनों सोने के बदल गए. अभी तक कोटया काफी खुश था. पर अब उसे ज़बरदस्त भूख और प्यास लगी थी.
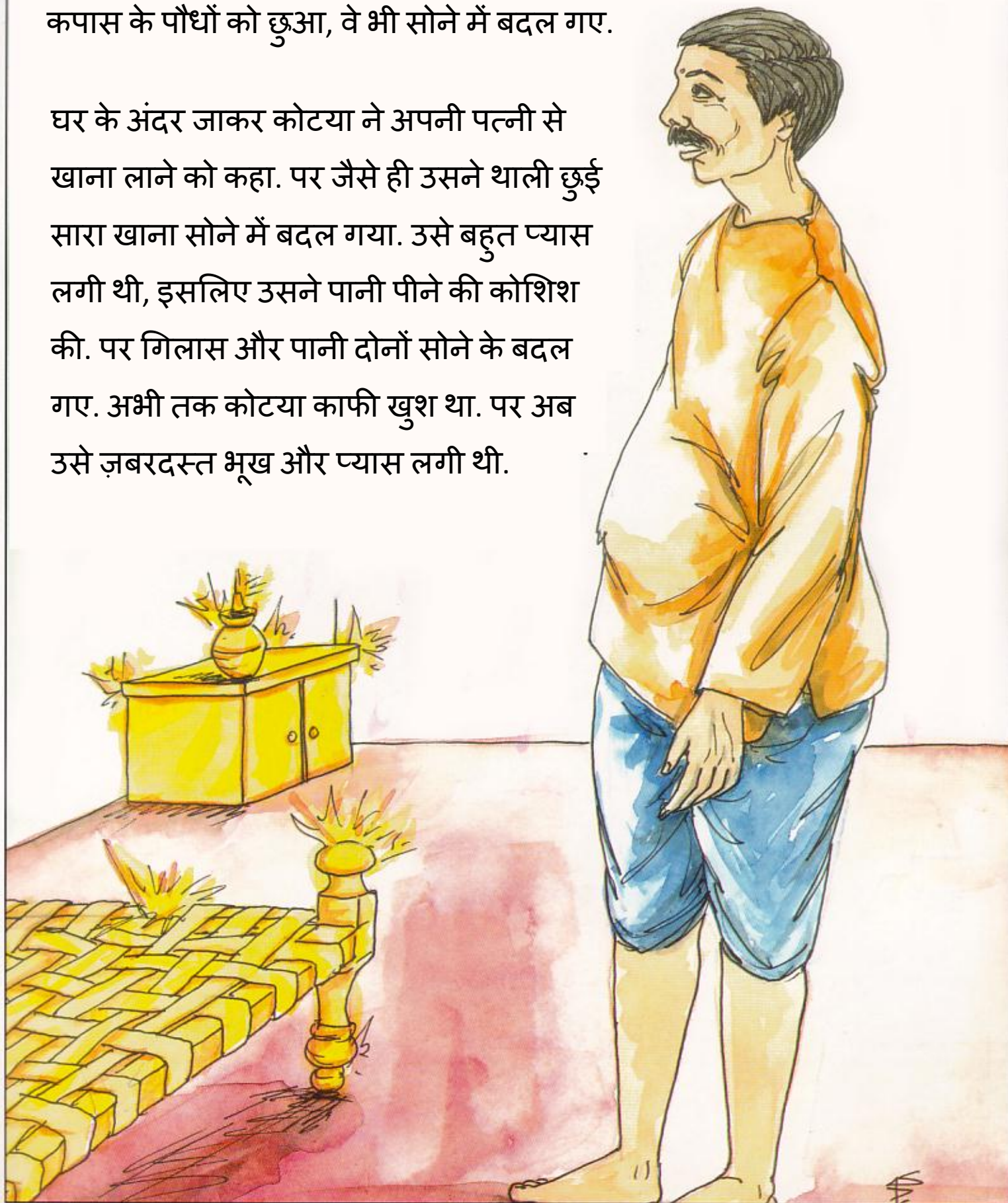
तभी उसकी बेटी कमरे में आई. कोटया ने अपनी बेटी के कंधे पर हाथ रखा. तुरंत उसकी बेटी एक सोने की मूर्ती में बदल गई.

उसके बाद "सिक्कों वाला कोटया" दुखी होकर रोने लगा. उसने देवी से मदद की प्रार्थना की. देवी दुबारा प्रगट हुईं. "मुझे सोना नहीं, अपनी बेटी वापिस चाहिए. कृपा कर आप अपने वरदान को वापिस लें." यह कहकर कोटया, देवी के चरणों में गिर गया.

फिर देवी ने वही किया. सब कुछ पहले जैसा ही सामान्य हो गया.

कोटया अपनी बेटी को दुबारा जीवित देखकर बेहद खुश हुआ.

हिंदी :
अरविन्द गुप्ता

A Bagful of Stories
Published by
Manchi Pustakam

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions

# बटेर के बच्चे



एक बटेर ने ज्वार के खेत में अपना घोंसला बनाया था, जहाँ वो अपने छोटे बच्चों को पालती थी. पर अब ज्वार की फसल, कटनी के लिए तैयार थी. जब बटेर खाना ढूंढ़ने गई तो उसने अपने बच्चों से कहा कि जब किसान खेत में आएं तो वे उनके बीच की बातचीत को ध्यान से सुनें और बाद में उसे बताएं.

जब शाम को माँ बटेर अपने घोंसले में वापिस आई तो बच्चों ने उसे डरते-डरते बताया. "माँ, आज किसान खेत में अपने लड़कों के साथ आया था. उसने अपने लड़कों से फसल काटने के लिए रिश्तेदारों को बुलाने के लिए कहा."

"हमें डरने की कोई ज़रुरत नहीं है. वे कल फसल नहीं काटेंगे," माँ बटेर ने कहा. "बिल्कुल डरो मत! कल किसान फसल नहीं काटेगा," माँ बटेर ने बच्चों को दिलासा दी.
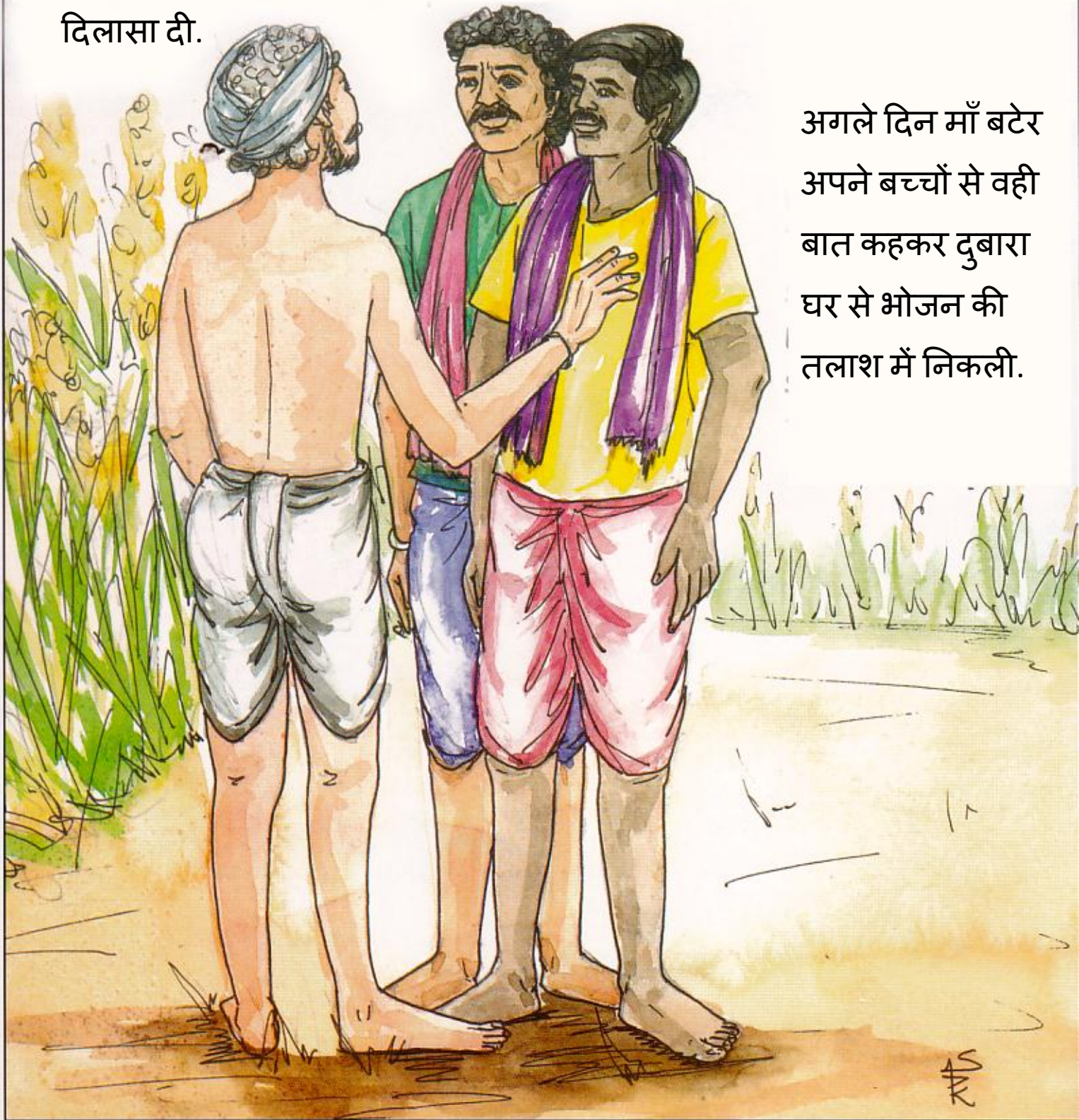
अगले दिन माँ बटेर अपने बच्चों से वही बात कहकर दुबारा घर से भोजन की तलाश में निकली.

शाम को बच्चों ने अपनी माँ को बताया, "माँ, आज भी किसान अपने लड़कों के साथ आया था. ऐसा लगता है जैसे उसके रिश्तेदार बहुत व्यस्त हैं. इसलिए कल वो पड़ोसियों की मदद से फसल काटेगा."
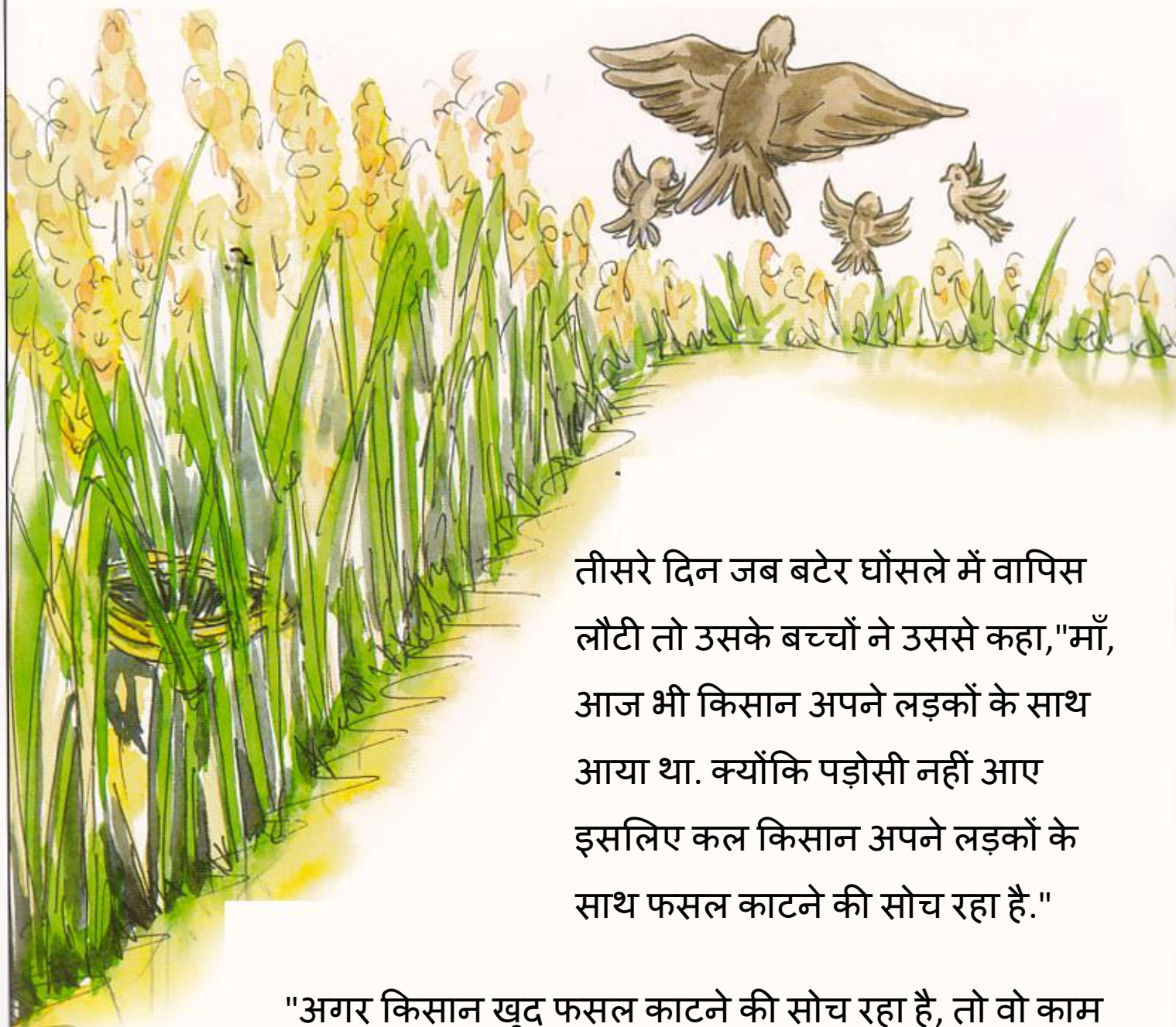
तीसरे दिन जब बटेर घोंसले में वापिस लौटी तो उसके बच्चों ने उससे कहा,"माँ, आज भी किसान अपने लड़कों के साथ आया था. क्योंकि पड़ोसी नहीं आए इसलिए कल किसान अपने लड़कों के साथ फसल काटने की सोच रहा है."

"अगर किसान खुद फसल काटने की सोच रहा है, तो वो काम ज़रूर पूरा करेगा. चलो, हम लोग तुरंत किसी दूसरे सुरक्षित स्थान पर चलते हैं," बटेर ने कहा. फिर वे तुरंत उड़कर एक नई जगह पर गए.

# कछुए ने एक सबक सीखा

कछुए ने एक बार चील से उसे उड़ना सिखाने को कहा.

चील ने उसे समझाया कि कछुए के लिए उड़ना सीखना संभव नहीं होगा.

परन्तु कछुआ अपनी ज़िद्द पर अड़ा रहा.

फिर चील ने कछुए को अपने पंजों से उठाया और वो आसमान में ऊंचाई तक उड़ी. वहां से उसने कछुए से नीचे देखने को कहा. कछुए ने देखा कि वो अब ज़मीन से कितनी अधिक ऊंचाई पर था. 'अगर मैं यहाँ से ज़मीन पर गिरा तो मेरा खोल टूट जाएगा और मैं ज़रूर मर जाऊँगा,' कछुए ने सोचा. "अब मैं उड़ना सीखना नहीं चाहता हूँ," उसने चील से कहा. "अब तुम मुझे वापिस ज़मीन पर ले चलो."

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**

*Published by*

**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614, Illustrations: S. Pavani, Printed at Charita Impressions

# नाला पार करना?
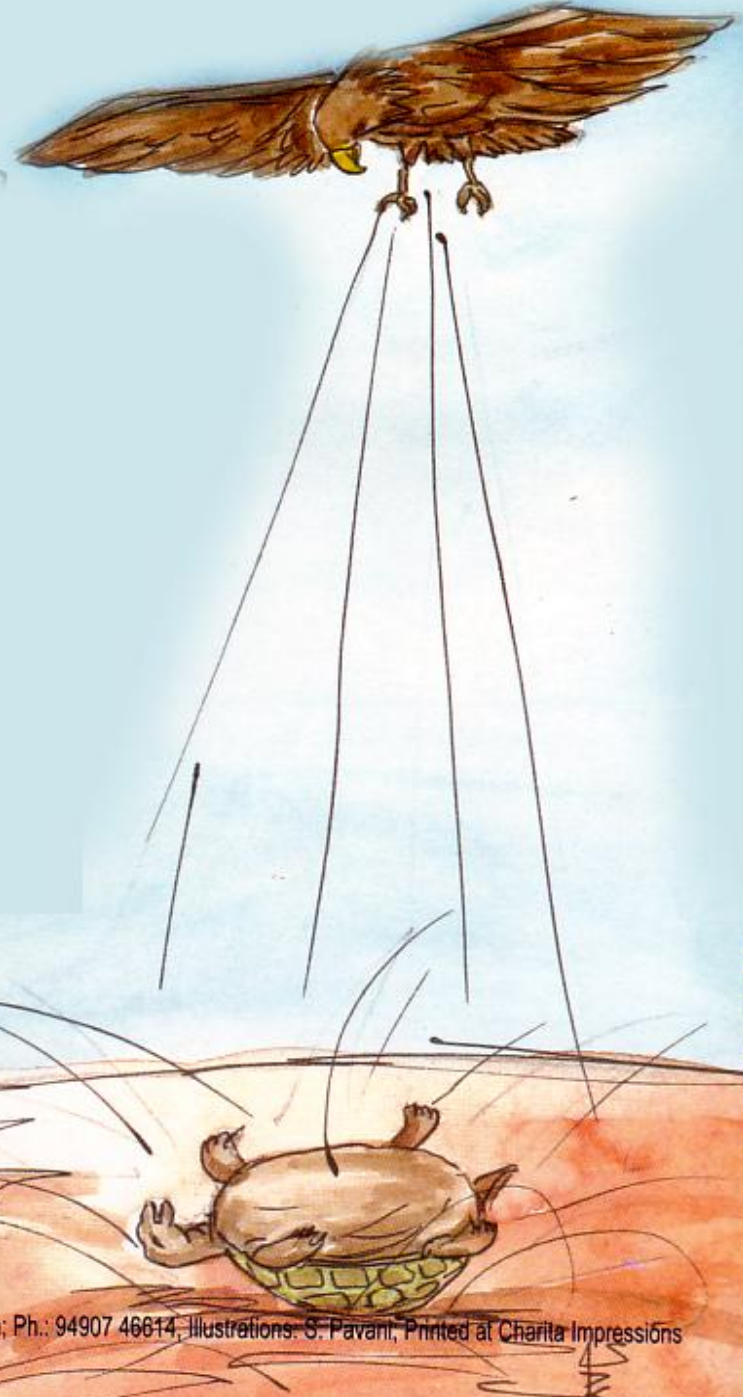
चीन के एक गांव में एक अस्तबल था. वहां के घोड़े खेत जोतते थे और गाड़ियों को खींचते थे.

उन घोड़ों में एक सफ़ेद घोड़ा था, जिसका एक बच्चा था.

"इस गेहूं के बोरे को आटे की चक्की पर ले जाओ," एक दिन माँ ने छोटे घोड़े से कहा. फिर छोटे घोड़े ने बोरे को अपनी पीठ पर लादा और वो चक्की की ओर चला.
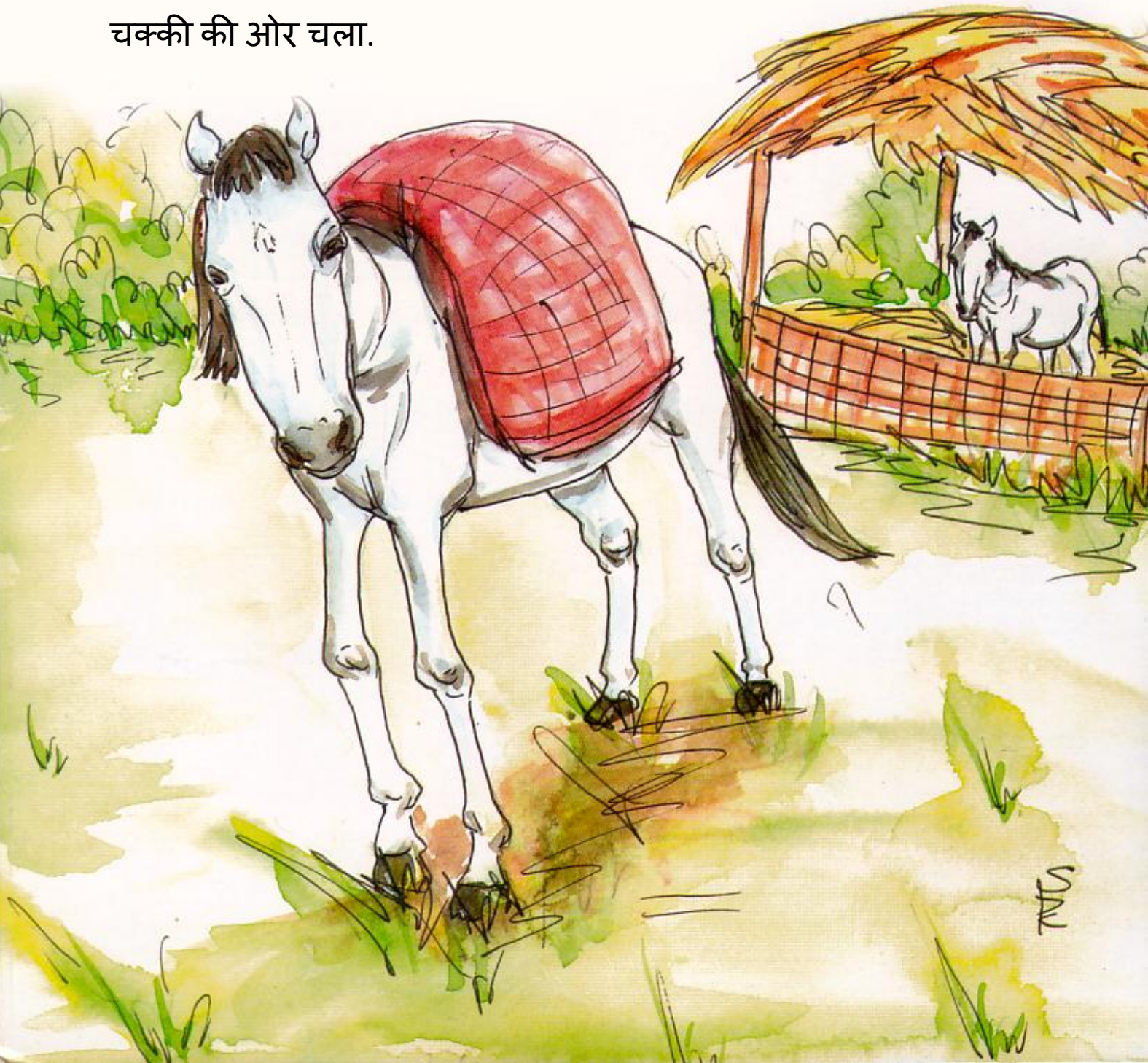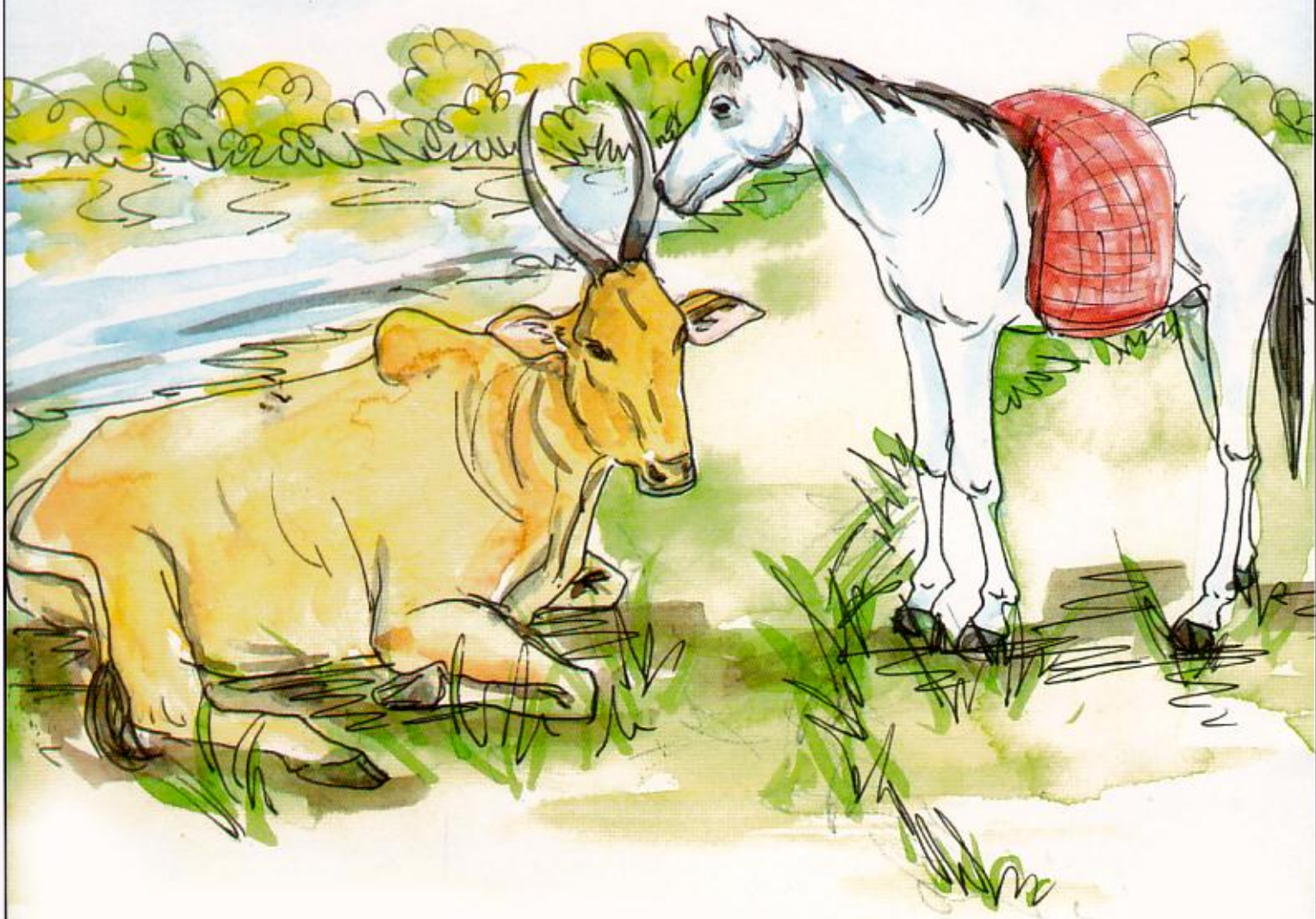
कुछ दूर आगे एक तेज़ धार वाला नाला था.

छोटे घोड़े को नाले के पास एक बैल बैठा हुआ दिखा. उसने उससे पूछा, "बैल! यह बताओ कि क्या मैं नाला पार कर पाऊंगा?"

"वो नाला ज़्यादा गहरा नहीं है. पानी, सिर्फ तुम्हारे घुटनों तक आएगा. मैं कल ही दूसरी ओर से नाला पार करके यहाँ आया हूँ," बैल ने जवाब दिया. फिर छोटे घोड़े ने डरते-डरते नाले में अपना पांव रखा.

तभी एक गिलहरी, छोटे घोड़े के पास दौड़ती हुई आई और उसने कहा, "ज़रा रुको भाई! यह नाला बहुत गहरा है. कल मेरी एक मित्र उसे पार करते समय डूब कर मर गई थी." गिलहरी की बात सुनकर छोटे घोड़े ने अपने पांव नाले में से बाहर निकाले.

फिर वो अपनी माँ के पास वापिस गया. माँ को उसे देखकर काफी आश्चर्य हुआ. "तुम इतनी जल्दी कैसे वापिस आ गए?" माँ ने पूछा.

"माँ, रास्ते में एक नाला था. वो कितना गहरा है? यह मुझे पता नहीं था," छोटे घोड़े ने कहा. "बैल ने कहा कि मैं आसानी से उसे पार कर लूँगा. पर गिलहरी ने कहा कि मैं उसमें डूब जाऊँगा. तुम ही बताओ कि अब मैं क्या करूं?" छोटे घोड़े ने पूछा.

छोटे घोड़े की बात सुनकर माँ ज़ोर से हंसी और उसने कहा, "बैल कितना बड़ा है? और गिलहरी कितनी बड़ी है? तुम दोनों से अपनी तुलना करो और फिर खुद निर्णय लो, कि क्या तुम नाला पार कर सकते हो या नहीं."

फिर छोटा घोड़ा नाले पर लौटा. 'मैं बैल जितना तो बड़ा नहीं हूँ, पर मैं गिलहरी जितना छोटा भी नहीं हूँ,' उसने सोचा और फिर उसने नाले में अपना पांव रखा. उसने आसानी से नाला पार किया और चक्की पर जाकर गेहूं को बोरा रखा.

जब वो घर सुरक्षित लौटकर आया तो माँ ने उसे शाबाशी दी और कहा,"बहुत खूब!"

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

**A Bagful of Stories**

*Published by*

**Manchi Pustakam**

12-3-439, Street No. 1, Tarnaka, Secunderabad - 17, e-mail: info@manchipustakam.in; Ph.: 94907 46614; Illustrations: S. Pavani; Printed at Charita Impressions